National Mission for Manuscripts

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन
National Mission for Manuscripts

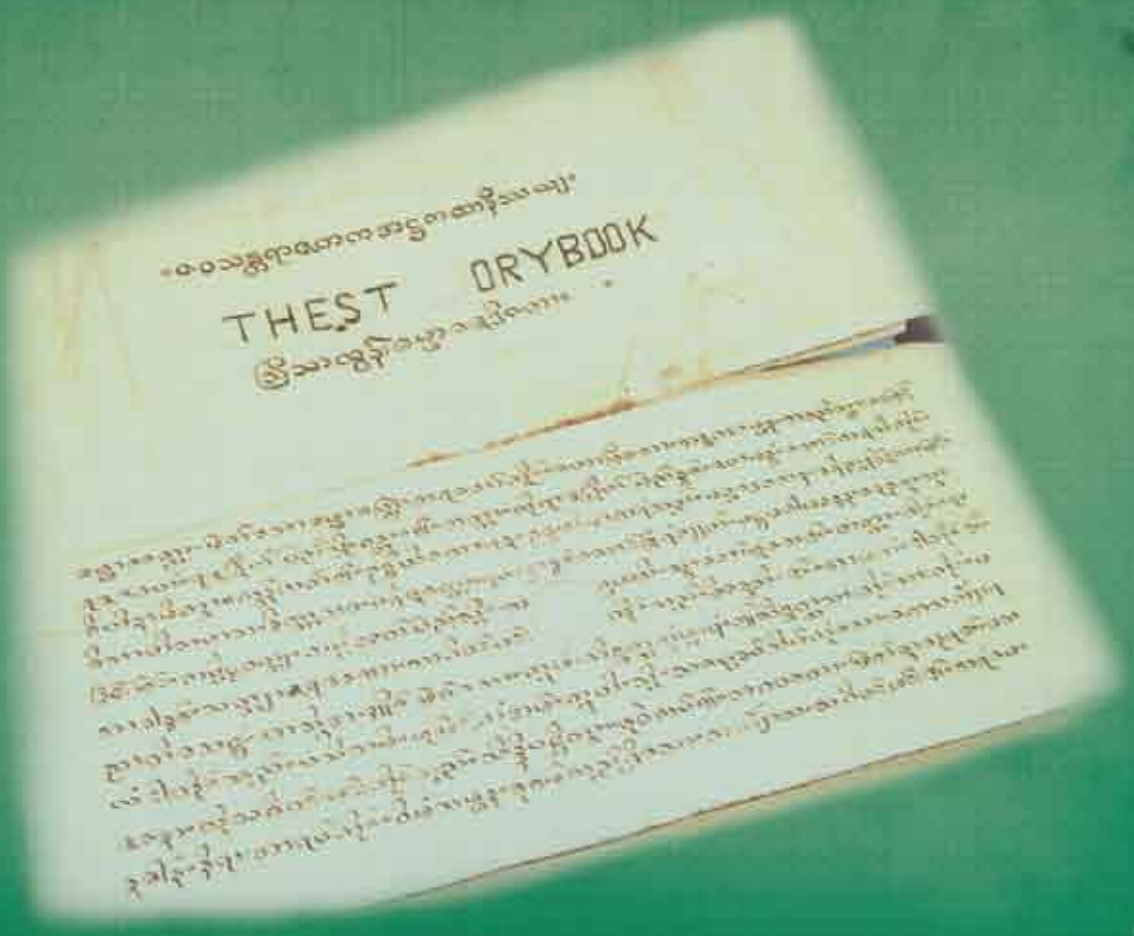

नवम वर्ष का प्रतिवेदन
Report of the Ninth Year
2011-2012

आवरण चित्रः

मग पाण्डुलिपि का एक पृष्ठ,
त्रिपुरा विश्वविद्यालय पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र, सूर्यमणि नगर, त्रिपुरा में संरक्षित

प्रकाशकः

निदेशक
राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन
11, मानसिंह रोड
नयी दिल्ली - 110 001
दूरभाषः +91 11 23383894
फैक्सः +91 11 23073340
ई-मेलः director.namami@nic.in
वेबसाईटः www.namami.org

मुद्रण एवं डिज़ाइनः

मैक्रो ग्राफिक्स प्राइवेट लिमिटेड (www.macrographics.com)

Cover Image:

A folio from a Mog Manuscript, preserved at
Tripura University MRC, Suryamani Nagar, Tripura

Publisher:

Director
National Mission for Manuscripts
11, Mansingh Road
New Delhi – 110 001
Tel.: +91 11 23383894
Fax: +91 11 23073340
Email: director.namami@nic.in
Website: www.namami.org

Print & Design:

Macro Graphics Pvt. Ltd. (www.macrographics.com)

National Mission for Manuscripts

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

नवम वर्ष का प्रतिवेदन

2011-2012

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र (एम.आर.सी.)

- हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश
- तिरुपति, आन्ध्र प्रदेश
- सिल्चर, असम
- मरानहाट, असम
- गुवाहाटी, असम
- दरभंगा, बिहार
- पटना, बिहार
- नालन्दा, बिहार
- आरा, बिहार
- रायपुर, छत्तीसगढ़
- दिल्ली, दिल्ली
- अहमदाबाद, गुजरात
- द्वारका, गुजरात
- भावनगर, गुजरात
- कुरुक्षेत्र, हरियाणा
- शिमला, हिमाचल प्रदेश
- धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश
- लेह, जम्मू-कश्मीर
- श्रीनगर, जम्मू-कश्मीर
- हम्पी, कर्नाटक
- बंगलुरु, कर्नाटक
- श्रवणबेलगोला, कर्नाटक
- मैसूर, कर्नाटक
- केलाडी, कर्नाटक
- त्रिपुनिथुरा, केरल
- तिरुवनन्तपुरम, केरल
- तिरूर, केरल
- सागर, मध्यप्रदेश
- इन्दौर, मध्यप्रदेश
- उज्जैन, मध्यप्रदेश
- पुणे, महाराष्ट्र
- कोल्हापुर, महाराष्ट्र
- रामटेक, महाराष्ट्र
- इम्फाल, मणिपुर
- भुवनेश्वर, उड़िसा
- भद्रक, उड़िसा
- पुदुच्चेरि, पुदुच्चेरि
- होशियारपुर, पंजाब
- जोधपुर, राजस्थान
- चेन्नई, तमिलनाडु
- कांचिपुरम, तमिलनाडु
- तंजौर, तमिलनाडु
- सूर्यमणिनगर, त्रिपुरा
- आगरा, उ.प्र.
- रामपुर, उ.प्र.
- बनारस, उ.प्र.
- वृन्दावन, उ.प्र
- लखनऊ, उ.प्र.
- मेरठ, उ.प्र.
- ग़ाज़ीपुर, उ.प्र.
- पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड
- हरिद्वार, उत्तराखंड
- कोलकाता, पश्चिम बंगाल

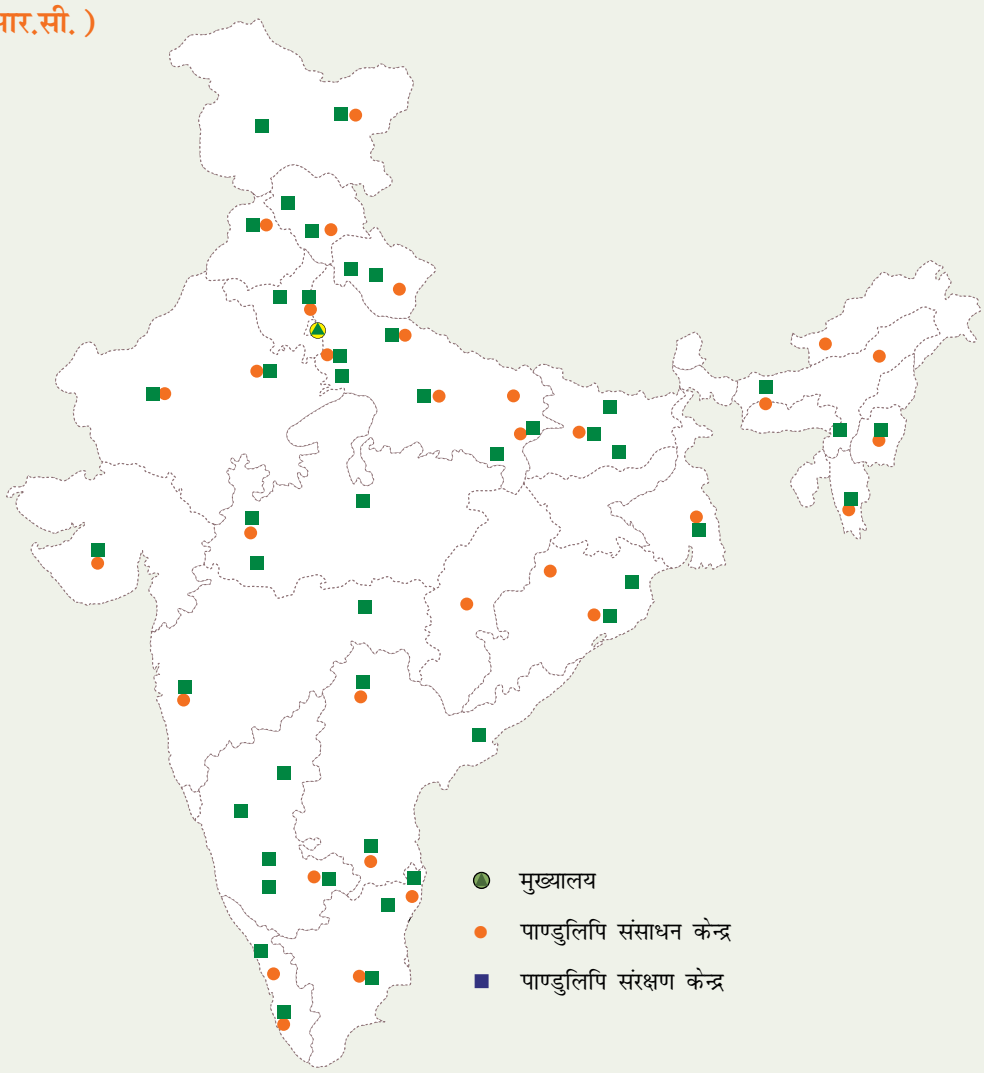

पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र (एम.सी.सी.)

- हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश
- तिरुपति, आन्ध्र प्रदेश
- तवांग, अरुणाचल प्रदेश
- सिल्चर, असम
- गौहाटी, असम
- पटना, बिहार
- आरा, बिहार
- रायपुर, छत्तीसगढ़
- नयी दिल्ली, दिल्ली
- अहमदाबाद, गुजरात
- शिमला, हिमाचल प्रदेश
- कुरुक्षेत्र, हरियाणा
- लेह, जम्मू-कश्मीर
- बंगलुरु, कर्नाटक
- श्रवणबेलगोला, कर्नाटक
- हम्पी, कर्नाटक
- केलाडी, कर्नाटक
- उडुपी, कर्नाटक
- त्रिवेन्द्रम, केरल
- एरनाकुलम, केरल
- तिरूर, केरल
- इन्दौर, मध्यप्रदेश
- पुणे, महाराष्ट्र
- इम्फाल, मणिपुर
- भुवनेश्वर, उड़िसा
- बुरला, उड़िसा
- होशियारपुर, पंजाब
- कोटा, राजस्थान
- जयपुर, राजस्थान
- जोधपुर, राजस्थान
- चेन्नई, तमिलनाडु
- तंजौर, तमिलनाडु
- सूर्यमणिनगर, त्रिपुरा
- बनारस, उ.प्र.
- रामपुर, उ.प्र.
- लखनऊ, उ.प्र.
- ग़ाज़ीपुर, उ.प्र.
- गोरखपुर, उ.प्र.
- वृन्दावन, उ.प्र.
- नैनीताल, उत्तराखंड
- रानीबाग, उत्तराखंड
- कोलकाता, पश्चिम बंगाल

टिप्पणी: यह मानचित्र केवल प्रतीकात्मक है, मानक के अनुरूप नहीं।

निदेशक की कलम से

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन के वर्ष 2011–12 का वार्षिक प्रतिवेदन सुधी पाठकों के समक्ष रखते हुए मुझे अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। यह, मिशन के दूसरे चरण का, अन्तिम वर्ष था क्योंकि मिशन पंचवर्षीय योजना के समानान्तर चलता है। यहाँ स्मरण कराना समीचीन होगा कि मिशन की परिकल्पना सन् 2002 में हुई एवं, इसका कार्यारम्भ 7 फरवरी, 2003 से हुआ। पाण्डुलिपियों के क्षेत्र में मिशन की स्थापना ऐतिहासिक महत्त्व रखती है। इसके माध्यम से देश की पाण्डुलिपियों का सूचीकरण एवं उनमें निहित ज्ञान को लोगों तक पहुँचाने का कार्य आरम्भ किया गया। पाण्डुलिपियों के सूचीकरण के कार्य की कठिनता का अनुमान लगाने के लिए भारतवर्ष की भौगोलिक विशालता, भाषाओं और लिपियों की विविधता एवं विषयों की भिन्नता को ध्यान में रखना आवश्यक है। लेकिन उससे भी बढ़कर जो बात इस कार्य को और कठिन बनाती है वह यह कि भारतवर्ष में पाण्डुलिपियाँ केवल संस्थागत संग्रह में नहीं हैं अपितु एक विशाल संख्या व्यक्तिगत संग्रहों में भी विद्यमान है। यह कार्य उतना ही दुष्कर है जितना भूसे के ढेर में सुई को तलाशना। मिशन ने इस कार्य के लिए योजना तैयार की और सुनियोजित संकल्प के साथ उसमें प्रवृत्त हुआ जिसका परिणाम प्रथम चरण में ही सामने आने लगा था। कार्य की कठिनता, विविधता एवं बाधाओं की बहुलता की पृष्ठभूमि में मिशन की उपलब्धियाँ प्रशंसनीय कही जा सकती हैं। इस सन्दर्भ में इस कार्य क्षेत्र की कतिपय समस्याओं की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करना उचित होगा।

सर्वप्रथम, इस क्षेत्र में काम करने के लिए प्रशिक्षित लोगों का अत्यधिक अभाव है। सूचीकरण के काम में न केवल प्राचीन लिपि का ज्ञान जरूरी होता है अपितु प्राचीन भाषाओं का और पाण्डुलिपिविज्ञान का ज्ञान भी आवश्यक होता है। भारतवर्ष में पाण्डुलिपिविज्ञान और लिपिविज्ञान को जो महत्त्व मिलना चाहिए वह अब तक नहीं मिला है। सन् 2003 में तो इसका और अधिक अभाव था। मिशन ने इस बाधा को पार करने के लिए सर्वेक्षकों एवं प्रलेखकों को प्रशिक्षित करने का काम किया। सर्वेक्षण एवं प्रलेखन का कार्य आरम्भ करने के पहले काम करने वालों को प्रशिक्षण देना अनिवार्य था। यह देखकर चिन्ता होती है कि पाण्डुलिपियों के संस्थागत संग्रहालयों में भी प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं का अत्यधिक अभाव है। इस राष्ट्रीय धरोहर के प्रति संग्रहकर्ताओं का उपेक्षा भाव अनुमान से परे है। भारतवर्ष ऐसा राष्ट्र है जहाँ अपनी परम्परा, संस्कृति एवं मूल्यों के प्रति उदासीनता नियम है, लेकिन वहीं जब किसी पश्चिम के देश में हमारी विरासत की चर्चा होती है तो हम भी उसकी प्रशंसा करने में शामिल हो जाते हैं। इसीलिए ज्ञान परम्परा की रक्षा और वर्तमान सन्दर्भ में उसके उपयोग के प्रति अभी तक कोई ठोस और सुनियोजित कार्य नहीं हुआ है। मिशन इस कमी के प्रति सजग है और उसने योजनाबद्ध रूप में कार्य प्रारम्भ किया है जिसके परिणाम भी दिखायी पड़ने लगे हैं।

सन् 2003–2007 के बीच राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन अत्यधिक सक्रिय रहा लेकिन इसके बाद प्रायः ढाई वर्षों तक, भविष्य अनिश्चित होने के कारण, निष्क्रियता आ गयी। ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना में सितम्बर 2009 में मिशन को स्वीकृति प्रदान की गयी लेकिन तब तक इस योजना के ढाई साल बीत चुके थे। इसका परिणाम यह हुआ कि संस्था की निष्क्रियता को दूर करने में चूडान्त परिश्रम करना पड़ा। सन् 2010–11 के वार्षिक प्रतिवेदन में मैंने उसे मिशन के लिए पुनर्जीवन का काल कहा था।

यह स्पष्ट है कि केवल पाण्डुलिपियों की सूचीकरण से उनमें निहित ज्ञान का उपयोग नहीं हो सकता अतः शोध एवं ज्ञान के प्रसार के लिए शोधकर्ताओं एवं विद्वानों का सहयोग अपेक्षित है। इस लक्ष्य की प्राप्ति युवा वर्ग के सहभागित्व के बिना सम्भव नहीं है। इस

दिशा में विश्वविद्यालयों का महत्त्वपूर्ण योगदान हो सकता है। यदि विश्वविद्यालयों में कम से कम एक पत्र, प्रत्येक पाठ्य विषय की भारतीय परम्परा से परिचित कराने के लिए, पाठ्यक्रम का अंग बनाया जाये, विशेष रूप से स्नातकोत्तर के छात्रों के लिए, तो निश्चय ही इस दिशा में प्रगति हो सकती है। राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन में, पिछले दो वर्षों के अपने कार्यकाल के आधार पर, मैं विश्वास के साथ कह सकती हूँ कि इस ज्ञान परम्परा से परिचय, वर्तमान काल में उसके उपयोग कि असीम सम्भावनाओं के द्वार खोलेगा। इस प्रकार का शोध, देश की समस्याओं के समाधान में सहायक होगा, ऐसा मुझे विश्वास है।

हमें इस बात का ध्यान रखना है कि भारतवर्ष की समस्याएँ एवं परिस्थितियाँ विलक्षण हैं जो यहाँ की संस्कृति, इतिहास, भूगोल एवं इस देश के द्वारा स्थापित एवं परिपालित मूल्यों से प्रभावित हैं। इसलिए दूसरे देशों में जो मानक बनाये जाते हैं वे भारतीय सन्दर्भ में भी प्रभावी हों यह जरूरी नहीं। मैं केवल एक उदाहरण से अपनी बात स्पष्ट करना चाहूँगी, भारतवर्ष के लोगों की मानसिकता धार्मिक एवं सांस्कृतिक उत्सवों के प्रति जैसी है वह काफी दूर तक उनकी कार्यशैली को भी प्रभावित करती है। दशहरा एवं दीवाली दो ऐसे त्योहार हैं जिन पर विचार करने से देश के लोगों की मानसिकता स्पष्ट हो जाती है। इन दोनों त्योहारों के लिए सरकारी छुट्टीयाँ सीमित हैं लेकिन यह सर्वविदित है कि त्योहार के समय जिस दिन छुट्टी नहीं भी होती है उस दिन कितना काम होता है, यह विचारणीय है। इतना ही नहीं, मानसिकता के रूप में कर्तव्यबोध का अभाव एवं व्यवस्था में उत्तरदायित्व को निर्धारित नहीं करने की प्रवृत्ति के कारण देश के विकास में बाधाएँ आ रही हैं। पाठकों से यह बातें साझा करना इसलिए आवश्यक है क्योंकि मैं यह मानती हूँ कि इस आत्मनिरीक्षण की प्रक्रिया के द्वारा हम अपनी समस्याओं को बेहतर सुलझाने में समर्थ हो सकेंगे। हमें ऐसे मानकों और नीतियों का विकास करना होगा जो हमारी सांस्कृतिक मानसिकता के प्रति सजग हों साथ ही हमारे स्थायी मूल्यों को भी समाहित करती हों। इस कार्य में प्राचीन साहित्य का अवलोकन उपयोगी हो सकता है।

देश में अनेक ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ पारम्परिक ज्ञान से हम लाभान्वित हो सकते हैं उदाहरण के रूप में आवास की समस्या को देखें। यह बताने कि आवश्यकता नहीं कि जिस देश में बिजली का अभाव हो, जहाँ ऋतुओं की विविधता हो और जहाँ लोगों की जीवन शैली ऐसी हो जिसमें बन्द स्थान की बजाय खुले स्थान का अधिक उपयोग होता हो वहाँ उन देशों से आयातित भवन शैलियाँ कितनी प्रभावी होंगी जहाँ बिजली का कोई अभाव नहीं है, जहाँ ऋतुओं की विविधता नहीं है और जहाँ लोग बन्द घरों में रहने के लिए बाध्य हैं। भारतवर्ष में भवन–निर्माण–कला का अत्यधिक विकास हुआ था जिसके प्रमाण आज भी उपलब्ध हैं। प्राचीन वास्तुग्रन्थों से प्रेरणा लेकर, आधुनिक आवश्यकता के अनुसार उनमें परिवर्तन करके स्थानीय सामग्री से, कम लागत में, अच्छे भवनों का निर्माण हो सकता है। वास्तुशास्त्र के शिक्षण और प्रशिक्षण में यदि प्राचीन भारतीय वास्तु का परिचय भी सम्मिलित किया जाये तो सम्भव है, भारतवर्ष में भवन–निर्माण कला को नयी दिशा मिले।

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन अखिल भारतीय स्तर पर व्याख्यानों का आयोजन कर जनसाधारण एवं नीति निर्धारकों के साथ युवा पीढ़ी में भी पारम्परिक ज्ञान सम्पदा के प्रति जागरूकता पैदा करने का यत्न कर रहा है। पाण्डुलिपिविज्ञान एवं लिपिविज्ञान में प्रक्षिशण प्रदान कर मिशन इस क्षेत्र में काम करने के लिए युवावर्ग को प्रेरित करने के साथ क्षमता–विकास का कार्य भी कर रहा है। इस कार्यक्रम से युवा पीढ़ी में प्रशिक्षित एवं सुयोग्य वर्ग तैयार हो रहा है।

निरोधात्मक एवं उपचारात्मक संरक्षण में मिशन के प्रशिक्षण कार्यक्रमों ने संस्थागत एवं व्यक्तिगत, दोनों प्रकार के, संग्रहों के रखरखाव को बेहतर बनाया है। मैं उन संस्थाओं से, जिनके पास पाण्डुलिपियों के संग्रह हैं, अनुरोध करना चाहूँगी कि वे मिशन द्वारा प्रशिक्षित व्यक्तियों को अपनी संस्थाओं में नियुक्त करें ताकि उनके संग्रहों का समुचित रख–रखाव हो सके।

मैं, संस्कृति मन्त्रालय को, मिशन के कार्यक्रमों में सहयोग एवं प्रोत्साहन के लिए धन्यवाद देती हूँ। माननीय संस्कृति मन्त्री कुमारी सेलजाजी ने मिशन के कार्यों में व्यक्तिगत रुचि ली है। उन्होंने अपने व्यस्त कार्यक्रम से समय निकाल कर सुलेखन की प्रदर्शनी का उद्घाटन किया और वार्षिकोत्सव में अपने वक्तव्य से हमारा उत्साहवर्धन किया। राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन और व्यक्तिगत रूप से मैं, पाण्डुलिपियों के प्रति माननीय मन्त्री महोदया की प्रतिबद्धता, से अपने को गौरवान्वित अनुभव करते हैं। मैं उन सभी संस्थाओं एवं व्यक्तियों के प्रति भी आभार प्रकट करना चाहूँगी जिन्होंने मिशन के कार्य में नाना प्रकार से सहयोग प्रदान किया है। राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन का दूसरा चरण दो कारणों से स्मरणीय रहेगा, (1) सम्भवतः यह इस मिशन का सबसे छोटा कार्यकाल होगा और (2) इस छोटे कार्यकाल में पाण्डुलिपियों में निहित ज्ञान सम्पदा को अध्येताओं तक पहुँचाने के क्षेत्र में जो उपलब्धियाँ हुई तथा भारतीय मध्यकाल की पाण्डुलिपियों एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र की पाण्डुलिपियों को जिस प्रकार महत्त्व प्रदान कर प्रकाश में लाया गया वह उल्लेखनीय उपलब्धि है।

प्रो. दीप्ति एस. त्रिपाठी
निदेशक, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन
वार्षिक प्रतिवेदन 2011-2012

भारत साधिकार दावा कर सकता है कि उसके पास विश्व का विशालतम पाण्डुलिपि भण्डार है । हमारे पास पाण्डुलिपियों का संग्रह तो है ही पाण्डुलिपि संरक्षण प्रयास में भी हम अग्रणी हैं। राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन पाण्डुलिपि संरक्षण और उसमें निहित ज्ञान के प्रसार हेतु राष्ट्रीय स्तर पर किया गया विश्व में प्रथम समेकित प्रयास है। राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन ने सन् 2003 में स्थापना से लेकर अभी तक 'भविष्य के लिए अतीत का संरक्षण' के अपने आदर्श को पूरा करने हेतु एक महत्त्वपूर्ण यात्रा तय की है। यह देशभर में फैले अपने सौ से अधिक केन्द्रों और लगभग 350 उपकेन्द्रों के माध्यम से कार्य निष्पादित करता है।

श्रेणी के अनुसार केन्द्रों की संख्या निम्नलिखित है -

पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र (एम.आर.सी.)- 57
पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र (एम.सी.सी.)- 50
पाण्डुलिपि सहयोगी केन्द्र (एम.पी.सी.)-42
पाण्डुलिपि संरक्षण सहयोगी केन्द्र (एम.सी.पी.सी.)-300

संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा स्थापना के प्राय: एक दशक बाद यह संस्था देश में हुए विरासत - संरक्षण के प्रयासों के बीच निस्सन्देह सर्वाधिक लोकप्रिय एवं प्रभावी आन्दोलन के रूप में उभरकर सामने आयी है।

विगत तीन वर्षों के दौरान रा.पा.मि. ने स्वयं को अधिक सापेक्ष तथा प्रभावी बनाने के लिए अपनी प्राथमिकताओं को पुन:

उद्देश्य

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन की स्थापना के उद्देश्यों का उल्लेख करते समय यह कहना पूरी तरह सही नहीं होगा कि इसका उद्देश्य भारत और विदेश में स्थित सभी भारतीय पाण्डुलिपियों की केवल पहचान, गणना, परिरक्षण और वर्णन करना है। इन कार्यों के लिए दायित्व लेने के पीछे उद्देश्य इन तक पहुँच को आसान बनाना, सांस्कृतिक विरासत के प्रति जागरूकता बढ़ाना और शैक्षणिक तथा अनुसन्धान कार्य एवं आजीवन अध्ययन हेतु इसका उपयोग करना है। विकास उद्देश्य (उद्देश्य के चरण) को निम्नलिखित श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

- **उद्देश्य 1:** प्रशिक्षण, जागरूकता और वित्तीय सहयोग के माध्यम से पाण्डुलिपियों के संरक्षण और परिरक्षण की सुविधा उपलब्ध कराना।
- **उद्देश्य 2:** भारतीय पाण्डुलिपियों, वे चाहे जहाँ हों, का प्रलेखन एवं सूची तैयार करना; उनके बारे में बिल्कुल सही एवं नवीकृत सूचना रखना; उनके अवलोकन के लिए प्रस्तावित परिस्थिति की जानकारी रखना।
- **उद्देश्य 3:** प्रकाशित और इलेक्ट्रॉनिक, दोनों रूपों में पाण्डुलिपियों को उपलब्ध कराकर उन तक आसानी से पहुँच को बढ़ावा देना।
- **उद्देश्य 4:** भारतीय भाषा और पाण्डुलिपि शास्त्र के अध्ययन में शोध और अध्येतावृत्ति को बढ़ावा देना।
- **उद्देश्य 5:** राष्ट्रीय पाण्डुलिपि पुस्तकालय का निर्माण करना।

समायोजित किया है। इनमें से कुछ प्रशंसनीय कार्य इस प्रकार हैं: पूर्वोत्तर और दूरस्थ क्षेत्रों में रा.पा.मि. के कार्य का विस्तार तथा फारसी, अरबी और उर्दू पाण्डुलिपियों पर समुचित बल।

पूर्वोत्तर पर जोर: सन् 2009 से पूर्व पूर्वोत्तर में केवल छः केन्द्र (3 पा.सं.कें. और 3 पा.स.कें.) थे जिनमें से दो केन्द्र प्रायः निष्क्रिय रहते थे। विगत तीन वर्षों के दौरान रा.पा.मि. ने न केवल इन दो केन्द्रों को सक्रिय बनाया है अपितु त्रिपुरा, असम और अरुणाचल में अन्य 5 केन्द्रों की भी स्थापना की है। वर्तमान में पूर्वोत्तर के ये सभी 11 केन्द्र निरन्तर कार्य कर रहे हैं। इसके साथ मिजोरम और त्रिपुरा में रा.पा.मि. के कार्य का अभूतपूर्व विस्तार हुआ है।

रा.पा.मि. की द्वि-मासिक पत्रिका 'कृतिरक्षण' के प्रकाशन से पूर्व बहुत कम विद्वानों को चकमा भाषा की जानकारी थी। मिजोरम में बहुत-सी पाण्डुलिपियों की खोज का श्रेय रा.पा.मि. को जाता है जिनमें से अधिकांश चकमा भाषा में हैं। जनवरी 2012 में रा.पा.मि. ने आइजोल से लगभग 200 कि.मी. दूर कमलानगर में चकमा लिपि पर दस दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जिसमें देसी औषधि के सम्बन्ध में चकमा पाण्डुलिपियों की प्रदर्शनी भी की गयी।

असम के ऊपरी इलाकों के ग्रामीण भाग में स्थित घरों और बौद्ध मठों में सांची पत्र पर अंकित बहुत-सी दुर्लभ एवं अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ताइ पाण्डुलिपियाँ बिखरी हुई एवं बिना पहचान की मौजूद हैं। ये पाण्डुलिपियाँ ताइ भाषा में हैं। इस भाषा का ज्ञान गिने-चुने लोगों को है। ऐसी हजारों पाण्डुलिपियाँ उन लोगों के पास हैं जो न तो इनके रख-रखाव पर ध्यान दे सकते हैं और न ही उन्हें इस बात का ज्ञान है कि ये पाण्डुलिपियाँ असम में छः सौ वर्षों के अहोम शासन के दस्तावेज हैं। इनमें असम की सांस्कृतिक विरासत भी सुरक्षित है। वर्ष 2010 में असम के मोरानहाट स्थित ताइ अध्ययन एवं शोध केन्द्र में रा.पा.मि. ने अपना पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र स्थापित किया और त्वरित गति से पाण्डुलिपियों के संरक्षण, प्रलेखन तथा उनमें निहित ज्ञान को अक्षुण्ण रखने का कार्य प्रारम्भ किया।

पूर्वोत्तर में नयी पाण्डुलिपियों की खोज, उनके संरक्षणात्मक उपाय, कार्यशालाओं एवं संगोष्ठीयों के आयोजन, पाण्डुलिपि विरासत के संरक्षण और उनमें निहित ज्ञान के प्रसार की दृष्टि से रा. पा. मि. ने सन्तोषजनक कार्य किया है।

मध्यकालीन बौद्धिक विरासत पर जोर: वर्ष 2009 तक फारसी, अरबी और उर्दू भाषाओं में उपलब्ध पाण्डुलिपियों की बौद्धिक विरासत की खोज के सम्बन्ध में बहुत अधिक प्रयास नहीं किया गया था। सन् 2010 में इस विरासत को उचित मान्यता देने के सम्बन्ध में एक अखिल भारतीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन की संस्तुतियों के अनुरूप कई परियोजनाएँ प्रारम्भ की गयीं। फारसी, अरबी, उर्दू भाषाओं की पाण्डुलिपियों हेतु पाण्डुलिपिशास्त्र का विस्तृत पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। युवा विद्वानों को प्रशिक्षित करने के लिए आधारभूत और उच्च स्तरीय अनेक कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इस क्षेत्र में विद्वानों की सक्रिय सहभागिता हेतु संगोष्ठीयों एवं व्याख्यानों के आयोजन किये गये। 'भारतीय सांस्कृतिक विरासत : फारसी, अरबी और उर्दू' नाम से संगोष्ठी आलेखों का एक संकलन प्रकाशित किया गया है। इसके साथ ही, दुर्लभ अप्रकाशित पाण्डुलिपियों की एक सूची तैयार की गयी है और उन्हें प्राथमिकता के आधार पर प्रकाशित करने का कार्य प्रारम्भ किया जा चुका है। उर्दू के प्रथम दीवान, 'दीवानज़ादा' और मुगल-काल के अन्तिम समय के सामाजिक-सांस्कृतिक तथा आर्थिक-राजनीतिक इतिहास 'चहार गुलशन' का प्रकाशन किया गया है।

राष्ट्रीय पंजाब अध्ययन संस्थान के सहयोग से रा.पा.मि. ने गुरुग्रन्थ साहिब पाण्डुलिपियों की चित्रमय सूची के प्रकाशन की एक आकर्षक परियोजना प्रारम्भ की है। इसके प्रथम खण्ड का प्रकाशन किया जा चुका है।

संरक्षण और आधुनिकीकरण पर जोर: पाण्डुलिपि संरक्षण हेतु रा.पा.मि. की एक द्वि-मुखी योजना है : क) मूल पाण्डुलिपियों का उपचारात्मक एवं निवारणात्मक संरक्षण, और ख) सांख्यिकीकरण के माध्यम से संरक्षण।

यह एक सुविदित तथ्य है कि रा.पा.मि. के अस्तित्व में आने से पूर्व स्वतन्त्र भारत में मौजूद पाण्डुलिपि भण्डार में लगभग आधी पाण्डुलिपियाँ नष्ट हो गयी थीं। अतएव रा.पा.मि. के कार्य में संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गयी। अपने साधन सम्पन्न पा.सं.के. के माध्यम से पाण्डुलिपियों के संरक्षण के साथ-साथ रा.पा.मि. पाण्डुलिपि सरंक्षण एवं संरक्षण कला एवं विज्ञान में लोगों को प्रशिक्षित करने हेतु कार्यशालाओं का आयोजन करता है। सन् 2011 में रा.पा.मि. ने अपने नयी दिल्ली स्थित मुख्यालय में प्रायः निष्क्रिय संरक्षण प्रयोगशाला को फिर से सक्रिय किया है। हाल ही में फिर से प्रारम्भ की गयी इस प्रयोगशाला में वर्तमान में पाँच सुप्रशिक्षित संरक्षक युद्ध स्तर पर कार्यरत हैं, हालांकि जितने संरक्षकों की आवश्यकता है, उसकी तुलना में पाँच लोग काफी कम हैं।

परिरक्षण हेतु आधुनिक तकनीकी के इस्तेमाल को रा.पा.मि. द्वारा तैयार एवं प्रकाशित 'अभिलेखीय सामग्री के सांख्यिकीकरण हेतु दिशा-निर्देश' में परिभाषित किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य

भविष्य के लिए पाण्डुलिपि संरक्षण हेतु सांख्यिकीय प्रौद्योगिकी का उपयोग करना है। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सांख्यिकीकरण परियोजनाओं से सम्बन्धित सर्वोत्तम प्रयासों से जुड़े विशेषज्ञों के साथ पर्याप्त विचार-विमर्श करने के बाद रा.पा.मि. ने यह सामग्री प्रकाशित की। यह अपनी तरह की देश में पहली पुस्तिका है। सांख्यिकीकरण प्रयास का उद्देश्य पाण्डुलिपियों को भविष्य के लिए सुरक्षित रखना तथा राष्ट्रीय सांख्यिकीय पाण्डुलिपि पुस्तकालय की स्थापना करके पाण्डुलिपियों को सहज रूप से देख पाने की सुविधा उपलब्ध कराना है। रा.पा.मि. ने सन् 2011 में सांख्यिकीकरण परियोजना का तृतीय चरण प्रारम्भ किया जिसके तहत अस्सी लाख पृष्ठ पाण्डुलिपियों के सांख्यिकीकरण करने की योजना है और इसे दिसम्बर 2013 तक पूरा कर लिये जाने की उम्मीद है। प्रथम और द्वितीय चरणों सहित अभी तक एक करोड़ से अधिक पृष्ठों का सांख्यिकीकरण किया जा चुका है। वर्तमान में, रा.पा.मि. के पास एक करोड़ पृष्ठों की छवि उपलब्ध है।

रा.पा.मि. एक संरक्षण माध्यम के रूप में सांख्यिकीकरण की सीमाओं से परिचित है। जहाँ सांख्यिकीकृत प्रतियाँ सुविधापूर्वक उपलब्ध हो सकती हैं, वहीं परिवर्तनशील प्रौद्योगिकी के इस युग और डी.वी.डी. की सीमित जीवन-अवधि को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि सांख्यिकीकृत प्रतियाँ दीर्घकालीन परिरक्षण का साधन नहीं हो सकती हैं। अतएव, रा.पा.मि. ने सभी सांख्यिकीकृत पाण्डुलिपियों की प्रतियों की माइक्रोफिल्म तैयार कर उन्हें सुरक्षित रखने की योजना बनायी है।

पाण्डुलिपियों में निहित ज्ञान के प्रसार पर जोर: संक्षेप में, रा.पा.मि. का उद्देश्य पाण्डुलिपियों में निहित ज्ञान को सुरक्षित रखना तथा वर्तमान सन्दर्भ में उनका अधिकतम उपयोग करना है। इस लक्ष्य को पाने के विभिन्न साधन हैं - प्रलेखन, संरक्षण, सांख्यिकीकरण और प्रसारण।

देश के विभिन्न भागों में पाण्डुलिपियों, पाण्डुलिपि-शास्त्र और पाण्डुलिपियों में निहित ज्ञान के सम्बन्ध में संगोष्ठीयाँ और व्याख्यान आयोजित किये जाते हैं। विगत वर्षों के दौरान तत्त्वबोध सार्वजनिक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत दिये गये व्याख्यानों को संकलित कर तीन पुस्तकें प्रकाशित की गयी हैं। संगोष्ठी आलेखों की चार पुस्तकें, पाण्डुलिपियों के विवेचनात्मक संस्करण की दो पुस्तकें और दुर्लभ अप्रकाशित पाण्डुलिपियों की तीन पुस्तकें प्रकाशित की गयी हैं। कुल मिलाकर अभी तक बीस पुस्तकें प्रकाशित की गयी हैं और अनेक पुस्तकों को प्रकाशित करने की प्रक्रिया चल रही हैं। इसके साथ ही रा.पा.मि. की वेबसाइट: (www.namami.org) पर 22,15,000 पाण्डुलिपियों की सूचना

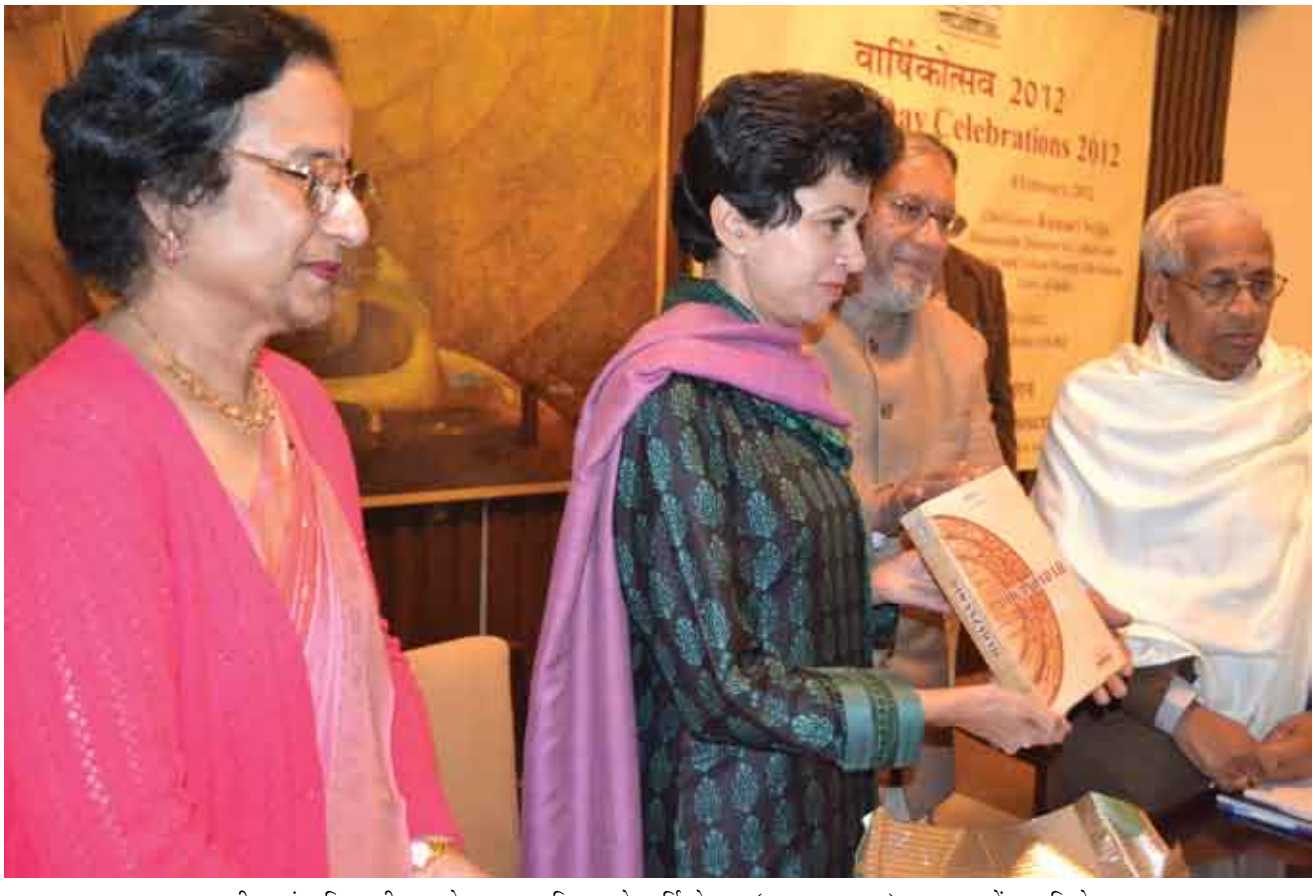

माननीया संस्कृति-मन्त्री कु. सेलजा द्वारा मिशन के वार्षिकोत्सव (08-02-2012) पर पुस्तकों का विमोचन

उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त, इस वेबसाइट पर और 6,15,000 पाण्डुलिपियों के सम्बन्ध में सूचना उपलब्ध करवाने की प्रक्रिया चल रही है। विगत दो वर्षों के दौरान इस सम्बन्ध में व्याख्यानों, संगोष्ठीयों और कार्यशालाओं के माध्यम से ज्ञान के प्रसार के कार्य में कई गुना वृद्धि हुई है।

पाण्डुलिपियों में विगत पाँच हजार वर्षों से हमारे देश में संचित ज्ञान का भण्डार निहित है। भारत के बौद्धिक सम्मान को पुनः कायम करने के लिए, आवश्यकता इस बात की है कि हम इसे वर्तमान सन्दर्भ में फलदायी एवं लाभकारी बनायें।

कार्यक्रम और गतिविधियाँ

1. प्रलेखन

- पाण्डुलिपि के राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस को सम्पन्न बनाना
- पाण्डुलिपि का राष्ट्रीय सर्वेक्षण तथा सर्वेक्षणोत्तर कार्यक्रम
- पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों (एम.आर.सी.) का विस्तार और सशक्तीकरण
- पाण्डुलिपि सहयोगी केन्द्रों (एम.पी.सी.) को सहयोग

2. पाण्डुलिपि संरक्षण और प्रशिक्षण

- पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्रों का विस्तार
- पाण्डुलिपि संरक्षण सहयोगी केन्द्रों (एम.सी.पी.सी.) की स्थापना
- संरक्षण के राष्ट्रीय संसाधन दल की स्थापना
- शोध कार्यक्रमों को बढ़ावा
- निरोधात्मक सरंक्षण में प्रशिक्षण पर बल
- दुर्लभ सहयोग सामग्रियों के संरक्षण हेतु कार्यशाला
- एम.सी.पी.सी. कार्यशालाओं का आयोजन
- क्षेत्रीय प्रयोगशालाओं की स्थापना
- पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों में पाण्डुलिपि-संकलन का संरक्षण
- सर्वेक्षण में तथा परवर्ती सर्वेक्षण में सहयोग
- सांख्यिकीकरण में सहयोग

3. पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरालिपिशास्त्र में प्रशिक्षण

- पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरालिपिशास्त्र में प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन
- प्रशिक्षित मानव संसाधन का निर्माण
- भारतीय विश्वविद्यालयों में पाण्डुलिपि शास्त्र पाठ्यक्रम को लागू करना
- पाण्डुलिपियों का विवेचनात्मक संस्करण जारी करना

4. सांख्यिकीकरण के माध्यम से प्रलेखन

- भविष्य के लिए मूल पाण्डुलिपियों का परिरक्षण
- मूल प्रतियों को नुकसान पहुँचाये बिना पाण्डुलिपियाँ शोधकर्ताओं को उपलब्ध कराना और उनके उपयोग को प्रोत्साहित करना
- देश के विभिन्न संकलनों में परिरक्षित पाण्डुलिपियों की सांख्यिकीकृत प्रतियों से सांख्यिकीय पुस्तकालय की स्थापना जो शोध संसाधन का काम करेगा
- पाण्डुलिपि के सांख्यिकीकरण हेतु मानकों और प्रक्रियाओं का निर्माण

5. शोध और प्रकाशन

- **तत्त्वबोधः** व्याख्यानों के संकलन का प्रकाशन
- **समीक्षिकाः** संगोष्ठी आलेखों के संकलन का प्रकाशन
- **संरक्षिकाः** संरक्षण संगोष्ठी आलेखों के संकलन का प्रकाशन
- **कृतिबोधः** विवेचनात्मक पाठों का प्रकाशन
- **प्रकाशिका :** दुर्लभ पाण्डुलिपियों का प्रकाशन
- **कृति रक्षणः** राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन की द्वि-मासिक पत्रिका

6. जन सम्पर्क कार्यक्रम

- सार्वजनिक व्याख्यान
- संगोष्ठी
- प्रदर्शनी आदि।

कार्यक्रम निष्पादन वर्ष 2011-2012

(सार-संक्षेप)

- आन्ध्र प्रदेश, गुजरात और त्रिपुरा में परवर्ती सर्वेक्षण कार्यक्रम जारी हैं।

- राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन ने 31 मार्च, 2012 तक 2,15,492 पाण्डुलिपियों के सम्बन्ध में सूचना संगृहीत की और इससे अबतक 34,94,520 पाण्डुलिपियों के सम्बन्ध में मिशन को जानकारी प्राप्त हुई है। वर्ष 2011-2012 के दौरान रा.पा.मि. के वेब पर 2,15,000 अतिरिक्त आंकड़े डाले गये। रा.पा.मि. के वेबसाइट www.namami.org पर लगभग 22,15,000 लाख आंकड़े उपलब्ध हैं।

- पाण्डुलिपि संरक्षण हेतु 14 कार्यशालाएँ आयोजित की गयीं।

- 31 मार्च, 2012 तक 1,01,932 पाण्डुलिपियों (1,05,58,983 पृष्ठों) का सांख्यिकीकरण पूरा किया गया है।

- तत्त्वबोध शृंखला के अंतर्गत 16 (4 दिल्ली में और 12 दिल्ली से बाहर) व्याख्यान आयोजित किये गये।

- विभिन्न विषयों पर राष्ट्रीय स्तर की ग्यारह और अंतर्राष्ट्रीय स्तर की दो संगोष्ठीयाँ आयोजित की गयीं।

- पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरालिपिशास्त्र पर 13 कार्यशालाएँ (10 आधारभूत स्तर की और 3 उच्च स्तरीय) आयोजित की गयीं।

- वर्ष 2011-12 के दौरान समीक्षिका-III, समीक्षिका-V, प्रकाशिका-II और प्रकाशिका-V आदि पुस्तकें प्रकाशित की गयीं।

प्रलेखन

जब सन् 2003 में रा.पा.मि. की स्थापना की गयी थी तो इसके समक्ष पाण्डुलिपियों की उपलब्धता, उनका पता लगाने और पाण्डुलिपियों की राष्ट्रीय सूची तैयार करने की चुनौती थी। यह एक चुनौतीपूर्ण काम इसलिए भी था कि पाश्चात्य देशों में पाण्डुलिपियाँ जिस तरह से व्यवस्थित पाण्डुलिपि भण्डारों में उपलब्ध हैं, उस रूप में भारत में पाण्डुलिपियाँ इन भण्डारों तक ही सीमित नहीं हैं। यहाँ पर पाण्डुलिपियाँ, पुस्तकालयों, मठों, मन्दिरों, मसजिदों सहित लोगों के घरों में भी उपलब्ध हैं। इस प्रकार भारत में न केवल सबसे अधिक पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध हैं बल्कि यहाँ पर सर्वाधिक संख्या में पाण्डुलिपि भण्डार भी उपलब्ध हैं। मिजोरम से गुजरात तक और लेह से कन्याकुमारी तक सर्वत्र पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध हैं। इस सम्बन्ध में अनुमान लगाना निरर्थक होगा।

स्थापना के पश्चात्, रा.पा.मि. ने पाण्डुलिपियों की खोज तथा प्रलेखन की चुनौती का सामना करने के लिए विस्तृत योजना तैयार की। इसके अस्तित्व के प्रथम एवं द्वितीय चरणों में पाण्डुलिपि भण्डारों का घर-घर पता लगाने तथा सर्वेक्षण पश्चात् विस्तृत प्रलेखन पर जोर दिया गया। साथ ही दीर्घकालीन लक्ष्य को प्राप्त करने की रणनीति के तहत देश के विभिन्न भागों से सम्बन्धित संस्थाओं का जाल तैयार किया गया। इन संस्थाओं को पाण्डुलिपियों की खोज एवं प्रलेखन का दायित्व प्रदान करने हेतु संस्थागत रूप-रेखा तैयार की गयी। धीरे-धीरे इन संस्थाओं ने अधिक प्रभावी और सटीक ढंग से प्रलेखन का दायित्व लेना प्रारम्भ कर दिया। परिणामस्वरूप, पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों पर सर्वेक्षण और सर्वेक्षण पश्चात् कार्य करने पर जोर दिया जा रहा है। पहले की नीति में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ है, जिसके संकेत रा.पा.मि. के स्थापना काल के बाद ही दिखने लगा था। विगत दो वर्षों से इसके निदेशक प्रो. दीप्ति एस. त्रिपाठी के नेतृत्व में इन संस्थाओं को अधिक समावेशी एवं प्रभावी बनाने की दिशा में कदम उठाए गये हैं। फलस्वरूप, अनेक निष्क्रिय पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों में फिर से जान फूँकी गयी है और बहुत-से नये पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र खोले गये हैं। इससे आंचलिक असंतुलन दूर हो सकेगा और आँकड़ा संकलन प्रयास को नया बल मिलेगा।

भारत में एक करोड़ पाण्डुलिपियों के विद्यमान होने का अनुमान है। इस दृष्टि से भारत में पाण्डुलिपि का कदाचित् सबसे बड़ा भण्डार है। हालाँकि इस विपुल सम्पदा के अधिकांश अंश का प्रलेखन इस तरह से नहीं किया गया है कि उसका विद्वान और शोधकर्ता सहज रूप से उपयोग कर सकें। अक्सर इन पाण्डुलिपियों की जानकारी नहीं है अथवा इन तक लोगों की पहुँच नहीं है। इससे अतीत की ज्ञान-परम्परा और वर्तमान के बीच एक अन्तराल उत्पन्न हो गया है।

पाण्डुलिपियों के राष्ट्रीय सूचीकरण के लिए रा.पा.मि. भारत में विस्तृत पाण्डुलिपि प्रलेखन कार्य में संलग्न है। लगभग 22,15,000 पाण्डुलिपियों के सम्बन्ध में सूचना रा.पा.मि. के वेबसाइट www.namami.org पर पहले से उपलब्ध है। इस इलेक्ट्रॉनिक सूची में सम्पूर्ण देश की सांस्थानिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक और निजी संकलनों की पाण्डुलिपियों के सम्बन्ध में सूचना उपलब्ध है।

उद्देश्य

- संस्थाओं और निजी संग्रहों में उपलब्ध अज्ञात पाण्डुलिपि भंडार का पता लगाना।
- देश के अनुमानित एक करोड़ पाण्डुलिपियों का प्रलेखन
- पाण्डुलिपियों के सम्बन्ध में सूचना संकलित करने तथा सजगता लाने के लिए जमीनी स्तर पर सम्पर्क बनाना
- पाण्डुलिपियों की इलेक्ट्रॉनिक सूची निर्मित कर उसे इंटरनेट पर उपलब्ध करवाना

प्रविधि

- ज्ञात-अज्ञात, निजी-सार्वजनिक, सूचीबद्ध-गैर सूचीबद्ध सभी प्रकार की पाण्डुलिपियों की पहचान करने के लिए प्रत्येक राज्य और संघ राज्य क्षेत्र में राष्ट्रीय सर्वेक्षण आयोजित करना
- स्व-शासकीय निकाय एवं आम जनता सहित राज्य और जिला प्रशासन के साथ वृहत्तर स्तर पर समन्वय करना
- पाण्डुलिपि आँकड़ा पत्र में प्रत्येक पाण्डुलिपि के प्रलेखन हेतु सर्वेक्षण पश्चात् व्यापक कार्यक्रम संचालित करना
- पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों (एम.आर.सी.) से आँकड़े प्राप्त करना
- आँकड़ों की छँटनी, जाँच और उन्हें व्यवस्थित कर डाटाबेस में उनकी प्रविष्टि करना
- निर्धारित प्रश्नावली और पाण्डुलिपि आँकड़ा प्रपत्र के माध्यम से भारत के बाहर भारतीय पाण्डुलिपियों के संकलन के प्रलेखन को प्रोत्साहन

आँकड़ा प्रसंस्करण

सूचना संगृहीत करने के बाद एम.आर.सी. अथवा एम.पी.सी. पर उसकी प्रविष्टि मैनुस ग्रन्थावली सॉफ्टवेयर में की जाती है और अंततः उस सूचना को मिशन के पास भेजा जाता है जिसकी विभिन्न क्षेत्र के विद्वान जाँच करते हैं।

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस भारतीय पाण्डुलिपियों का अपने तरह का पहला ऑनलाइन सूचीकरण है। ऐसा विभिन्न संस्थाओं द्वारा अतीत में पाण्डुलिपि प्रलेखन के विभिन्न प्रयासों के कारण सम्भव हुआ। मिशन के आँकड़े पत्र के माध्यम से प्रलेखित प्रत्येक पाण्डुलिपि से जुड़ी सूचना के विभिन्न पहलू सूची में अंकित होते हैं, यथा-शीर्षक, टिप्पणी, भाषा, लिपि, विषय, उपलब्धता स्थान, पृष्ठों की संख्या, चित्र, लेखन, तिथि आदि। समेकित पोर्टल के रूप में इसे लेखक, विषय जैसी श्रेणियों से खोजा जा सकता है।

भारत की सम्पन्न बौद्धिक विरासत के प्रति लोगों को संवेदनशील बनाने के साथ-साथ डाटाबेस भावी पीढ़ी के लिए पाण्डुलिपियों को संरक्षित करने, परिरक्षित करने, सांख्यिकीकृत करने, उन तक पहुँच को बढ़ावा देने और सुरक्षित रखने की दिशा में भविष्य में नीति निर्माण करने को प्रोत्साहित करेगा।

आंध्र प्रदेश सरकार प्राच्य पांडुलिपि पुस्तकालय एवम् शोध संस्थान में आयोजित पांडुलिपि प्रदर्शनी, हैदराबाद, 29 से 31 अगस्त 2011

आँकड़ा संग्रह विवरण

वर्ष	प्राप्त आँकड़े	अनुरक्षित आँकड़े
2003-2004	88,569	88,569
2004-2005	2,02,563	2,91,132
2005-2006	7,70,111	10,61,243
2006-2007	7,03,196	17,64,439
2007-2008	8,31,151	25,77,590
2008-2009	2,76,271	28,53,861
2009-2010	2,14,114	30,67,975
2010-2011	2,11,053	32,79,028
2011-2012	2,15,492	34,94,520

आँकड़ा प्रसंस्करण विवरण

क्र. सं.	श्रेणी	31 मार्च, 2011 तक की स्थिति	31 मार्च, 2012 तक की स्थिति
1.	इलेक्ट्रॉनिक प्रारूप में उपलब्ध कुल आँकड़े	23,58,000	25,67,000
2.	पृष्ठ के रूप में प्राप्त कुल आँकड़े	9,20,000	9,27,000
3.	कुल सम्पादित आँकड़े	27,10,000	28,71,000
4.	वेबसाइट पर जारी कुल आँकड़े	20,00,000	22,15,000

एम.आर.सी. का योगदान

क्र. सं.	एम.आर.सी.के नाम	31 मार्च 2011 तक प्राप्त कुल आँकडे	2011-12 में प्राप्त आँकडे	31 मार्च 2012 तक प्राप्त कुल आँकड़े
1.	अखिल भारतीय संस्कृत परिषद महात्मा गांधी मार्ग हजरतगंज, लखनऊ उत्तर प्रदेश	2,500	18,200	20,700
2.	आनन्द आश्रम संस्था, 22 बुधवार पेठ, पुणे, महाराष्ट्र - 411002	49,033	8,549	57,582
3.	आन्ध्र प्रदेश सरकार प्राच्य पाण्डुलिपि पुस्तकालय एवं शोध संस्थान, जामा-ए-ओसमानिया, ओसमानिया विश्वविद्यालय परिसर, हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश - 500007	24,934	0	24,934
4.	बी.सी.गुप्ता मेमोरियल लाइब्रेरी, गुरुचरण कॉलेज, सिल्चर, असम - 788004	602	0	602
5.	भाई बीर सिंह साहित्य सदन, भाई बीर सिंह मार्ग गोल मार्केट, नयी दिल्ली-1	214	0	214
6.	भण्डारकर प्राच्य शोध संस्थान, दक्कन जिमखाना पुणे, महाराष्ट्र - 411037	68,877	0	68,877

क्र. सं.	एम.आर.सी.के नाम	31 मार्च 2011 तक प्राप्त कुल आँकडे	2011-12 में प्राप्त आँकडे	31 मार्च 2012 तक प्राप्त कुल आँकड़े
7.	बी.एल. प्राच्यविद्या संस्थान, विजय वल्लभ स्मारक परिसर, 20वां कि.मी., जी.टी.कर्नाल रोड पोस्ट - अलीपुर, दिल्ली - 36	1,363	326	1,689
8.	केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, चोग्लामसार, लेह लद्दाख, जम्मू-कश्मीर - 194001	9,242	0	9,242
9.	इतिहास विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय, सूर्यमणिनगर त्रिपुरा	0	0	0
10.	संस्कृत विभाग, एच.एन.बी. गढ़वाल विश्वविद्यालय पौढ़ी गढ़वाल, उत्तराखंड - 246 001	741	1,274	2,015
11.	संस्कृत, पाली एवं प्राकृत विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र - 136119	27,423	2,031	29,454
12.	तमिल विभाग, मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई, तमिलनाडु	5,222	0	5,222
13.	निदेशालय, राज्य पुरातत्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय स्टोन बिल्डिंग, पुराना साचिवालय, श्रीनगर, जम्मू-कश्मीर - 190001	28,137	4,591	32,728
14.	डॉ. हरिसिंह गौड़ विश्वविद्यालय, गौड़नगर, सागर म.प्र. - 470003	50,223	7,950	58,173
15.	फ्रेंच संस्थान पुदुच्चेरी, 11, सेंटलुई स्ट्रीट, पीबी-33 पुदुच्चेरी - 605001	37,494	10,184	47,678
16.	सरकारी प्राच्य पाण्डुलिपि पुस्तकालय, चेन्नई, तमिलनाडु	7,109	0	7,109
17.	हिमाचल कला, संस्कृति एवं भाषा अकादेमी, क्लिफ एंड इस्टेट, शिमला, हिमाचल - 171001	60,379	14,074	74,457
18.	प्राच्य अध्ययन संस्थान, महर्षि कर्वे रोड, नौपाड़ा, थाने वेस्ट, महाराष्ट्र	2,800	0	2,800
19.	ताय अध्ययन एवं शोध संस्थान मोरानहाट, जिला - शिबसागर, असम	0	2,199	2,199
20.	कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय कामेश्वरनगरम्, दरभंगा, बिहार - 846004	10,403	0	10,403
21.	कन्नड विश्वविद्यालय, हम्पी, विद्यारण्य, हॉस्पेट तालुक जिला - बेल्लाड़ी, कर्नाटक - 583276	56,777	6,059	62,836
22.	कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, बाघला भवन, सितलवाड़ी, माण्डा रोड, रामटेक, महाराष्ट्र - 441106	6,143	6,163	12,306
23.	केलाडी संग्रहालय एवं ऐतिहासिक शोध संस्थान, पोस्ट- केलाडी, सागर तालुक, जिला- शिमोगा, कर्नाटक	18,936	1,103	20,039
24.	खुदा बख्श प्राच्य सार्वजनिक पुस्तकालय अशोक राजपथ, पटना, बिहार -800004	23,144	0	23,144
25.	कृष्णकांत हांडिक पुस्तकालय, गौहाटी विश्वविद्यालय, गोपीनाथ बरदलई नगर, असम	25,513	306	25,819
26.	कुंद-कुंद ज्ञानपीठ 584, एम. जी. रोड, तुकोगंज, इंदौर म. प्र. - 452 001	32,165	20,766	52,931

क्र. सं.	एम.आर.सी.के नाम	31 मार्च 2011 तक प्राप्त कुल आँकडे	2011-12 में प्राप्त आँकडे	31 मार्च 2012 तक प्राप्त कुल आँकड़े
27.	लालभाई दलपतभाई प्राच्यविद्या संस्थान, नवरंगपुर, निकट गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद, गुजरात - 380 009	64,740	0	64,740
28.	तिब्बती रचना एवं अभिलेख पुस्तकालय, गंचेन क्यिसांग धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश - 176215	95,998	6,964	1,02,962
29.	महाभारत संशोधन प्रतिष्ठान 1/ई, तृतीय क्रॉस, गिरिनगर प्रथम फेज, बंगलुरू, कर्नाटक - 560085	59,886	0	59,886
30.	मणिपुर राज्य अभिलेखागार, किसामपट, इम्फाल मणिपुर - 795001	38,501	2,277	40,778
31.	पाण्डुलिपि पुस्तकालय, हार्डिंग भवन, प्रथम तल, सीनेट हाऊस, 87/1, कॉलेज, स्ट्रीट, कलकत्ता विश्वविद्यालय कोलकाता, पश्चिम बंगाल - 700073	92,752	18,566	1,11,318
32.	मज़हर मेमोरियल संग्रहालय, बाहरीबाद, ग़ाज़ीपुर उत्तर प्रदेश	0	7,000	7,000
33.	नव नालंदा महाविहार, नालंदा, बिहार - 803111	22,164	6,490	28,654
34.	राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं शोध संस्थान श्रवणबेलगोला, जिला- हासन कर्नाटक - 573135	51,642	7,075	58,717
35.	ओ.आर.आई. श्रीवेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति आन्ध्र प्रदेश - 517502	33,543	0	33,543
36.	ओ.आर.आई., मैसूर विश्वविद्यालय कौटिल्य सर्कल, मैसूर, कर्नाटक - 570005	78,141	0	78,141
37.	ओ.आर.आई. एवं पाण्डुलिपि पुस्तकालय केरल विश्वविद्यालय, तिरुवनन्तपुरम केरल - 695585	75,680	1,423	77,103
38.	उड़िसा राज्य संग्रहालय भुवनेश्वर, ओडीशा	2,90,774	3,302	2,94,076
39.	पटना संग्रहालय विद्यापति मार्ग पटना, बिहार	0	4,000	4,000
40.	राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान, पी.डब्ल्यू.डी.रोड जोधपुर, राजस्थान - 342011	1,76,954	32,801	2,09,755
41.	रामपुर रजा पुस्तकालय, रामपुर उत्तर प्रदेश - 244901	43,300	0	43,300
42.	सलारजंग संग्रहालय, म्युजियम रोड हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश	40,845	0	40,845
43.	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय बनारस, उत्तर प्रदेश - 221001	51,330	7,012	58,342
44.	सरस्वती, सरस्वती विहार, भद्रक, उड़िसा - 756113	1,08,861	13,502	1,22,363
45.	सिंधिया प्राच्य शोध संस्थान, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन, म.प्र.	38,840	0	38,840

क्र. सं.	एम.आर.सी.के नाम	31 मार्च 2011 तक प्राप्त कुल आँकडे	2011-12 में प्राप्त आँकडे	31 मार्च 2012 तक प्राप्त कुल आँकड़े
46.	शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर महाराष्ट्र	6,517	0	6,517
47.	श्री सतश्रुत प्रभावना न्यास, जूनी मानेकवाड़ी, भावनगर गुजरात - 364001	59,001	15,140	74,141
48.	श्रीद्वारकाधीश संस्कृत अकादेमी एवं प्राच्यविद्या शोध संस्थान, द्वारका, गुजरात	0	0	0
49.	श्रीचन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती विश्व महाविद्यालय (विश्वविद्यालयवत्), कांचिपुरम, तमिलनाडु - 631561	39,436	1,525	40,961
50.	श्री देव कुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान, देवस्थान महादेव रोड, आरा, बिहार - 802301	1,17,114	0	1,17,114
51.	तंजौर महाराज सरफोजी सरस्वती महल पुस्तकालय, तंजौर, तमिलनाडु - 613009	35,914	0	35,914
52.	थुंचन स्मृति न्यास, थुंचन परम्बा जिला- मामलापुरम, केरल - 676101	1,43,970	12,157	1,56,027
53.	उत्तरांचल संस्कृत अकादमी हरिद्वार, उत्तराखंड - 249401	25,927	2,519	28,446
54.	विश्वेश्वरानन्द विश्वबंधु संस्कृत एवं प्राच्यविद्या अध्ययन संस्थान, होशियारपुर, पंजाब - 146021	26,206	161	26,367
55.	वृन्दावन शोध संस्थान, रमणरेती, वृन्दावन वृन्दावन उ.प्र.- 281121	45,206	856	46,062

संरक्षण

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन पाण्डुलिपि सम्पदा के संरक्षण के प्रति सर्वथा सजग एवं प्रतिबद्ध है।

इसके संरक्षण प्रयास के तीन आयाम हैं:

1. मूल पाण्डुलिपियों का संरक्षण
2. सांख्यिकीकरण के माध्यम से संरक्षण
3. माइक्रोफिल्म के माध्यम से संरक्षण

मूल पाण्डुलिपियों का संरक्षण निवारक एवं उपचारात्मक विधियों से किया जाता है। इस उद्देश्य के लिए जो प्रविधि अपनायी जाती है, उसके तहत परम्परागत भारतीय विधियों और तैयार हुई एवं पालन की जा रही आधुनिक वैज्ञानिक विधियों - दोनों के सकारात्मक पक्षों को शामिल किया जाता है। प्राथमिकता के आधार पर देश के विभिन्न स्थानों पर निवारणात्मक एवं उपचारात्मक कार्यशालाओं का आयोजन करने के साथ-साथ पाण्डुलिपि संरक्षण का काम 50 पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्रों के द्वारा सम्पन्न कराया जाता है। संरक्षण कार्यशालाओं में दो उद्देश्यों को ध्यान में रखा जाता है - पाण्डुलिपि का संरक्षण और इस क्षेत्र में प्रशिक्षित मानव संसाधन का विकास करना। संरक्षण की तुरन्त आवश्यकता को महसूस करते हुए रा.पा.मि. ने पाण्डुलिपि संरक्षण को व्यापक स्तर पर प्रारम्भ किया है। इन उपायों के साथ ही रा.पा.मि. ने अपने नयी दिल्ली स्थित मुख्यालय में एक प्रयोगशाला प्रारम्भ की है। यहाँ पर 5 सुप्रशिक्षित संरक्षक निवारक एवं उपचारात्मक उपायों द्वारा महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियों के सरंक्षण को मूर्त रूप दे रहे हैं।

वर्ष 2011-2012 के दौरान आयोजित कार्यशाला

क्रमांक	तिथि	कार्यशाला के नाम	सहयोगी संस्थान के नाम एवं स्थान
1.	1-5 अगस्त, 2011	निवारक संरक्षण कार्यशाला	प्राच्य शोध संस्थान, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति, आन्ध्र प्रदेश
2.	24-28 अगस्त, 2011	निवारक संरक्षण कार्यशाला	अकलंक शोध संस्थान, कोटा, राजस्थान
3.	26-30 सितम्बर, 2011	निवारक संरक्षण कार्यशाला	भण्डारकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे, महाराष्ट्र
4.	9-13 अक्टूबर, 2011	निवारक संरक्षण कार्यशाला	राज्य संग्रहालय, चेन्नई, एगमोर, चेन्नई, तमिलनाडु
5.	17-21 अक्टूबर, 2011	निवारक संरक्षण कार्यशाला	पाण्डुलिपि पुस्तकालय, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता, पश्चिम बंगाल
6.	8-12 नवम्बर, 2011	निवारक संरक्षण कार्यशाला	के.के. हांडिक पुस्तकालय, गौहाटी विश्वविद्यालय, गौहाटी
7.	22-25 नवम्बर, 2011	जैविक अपक्षय पर निवारक कार्यशाला (नयी)	इनटैक लखनऊ, लखनऊ, उ. प्र.
8.	2-6 दिसम्बर, 2011	निवारक संरक्षण कार्यशाला	आन्ध्र प्रदेश राज्य अभिलेखागार एवं शोध संस्थान, हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश
9.	6-11 दिसम्बर, 2011	दुर्लभ सहयोग सामग्री (वस्त्र)पर संरक्षण कार्यशाला	एल. डी. भारतविद्या संस्थान, अहमदाबाद
10.	19-23 दिसम्बर, 2011	निवारक संरक्षण कार्यशाला	राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं शोध संस्थान श्रवणबेलगोला, कर्नाटक

क्रमांक	तिथि	कार्यशाला के नाम	सहयोगी संस्थान के नाम एवं स्थान
11.	10 जनवरी- 10 फरवरी, 2012	उपचारात्मक संरक्षण कार्यशाला	इनटैक भुवनेश्वर, ओडीशा
12.	18 जनवरी- 17 फरवरी, 2012	उपचारात्मक संरक्षण कार्यशाला	इनटैक लखनऊ, लखनऊ, उ. प्र.
13.	20-24 मार्च, 2012	निवारक संरक्षण कार्यशाला	इतिहास विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय, सूर्यमणिनगर, त्रिपुरा

पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्रों का योगदान

क्र. सं.	पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्रों के नाम	निवारक संरक्षण के अंतर्गत संरक्षित पाण्डुलिपि	निवारक संरक्षण के अंतर्गत संरक्षित पन्ने	उपचारक संरक्षण के अंतर्गत संरक्षित पाण्डुलिपि	उपचारक संरक्षण के अंतर्गत संरक्षित पन्ने	संरक्षित पृष्ठों की कुल संख्या
1.	ए.आई.टी.आई.एच.वाई.ए. प्लाट न. 4/330, प्रथम तल, पोस्ट- शिशुपाल गडा (नजदीक गंगुआ पुल, पुरी रोड), भुवनेश्वर-2, ओडीशा	405	41,206	29	4,023	45,229
2.	अकलंक शोध संस्थान, अकलंक विद्यालय संगठन, बसंत विहार, कोटा, राजस्थान	-	36,936	-	-	36,936
3.	आन्ध्र प्रदेश राज्य अभिलेखागार एवं शोध संस्थान, तारनाका, हैदराबाद-7, आन्ध्र प्रदेश	-	26,275	-	3,063	29,338
4.	भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान, दक्कन जिमखाना पुणे, महाराष्ट्र - 411037	119	35,090	9	172	35,262
5.	केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, चोग्लामसार, लेह (लद्दाख), जम्मू-कश्मीर - 194001	-	1,456	-	1,456	2,912
6.	केन्द्रीय पुस्तकालय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस, उत्तर प्रदेश	275	41,120	63	2,570	43,690
7.	भाषा एवं संस्कृति विभाग, हिमाचल राज्य संग्रहालय, चौड़ा मैदान, शिमला, हिमाचल प्रदेश - 171004	619	38,019	130	6,696	44,715
8.	संस्कृत, पाली एवं प्राकृत विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा	-	77,019	-	-	77,019
9.	दिगम्बर जैन पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र, जैन विद्या संस्थान, दिगम्बर जैन नसीम भट्टारकजी, स्वामी रामसिंह मार्ग, जयपुर, राजस्थान - 302004	1,980	1,14,298	-	-	1,14,298
10.	राज्य संग्रहालय, चेन्नई, एगमोर, चेन्नई, तमिलनाडु - 600008	539	68,227	-	-	68,227

क्र. सं.	पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्रों के नाम	निवारक संरक्षण के अंतर्गत संरक्षित पाण्डुलिपि	निवारक संरक्षण के अंतर्गत संरक्षित पन्ने	उपचारक संरक्षण के अंतर्गत संरक्षित पाण्डुलिपि	उपचारक संरक्षण के अंतर्गत संरक्षित पन्ने	संरक्षित पृष्ठों की कुल संख्या
11.	आई.सी.के.पी.ए.सी., इनटैक चित्रकला परिषद, कला संरक्षण केन्द्र, कुमार कुरूप मार्ग, बंगलुरु, कर्नाटक - 560001	333	36,560	48	5,564	42,124
12.	भारतीय संरक्षण संस्थान परिषद, एच.आई.जी. - 44, सेक्टर - ई, अलीगंज स्कीम, लखनऊ, उत्तर प्रदेश - 226024	2,856	45,639	10	699	46,338
13.	इनटैक आई.सी.आई., उड़िसा कला संरक्षण केन्द्र, उड़िसा राज्य संग्रहालय परिसर, भुवनेश्वर, उड़िसा - 751014	-	15534	-	1398	16,763
14.	केलादी संग्रहालय एवं इतिहास शोध संस्थान, पो. - केलादी, सागर तालुक, जिला - शिमोगा, कर्नाटक - 577401	-	73215	-	40584	2,19,077
15.	कृष्णकांत हांडिक पुस्तकालय, गौहाटी विश्वविद्यालय,गोपीनाथ बारदलई नगर, गुवाहाटी, असम - 781014	239	5,358	15	737	6,095
16.	कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, 584, एम.जी. रोड, तुकोगंज, इंदौर - 452 001	612	30,000	-	-	30,000
17.	मणिपुर राज्य अभिलेखागार केईसमपट, इम्फाल, मणिपुर - 795 001	414	10,192	12	645	10,837
18.	पाण्डुलिपि पुस्तकालय, हार्डिंग भवन, प्रथम तल, सीनेट हाउस, 87/1 कॉलेज स्ट्रीट, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता, पश्चिम बंगाल - 700073	526	13,996	-	-	13,996
19.	मज़हर स्मृति संग्रहालय, बहारियाबाद, ग़ाज़ीपुर, उत्तर प्रदेश	448	35,178	536	2,770	37,948
20.	नागार्जुन बौद्ध फाउन्डेशन, 18 अंधियारी बाग, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश - 273001	3,544	47,462	-	-	47,462
21.	राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं शोध संस्थान, श्रीदेवल तीर्थम् श्रवणबेलगोला, जिला- हासन, कर्नाटक	-	61,004	-	53,428	1,14,432
22.	प्राच्य शोध संस्थान, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति, आन्ध्र प्रदेश - 517507	84	18,108	-	-	18,108

क्र. सं.	पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्रों के नाम	निवारक संरक्षण के अंतर्गत संरक्षित पाण्डुलिपि	निवारक संरक्षण के अंतर्गत संरक्षित पन्ने	उपचारक संरक्षण के अंतर्गत संरक्षित पाण्डुलिपि	उपचारक संरक्षण के अंतर्गत संरक्षित पन्ने	संरक्षित पृष्ठों की कुल संख्या
23.	प्राच्य शोध संस्थान एवं पाण्डुलिपि पुस्तकालय केरल विश्वविद्यालय, तिरुवनन्तपुरम्, केरल - 695585	455	69960	179	1452	71,412
24.	ओडीशा राज्य संग्रहालय, उड़िसा	300	29,159	7	181	29,340
25.	पटना संग्रहालय, विद्यापति मार्ग, पटना, बिहार	2,001	12,000	-	556	12,556
26.	राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान, पी. डब्ल्यू, डी. रोड, जोधपुर, राजस्थान - 342011	4192	21,756	677	9,280	31,036
27.	संबलपुर विश्वविद्यालय पुस्तकालय, संबलपुर विश्वविद्यालय, बुर्ला, ओडीशा - 768001	871	74,125	-	-	74,125
28.	श्री देव कुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान, देवाश्रम, महादेव रोड, आरा, बिहार - 802301	257	26,935	64	2,312	29,247
29.	श्री वादीराज शोध फांउन्डेशन, श्रीपुथिगे मठ, कार स्ट्रीट, उडूपी, कर्नाटक	417	36,924	50	4,095	41,019
30.	थुंचन स्मृति न्यास, थुंचन पराम्बा, जिला- मालापुरम, केरल - 676 101	256	53,103	-	-	53,103
31.	त्रिपुरा विश्वविद्यालय, सूर्यमणिनगर, त्रिपुरा वेस्ट, त्रिपुरा	337	25,836	-	-	25,836
32.	उत्तरांचल संरक्षण शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, मार्कण्डेय हाउस, (एच.एम. टी. मुख्य द्वार के नजदीक), रानीबाग, जिला- नैनीताल, उत्तराखंड - 263126	140	16,663	50	3,032	19,695
33.	वृन्दावन शोध संस्थान, रमणरेती, वृन्दावन, उ.प्र. - 281121	1870	58,666	141	7,243	65,909

सांख्यिकीकरण

पाण्डुलिपि के सांख्यिकीकरण का तात्पर्य है शब्द सम्पदा रूपी विरासत का परिरक्षण और प्रलेखन करना। वर्तमान समय में सांख्यिकीकरण एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में उभरकर सामने आया है। सूचना प्रौद्योगिकी में प्रगति के कारण वर्तमान समय में सांख्यिकीकरण पाण्डुलिपियों के संरक्षण एवं प्रलेखल का सशक्त माध्यम बनकर उभरा है। इस के द्वारा एक ओर मूल पाठ के परिरक्षण और प्रलेखन की आशा बँधती है वहीं दूसरी ओर इस माध्यम से विद्वानों और शोधार्थियों के लिए पाण्डुलिपियों की उपलब्धता पहले की तुलना में अधिक सुलभ हो गयी है। सन् 2004 में मिशन ने सांख्यिकीकरण की एक पायलट परियोजना की शुरूआत की जिसका उद्देश्य सम्पूर्ण देश के विभिन्न पाण्डुलिपि भंडारों का सांख्यिकीकरण था। सन् 2006 में पायलट परियोजना पूरी हो गयी। इसके उपरान्त नयी परियोजनाओं की शुरूआत हुई जिनका लक्ष्य देश के महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपि संकलनों का सांख्यिकीकरण है। नयी सांख्यिकीकरण परियोजनाओं के लिए मिशन पाण्डुलिपियों हेतु एक सांख्यिकीय संसाधन आधार तैयार करना चाहता है।

सांख्यिकीकरण के द्वितीय चरण को सफलतापूर्वक पूरा किया जा चुका है तथा तृतीय चरण में एक तिहाई अनुमानित कार्यों को भी पूरा किया जा चुका है।

उद्देश्य

- भावी पीढ़ियों के लिए मूल पाण्डुलिपियों का परिरक्षण
- मूल प्रतियों में छेड़छाड़ किये बिना उन तक विद्वानों और शोधार्थियों की पहुँच सुलभ करना और उपयोग को प्रोत्साहित करना
- देश के कुछ महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपि संकलनों की सांख्यिकीकृत प्रतियों के संसाधन आधार के रूप में सांख्यिकीय पुस्तकालय का निर्माण करना
- पाण्डुलिपियों के सांख्यिकीकरण हेतु मानकों और प्रक्रियाओं का निर्धारण करना

प्रविधि

- सांख्यिकीरण के प्रथम चरण में पायलट पिरयोजना के अन्तर्गत पाँच राज्यों में पाण्डुलिपि संग्रहों पर काम हुआ है।
- द्वितीय चरण के अन्तर्गत देशभर में फैले पाण्डुलिपि भण्डारों की महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियों के अस्सी लाख पृष्ठों का सांख्यिकीकरण किया गया
- तृतीय चरण के अन्तर्गत देशभर में फैले पाण्डुलिपि भण्डारों की महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियों के अन्य अस्सी लाख पृष्ठों के सांख्यिकीकरण का लक्ष्य रखा गया है
- सूचियों और नव कैटलोगस कैटलगोरम का सांख्यिकीकरण
- अभिलेखीय उद्देश्य से सांख्यिकीकृत छवियों से माइक्रोफिल्म तैयार करना
- पाण्डुलिपियों के भण्डारण एवं शोध के लिए सुविधापूर्वक उपलब्धि हेतु सांख्यिकीकृत पाण्डुलिपि पुस्तकालय की स्थापना

सांख्यिकीकरण आकलन

सांख्यिकीकरण 'आकलन' में निम्नलिखित पर विचार किया जाता है:

1. स्रोत सामग्री की 'परिस्थिति' (क्या सांख्यिकीकरण के समय इसके विशेष उपचार की आवश्यकता है अथवा कहीं उसका विघटन तो नहीं हो रहा?
   सांख्यिकीकरण हेतु बाह्य सहायता लेते समय सुरक्षा पक्ष पर विचार
2. स्रोत सामग्री के अन्य 'भौतिक' एवं 'विषय वस्तु' सम्बन्धी लक्षण
3. आन्तरिक संसाधन और बाह्य संसाधन (यदि अनुमति दी जाती है) के परिप्रेक्ष्य में परियोजना पूरा करने में लागत

सांख्यिकीकरण आकलन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

- स्रोत से प्राप्त पाण्डुलिपि का सांख्यिकीकरण किया जायेगा अथवा नहीं इस सम्बन्ध में निर्णय लेना है अथवा निर्णय की पुष्टि करना है

- परीक्षण तकनीक का मोटे तौर पर आकलन। उपयोग में लायी जाने वाली तथा आवश्यक विभेदन (resolution) तथा बिट की गहनता का निर्धारण
- कार्य को स्थापित ढर्रे और तय समय सीमा के अन्तर्गत पूरा करने के लिए सुरक्षा जोखिम, लागत, और अपने संसाधन को ध्यान में रखते हुए निर्णय लेना

स्तर निर्धारण (बेंचमार्किंग)

स्तर निर्धारण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत सांख्यिकीकरण की प्रक्रिया आरम्भ करने से पूर्व, सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सूचना को अंकित करने के लिए, विभिन्न स्तर सुनिश्चियत किये जाते हैं, जैसे रिज़ोल्यूशन या गहनता को ठीक से सेट करना, स्रोत सामग्री की मुख्य प्रकृति का सम्पूर्ण ज्ञान आदि। मिशन ने सांख्यिकीकरण कार्यक्रम पूरा करने के लिए कुछ मानक अपेक्षाएँ निर्धारित की हैं।

फ्लैट बेड स्कैनर

मिशन ने इसे एक पुस्तक 'अभिलेखीय सामग्री के सांख्यिकीकरण हेतु दिशानिर्देश' के रूप में अपने वेबसाईट www.namami.org पर उपलब्ध करा रखा है। इस पुस्तक में निम्नलिखित विषयों पर चर्चा है:

प्रयुक्त उपकरण और इनके कार्य-निष्पादन :

1. **स्कैनर:** स्कैन करने के लिए बिना स्पर्श किये काम करने वाले उपकरणों का प्रयोग किया जाता है क्योंकि स्पर्श करने पर पाण्डुलिपि पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है। इस कारण से फ्लैट बेड स्कैनर की अपेक्षा फेस अप स्कैनर का उपयोग किया जाता है।
2. **बिम्ब गुणवत्ता:** लिये गये बिम्ब की गुणवत्ता को स्कैनिंग रिज़ोल्यूशन स्कैन किये गये बिम्ब का बिट डेप्थ उन्नत बनाने की प्रक्रिया और प्रयुक्त सम्पीडन, स्कैनिंग उपकरण अथवा प्रयुक्त तकनीक तथा स्कैनिंग प्रचालक के कौशल के संचित परिणाम के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

- **रिज़ोल्यूशन:** बिम्ब प्रस्तुत करने में प्रयुक्त पिक्सल की संख्या, जिसे प्रति इंच डॉट या प्रति वर्ग इंच पिक्सल के रूप में व्यक्त किया जाता है, द्वारा रिज़ोल्यूशन को परिभाषित किया जाता है। बिम्ब लेने के लिए अधिक संख्या में पिक्सल के प्रयोग से रिज़ोल्यूशन उच्च हो जाता है और प्रत्येक बारीकी में निखार की सम्भावना बढ़ जाती है। लेकिन केवल रिज़ोल्यूशन बढ़ा देने भर से बेहतर गुणवत्ता नहीं हो जाती। अतएव बिम्ब का स्कैनिंग 300 डॉट प्रति इंच पर होगा। मगर पठनीयता कमजोर होने पर इसे 600 डी पी आई तक बढ़ा देना चाहिए।
- **बिट डेप्थ:** यह प्रत्येक पिक्सल को परिभाषित करने के लिए प्रयुक्त बिट्स की संख्या का मापन है। प्रयुक्त बिट की जितनी अधिक गहराई होगी, व्यक्त किये जा सकने वाले भूरे और रंगीन टोन की उतनी ही अधिक संख्या होगी। मिशन में निम्नलिखित प्रकार से स्कैनिंग किया जाता है-
  - श्वेत-श्याम को प्रकट करने के लिए बाई- टोनल स्कैनिंग तथा
  - ग्रेस्केल स्कैनिंग के उपयोग से भूरी छाया उत्पन्न करने के लिए प्रति पिक्सल बहुत-से बिट का उपयोग किया जाता है। ग्रेस्केल का वांछित स्तर प्रति पिक्सल 8 बिट होता है जिससे भूरे स्तर के 256 स्वरूप प्राप्त किये जा सकते हैं।

  रंगीन स्कैनिंग रंग प्रकट करने के लिए बहु बिट पिक्सल का उपयोग करता है। प्रति पिक्सल 24 बिट को सही रंग स्तर कहते हैं।

- **चित्रित पाण्डुलिपियाँ:** चित्र और चार्ट को अलग से स्कैन किया जाता है तथा इन्हें पाठ में उचित स्थान पर लगा दिया जाता है। चाँदी की धातु के उपयोग से तैयार चित्रों की छवि लेने के समय ऑक्सीडेशन से बचने के लिए विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए।
- **छवि निखार प्रक्रिया:**
  1. रॉ मास्टर इमेज विनिर्देशन के अनुरूप मूल रॉ इमेज को सेव करके रखना चाहिए।
  2. गंदगी, कीड़े के निशान, पानी के निशान, शोर, छाया, रगड़ के निशान, मुड़े हुए निशानों को हटाने के लिए रॉ इमेज का प्रसंस्करण किया जाता है।
  3. इमेज प्रसंस्करण के अन्तर्गत धवलता और रंग व्यतिरेक का समायोजन, गामा संशोधन, तेज रंग डालने तथा फीका करने, पैटर्न को हटाने तथा रंग समायोजन का भी काम किया जाता है।
  4. स्वच्छ मूल छवि विनिर्देशन के अनुरूप स्वच्छ छवि को सुरक्षित रखा जाना चाहिए।
  5. स्वच्छ छवि से पी.डी.एफ.-ए नाम से एक व्युत्पन्न छवि रखी जाती है।
- **सम्पीडन:** डिजिटल छवि के प्रसंस्करण, भंडारण, और प्रेषण हेतु सामान्य तौर पर फाइल के आकार को छोटा करने के लिए सम्पीडन का प्रयोग किया जाता है। ऐसा सूचना की आवृत्ति और मानव आँखों से ओझल होने वाली छवियों से बचने के लिए किया जाता है। न्यूनतम सम्पीडन तकनीक का उपयोग इसलिए किया जाता है जिससे विसम्पीडित छवि पूर्व की छवि जैसी ही हो क्योंकि आकार छोटा करते समय किसी भी सूचना को नष्ट नहीं होना चाहिए। सामान्य तौर पर मास्टर फाइल के लिए 'कम क्षय' सम्पीडन और एक्सेस फाइल के लिए 'क्षयी' सम्पीडन का उपयोग किया जाता है।

3. स्कैन की गयी छवि हेतु छवि प्रारूप

पाण्डुलिपि के प्रत्येक पृष्ठ के लिए तीन प्रकार की छवियों को उत्पन्न करने की आवश्यकता होती है।

- मास्टर इमेज (मूल अस्वच्छ और असम्पीडित)
- क्लीन इमेज (कम क्षयी स्वच्छ छवि)
- पी.डी.एफ - ए (व्युत्पन्न क्षयी छवि)

इन छवियों का विस्तृत विनिर्देशन :

रॉ मास्टर इमेज (मूल सांख्यिकीकृत छवि)

फाइल प्रारूप: टिफ 6.0 अथवा उच्चतर
सम्पीडन: असम्पीडित
स्थानिक रिज़ोल्यूशन: 300/600 डी.पी.आई. न्यूनतम ऑप्टिकल
विषय अर्द्ध आँकड़े: रा.पा.मि. द्वारा निर्धारित मानक के अनुरूप
फाइल नामकरण: रा.पा.मि. द्वारा यथा विनिर्दिष्ट

क्लिन मास्टर इमेज (स्वच्छ छवि)

फाइल प्रारूप: टिफ 6.0 अथवा उच्चतर
सम्पीडन: कम क्षय सम्पीडित
स्थानिक रिसॉल्यूशन: 8'' X 10'' डी.पी.आई.
विषय अर्द्ध आँकड़े: रा.पा.मि. द्वारा निर्धारित मानक के अनुरूप
फाइल नामकरण: रा.पा.मि. द्वारा यथा विनिर्दिष्ट

पी.डी.एफ - ए इमेज:

फाइल प्रारूप: पी.डी.एफ.
सम्पीडन: ग्रुप 4 सी.सी.आई.टी.टी. क्षयी सम्पीडन
स्थानिक रिज़ोल्यूशन: 300/600 डी.पी.आई. पर 1024 गुने 768 पिक्सल
विषय अर्द्ध आँकड़े: रा.पा.मि. द्वारा निर्धारित मानक के अनुरूप
फाइल नामकरण: रा.पा.मि. द्वारा यथा विनिर्दिष्ट

4. नामकरण परिपाटी

छवियों का नामकरण एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा है जिस पर मिशन ने अत्यन्त ही दक्षतापूर्वक कार्य किया है। प्रत्येक सांख्यिकीकृत पाण्डुलिपि का मिशन के इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस में प्रलेखन किया जा चुका है। स्कैन की गयी प्रत्येक पाण्डुलिपि के मेटा डाटा सूचना के लिए (पाण्डुलिपि को वर्णित करने वाली मुख्य सूचना) पाण्डुलिपि पहचान संख्या दी गयी है (मानुस आई डी) जिसे मिशन के मानुस ग्रन्थावली सॉफ्टवेयर में सृजित किया गया है। संस्थान में जहाँ पाण्डुलिपि रखी जाती है और सांख्यिकीकरण की जाती है वहाँ से मानुस आई डी और अधिग्रहण संख्या रखी जाती है, ये प्रत्येक पाण्डुलिपि की सांख्यिकीकृत छवि के नामकरण के आधार होते हैं।

5. भण्डारण विनिर्देशन

मिशन द्वारा तय नामकरण परिपाटी के अनुरूप सभी रॉ मास्टर छवि, स्वच्छ मूल छवि और पी.डी.एफ-ए छवि को

विश्वसनीय एवं उच्च स्तरीय डी.वी.डी. और हार्ड डिस्क में रखा जाता है।

6. **व्युत्पाद्य:**
   - सम्बन्धित पाण्डुलिपि भण्डार को डी.वी.डी. स्वरूप में सांख्यिकीकृत पाण्डुलिपियों की दो प्रतियाँ (डी.वी.डी. एवं एच.डी.डी.) तथा एक पी.डी.एफ-ए प्रति सुपुर्द की जाती है।
   - प्रत्येक डी.वी.डी. तथा एच.डी.डी. पर उसका नाम, रा.पा.मि. द्वारा दी गयी मानुस आई डी तथा पाण्डुलिपि भण्डार की अधिग्रहण संख्या अंकित की जाती है।
   - उपलब्ध स्थान के आधार पर एक डी.वी.डी. / एच.डी.डी. में एक से अधिक पाण्डुलिपियों का भण्डारण किया जा सकता है लेकिन यदि दूसरी पाण्डुलिपि के लिए पर्याप्त जगह नहीं है तो उसे दूसरे डी.वी.डी. / एच.डी.डी. में रखते हैं।
   - एक डी.वी.डी. / एच.डी.डी. में सभी पाण्डुलिपि छवियों को एक ही फार्मेट में रखा जाता है।
   - आवरण के डिजाइन और पैकिंग लागत को अलग से प्रस्तुत किया जाता है।
   - गुणवत्ता नियन्त्रण दल का प्रमाण-पत्र संलग्न किया जाना चाहिए।
   - रा.पा.मि. के पास त्रैमासिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

गुणवत्ता आश्वासन

यह अनिवार्य है कि सांख्यिकीकरण गुणवत्ता नियन्त्रण विश्लेषण के विभिन्न चरणों से होकर गुजरे। यह इस बात के सत्यापन के लिए स्वीकृत विधि है कि प्रत्येक प्रस्तुति मानक है। समय और वित्त की सीमा को देखते हुए, इस प्रक्रिया में लागत को कम करने के लिए किसी प्रकार के नमूने तैयार करना अनिवार्य हो जाता है। एन ए आर ए के अनुसार दस छवियाँ या कुल छवियों का दस प्रतिशत (जो अधिक हो) को गुणवत्ता नियन्त्रण से होकर गुजरना चाहिए (यह चयन सम्पूर्ण संग्रह में से कहीं से भी कर लेना चाहिए)। उचित तो यह होता है कि सभी मुख्य छवियों और उनके व्युत्पन्न के सम्बन्ध में गुणवत्ता आश्वासन प्रलेखन के प्रत्येक चरण में होना चाहिए। इस दौरान निम्नलिखित बिन्दुओं पर ग़ौर करना चाहिए -

- छवि के आकार
- छवि का रिज़ोल्यूशन
- फाइल का प्रारूप
- छवि मोड (अर्थात रंगीन छवि रंगीन रहती है, भूरा नहीं)
- बिट डेप्थ
- हाइलाइट और छाया का विवरण
- कुल मान
- धवलता
- कन्ट्रास्ट
- पैनापन (शार्पनेस)
- इंटरफ्रेंस
- अभिमुख (ओरियन्टेशन)
- क्रॉप्ड तथा बोर्डर क्षेत्र, छूटे हुए पाठ अंश और पृष्ठ संख्या
- छूटी हुई रेखाएँ या पिक्सल
- अधिग्रहण और संक्षिप्तता सहित खराब स्तर का क्षेपक
- पाठ की पठनीयता
- फाइल नाम

समग्रता, कार्य की दक्षता और परियोजना के लक्ष्य को पूरा करने के लिए कुल प्राप्ति पर ध्यान देना चाहिए। एन.ए.आर. ए. की संस्तुति है कि एक प्रतिशत से अधिक पाण्डुलिपि अंश गुणवत्ता मानक के अनुरूप नहीं होने पर उन पर पुन: काम करने की आवश्यकता होती है। मिशन में गुणवत्ता नियन्त्रण मानदंड अच्छी तरह से परिभाषित है। खुदा बख्श ओरियन्टल पब्लिक लाइब्रेरी द्वारा शुरू की गयी प्रक्रिया, गुणवत्ता नियन्त्रण मानक को निर्धारित करने के लिए मिशन ने एक बैठक आयोजित की। इसमें सांख्यिकीकरण और इमेजिंग प्रौद्योगिकी के विशेषज्ञ इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सांख्यिकीकरण एजेंसी द्वारा उपलब्ध करायी गयी सामग्री की जाँच करने का सर्वोत्तम और सस्ता तरीका विशेषज्ञ द्वारा यादृच्छिक जाँच करना है। मिशन अन्तिम सुपुर्दगी से पहले गुणवत्ता नियन्त्रण के लिए सांख्यिकीकरण स्थल पर विशेषज्ञों को भेजता है और पर्यवेक्षण करता है।

उपलब्धता सुविधा मुहैया कराने की दृष्टि से सांख्यिकीकरण के लाभ और मानक परिरक्षण के रूप में सांख्यिकीकरण से होने वाली हानि को स्वीकार करते हुए, यह पूर्व के अनुभवों से स्पष्ट है कि विविध प्रस्तुतियों को होने देने के लिए मुख्य गुणवत्ता नियन्त्रण स्तर पर सांख्यिकीकरण सबसे कम लागत वाली विधि है (प्रिंट, अधिग्रहण छवि और संक्षिप्त प्रस्तुति के लिए) जिसे दीर्घकालीन अवधि में मूल प्रलेखन के विकल्प के रूप में किया जा सकता है।

कम्प्यूटर तकनीकी से बिल्कुल एक नया परिदृश्य उभरकर सामने आता है। सांख्यिकीकरण का अर्थ है कम्प्यूटर के उस प्रारूप में सूचना लेना, उसका भंडारण और उसे कम्प्यूटर के जरिए उपलब्ध करवाना जो कि मानक, सुव्यवस्थित और माँग पर उपलब्ध होता है।

सांख्यिकीकरण परियोजना के अन्तर्गत संस्थाएँ

पायलट परियोजना तथा द्वितीय चरण के अन्तर्गत देशभर की निम्नलिखित संस्थाओं में पाण्डुलिपियों का सांख्यिकीकरण किया गया :

1. प्राच्य अनुसन्धान पुस्तकालय, श्रीनगर, जम्मू-कश्मीर
2. कुट्टिअट्टम पाण्डुलिपि, केरला
3. सिद्ध पाण्डुलिपि, तमिलनाडु
4. ओडीशा राज्य संग्रहालय, भुवनेश्वर, ओडीशा
5. चुनी हुई जैन पाण्डुलिपियाँ
6. ओडीशा राज्य संग्रहालय, भुवनेश्वर
7. कृष्णकांत हांडिक पुस्तकालय, गौहाटी
8. हरि सिंह गौड़ विश्वविद्यालय, सागर
9. आनन्द आश्रम संस्था, पुणे
10. हिमाचल कला, संस्कृति और भाषा अकादमी, शिमला
11. वृंदावन शोध संस्थान, वृंदावन
12. एशिया अध्ययन संस्थान, चेन्नई
13. फ्रांसीसी संस्थान, पुदुच्चेरी
14. कुंद कुंद ज्ञानपीठ, इंदौर
15. भोगीलाल लहरचंद भारतविद्या संस्थान, दिल्ली
16. अखिल भारतीय संस्कृत परिषद, लखनऊ

रा.पा.मि. अपने तृतीय चरण के अन्तर्गत निम्नलिखित पाण्डुलिपि भण्डारों में पाण्डुलिपि संकलनों का सांख्यिकीकरण कर रहा है :

1. राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान, राजस्थान
2. राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, इलाहाबाद
3. भारत इतिहास संशोधन मंडल, पुणे
4. एच. एम. एस. केन्द्रीय पुस्तकालय, जामिया हमदर्द, नयी दिल्ली
5. वी. वी. आई. एस. एंड आई. एस., होशियारपुर

अन्य गतिविधियाँ

1. सांख्यिकीकरण पाण्डुलिपि पुस्तकालय

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन का इतिहास में प्रथम बार मानव की समस्त साहित्यिक, कलात्मक और वैज्ञानिक रचनाओं को सांख्यिकीकृत करके संरक्षित और उन्हें हमारी संस्कृति, शोध, शिक्षा, विवेचना और भावी पीढ़ियों के लिए उपलब्ध कराने का प्रयास है। लक्ष्य है कि भारतीय सांख्यिकीकृत पाण्डुलिपि पुस्तकालय स्थापित की जाये जो रचनात्मकता को बढ़ावा देगा और पाण्डुलिपि में निहित ज्ञान को मानव के लिए सुलभ बनायेगा। इस उद्देश्य को साकार करने के लिए प्रथम चरण के अन्तर्गत सांख्यिकीकृत पुस्तकालय की स्थापना करना है जिसमें एक स्थान पर मुख्य रूप से भारतीय भाषाओं की महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियों की सांख्यीकृत प्रतियाँ उपलब्ध हो सकें। इस पुस्तकालय के बनने से हम बहुत जल्द यह अपेक्षा करेंगे कि विज्ञान, कला, संस्कृति, परम्परागत चिकित्सा पद्धति, वेद, तन्त्र और अन्य विषयों में भारतीय सांख्यिकीकृत पुस्तकालय स्थापित होने के प्रयास प्रारम्भ हो जाएँगे और हर एक के लिए यह ज्ञान भण्डार उपलब्ध होगा।

रा. पा. मि. ने आज तक 1.05 करोड़ पाण्डुलिपियों की सांख्यिकीकृत छवियों को डी.वी.डी. और हार्ड डिस्क में रख लिया है। भविष्य में जैसे-जैसे सांख्यिकीकरण का काम आगे बढ़ेगा वैसे-वैसे इस दिशा में और भी काम किया जायेगा। डी.वी. डी. और हार्ड डिस्क में आँकड़े अधिक दिनों तक सुरक्षित नहीं रहते हैं तथा इनके नष्ट होने की सम्भावना बनी रहती है। डी.वी.डी. / एच.डी.डी. का जीवन काल पाँच वर्षों का होता है। अतएव, सुरक्षा और आँकड़ों को सहज प्राप्त करने के लिए भण्डारण समस्या का समाधान करने की तत्काल आवश्यकता है। सांख्यिकीकृत पाण्डुलिपियों का अधिक से अधिक भण्डारण करने तथा उन्हें सुरक्षित रखने वाले सर्वर की आवश्यकता है। यदि आँकड़ों का ठीक से भण्डारण नहीं किया गया तो उनके नष्ट होने का खतरा बना रहता है अतएव सांख्यिकीकृत पाण्डुलिपियों की एक प्रति का भण्डारण सर्वर में भी आवश्यक है। सांख्यिकीकृत पाण्डुलिपि पुस्तकालय में सांख्यिकीकृत पाण्डुलिपियों की सभी सांख्यिकीकृत छवियों के भण्डारण के लिए 100 टी बी (जिन्हें भविष्य में अद्यतन करके 600 टी बी किया जा सकता है) के आँकड़े सर्वर के क्रय किये जाने की आवश्यकता है जिसे विद्वानों द्वारा शोध कार्य हेतु पाण्डुलिपि डाटाबेस से जोड़ दिया जाएगा।

रा.पा.मि. इस ज्ञान आधार को सुलभ करने के लिए नयी दिल्ली में प्रारम्भ में 10 लोगों द्वारा उपयोग किये जाने की सुविधा वाले सांख्यिकीकृत पुस्तकालय की स्थापना की योजना बना रहा है जिसे बाद में एक सौ लोगों के उपयोग करने की क्षमता वाले पुस्तकालय के रूप में अद्यतन किया जा सके। प्रयोक्ता पी सी के माध्यम से आँकड़ा केन्द्र से आँकड़ा प्राप्त कर सकेगा। भण्डारण

सर्वर में प्रत्येक दिन नये आँकड़े जोड़े जाने की सम्भावना है। आँकड़ा भण्डारण, अतिरेक से बचने, संयोग समय तथा उपलब्धता के मामले में अंतर्राष्ट्रीय मानक के अनुरूप व्यवस्था का यत्न किया जायेगा।

ऐसा सम्भावना है कि इस पुस्तकालय की स्थापना के साथ ही तुरंत इसमें पूरी क्षमता न उपलब्ध हो, शुरू में सीमित संख्या में प्रयोक्ता इसका इस्तेमाल कर पाएँ और इसकी भण्डारण क्षमता भी सीमित हो। हालांकि कि ऐसा प्रावधान हो कि भविष्य में 600 टी बी का भण्डारण हो सके और 100 प्रयोक्ता इसका एक साथ उपयोग कर सकें।

2. **नये कैटेलोगस कैटेलगोरम का सांख्यिकीकरण**

मिशन ने नये कैटेलोगस कैटेलगोरम के वर्तमान में उपलब्ध खण्डों में उपलब्ध आँकड़ों के परिरक्षण हेतु इनका सांख्यिकीकरण कर दिया है। वर्तमान में हमने 200 पुस्तकों में यह काम पूरा कर दिया है और अन्य पर कार्य जारी है।

3. **पाण्डुलिपियों के सांख्यिकीकरण के इस कार्य को ''भारत की राष्ट्रीय निधि'' कहा जायेगा।**

मिशन की विशेषज्ञ समिति द्वारा चुनी गयी अपनी तरह की 45 पाण्डुलिपियों पर मिशन ने ''भारत की राष्ट्रीय निधि'' के रूप में कार्य प्रारम्भ किया है।

4. **सांख्यिकीकरण से माइक्रोफिल्म निर्माण तकः**

मिशन ने महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियों की 1.05 करोड़ सांख्यिकीकृत छवियों का संग्रह किया है और आगे की यह कार्य जारी है। वर्तमान में इन छवियों को डी.वी.डी. में रखा गया है लेकिन दीर्घकाल तक इनके भण्डारण के लिए इनका माइक्रोफिल्म बनाना आवश्यक है। दीर्घकाल तक आँकड़ों की सुरक्षा के लिए यह लाभकारी होगा (ये आँकड़े 500 से अधिक वर्षों तक सुरिक्षित रह सकते हैं)। भौतिक क्षति से आँकड़ों को बचाना उपयोगी होता है। माइक्रोफिल्म का निर्माण सांख्यिकीकृत आँकड़ों के अभिलेखागारीय महत्त्व और भावी पिढ़ियों द्वारा उपयोग की दृष्टि से लाभदायी होगा।

रा.पा.मि. का लक्ष्य है कि सांख्यिकीकृत आँकड़ों का एक ऐसा अभिलेखागार तैयार किया जाये जिससे प्रयोक्ताओं को सदियों तक पाण्डुलिपियों से अपेक्षित सूचनाएं प्राप्त हो सकें। वर्तमान में माइक्रोफिल्म ही विश्व में सर्वाधिक लम्बी अवधि तक आँकड़ों के अभिलेखागारीय भण्डारण का सबसे उपयुक्त साधन है।

सांख्यिकीकरण की भावी योजना

1. मार्च 2017 तक विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 4 लाख पाण्डुलिपियों के सांख्यिकीकरण का लक्ष्य रखा गया है
2. सांख्यिकीकृत पाण्डुलिपि आँकड़ों की प्रति को सर्वर में रखने की आवश्यकता है। सांख्यिकीकृत पाण्डुलिपियों के भण्डारण के लिए 600 टी बी के सर्वर की खरीद की जाने की योजना है
3. सांख्यिकीकृत पाण्डुलिपि पुस्तकालय के निर्माण का कार्य विचाराधीन है और विद्वानों द्वारा शोध कार्य हेतु इस पुस्तकालय को पाण्डुलिपि डाटाबेस से जोड़ दिया जायेगा।

जन सम्पर्क कार्यक्रम

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन ने पाण्डुलिपियों, उनके संरक्षण और प्रलेखन की सुविधा उपलब्ध कराने हेतु एवं सजगता फैलाने के लिए संगोष्ठी, व्याख्यान, विज्ञापन, समाचार पुस्तिका प्रकाशन और रिपोर्ट छापने जैसे कई कार्यक्रमों को प्रारम्भ किया है। सम्पर्क कार्यक्रम के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

- पाण्डुलिपि के सम्बन्ध में परिचर्चा, वाद-विवाद और आलोचना के लिए मंच उपलब्ध करवाना
- भारत की पाण्डुलिपि विरासत के प्रति लोगों में जागरूकता और समझ बढ़ाना
- आम आदमी में पाण्डुलिपि के प्रति रुचि, जागरूकता और ज्ञान उत्पन्न करना

सन् 2011-2012 में आयोजित संगोष्ठियाँ

तिथि	विषय	स्थान
16-18 नवम्बर, 2011	'वास्तुशिल्प से सम्बन्धित पाण्डुलिपि' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	ओ. आर. आई., केरल विश्वविद्यालय, तिरुवानन्तपुरम, केरल
28-30 नवम्बर, 2011	'अल्प विदित व्याकरणिक पाण्डुलिपियाँ, वैयाकरण और सिद्धांत' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	सी ए एस एस, पुणे विश्वविद्यालय, पुणे, महाराष्ट्र
14-15 दिसम्बर, 2011	'गढ़वाल में उपलब्ध पाण्डुलिपि' के सम्बन्ध में राष्ट्रीय संगोष्ठी	संस्कृत विभाग, एच एन बी गढ़वाल विश्वविद्यालय, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड
15-19 दिसम्बर, 2011	'पाण्डुलिपियों में व्यक्त (पूइया) मणिपुर की पहचान' पर संगोष्ठी	मोरे व्यापार केन्द्र, मोरे, मणिपुर
19-21 दिसम्बर, 2011	'अरबी-फारसी पाण्डुलिपियों में व्यक्त मध्यकालीन दक्कन का इतिहास' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	आन्ध्र प्रदेश राज्य अभिलेखागार, हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश
27-30 दिसम्बर, 2011	'अद्वैत वेदांत एवं न्याय' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	पाण्डुलिपि पुस्तकालय, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता
19-21 जनवरी, 2012	'पाण्डुलिपियों में व्यक्त मध्यकालीन त्रिपुरा का इतिहास' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	इतिहास विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय, त्रिपुरा
31 जनवरी - 3 फरवरी, 2012	''मौखक एवं लिखित स्वरूप : भारत की साहित्यिक परम्परा'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	वीणा फाउंडेशन, चेन्नई
2-4 फरवरी, 2012	''खगोलशास्त्रीय पाण्डुलिपि विरासत'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	ओ आर आई, श्रीवेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति, आन्ध्र प्रदेश
10-12 फरवरी, 2012	''सिद्ध पाण्डुलिपि'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	राज्य संग्रहालय, एगमोर, चेन्नई
16-19 फरवरी, 2012	''प्राकृत पाण्डुलिपियों'' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी	एल डी भारतविद्या संस्थान, अहमदाबाद, गुजरात
1-3 फरवरी, 2012	''सांस्कृतिक सातत्य पर उपनिवेशवादी टिप्पणी : पाण्डुलिपि शास्त्र पर उदीयमान अध्ययन'' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी	सी एस ई एल एम एफ, बांगला विभाग, असम विश्वविद्यालय, सिल्चर, असम
12-14 मार्च, 2012	''वेदलक्षण ग्रन्थ : खोज और विश्लेषण'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता

सन् 2011-2012 के दौरान आयोजित सार्वजनिक व्याख्यान

दिनांक	सहयोगी संस्था एवं आयोजन स्थल	विषय	वक्ता	अध्यक्ष
8 अगस्त, 2011	संस्कृत विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय, असम, स्थान : संगोष्ठी कक्ष, गौहाटी विश्वविद्यालय	आनंदराम बरूआ की कृतियों का पुनर्मूल्यांकन	प्रो. अशोक कुमार गोस्वामी, पूर्व विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग गौहाटी विश्वविद्यालय	प्रो. मोहम्मद तहर, पूर्व अध्यक्ष, भूगोल विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय, असम
28 अगस्त, 2011	संस्कृत, पाली एवं प्राकृत विभाग, विश्वभारती विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल, स्थान : लिपिका सभागार, विश्वभारती विश्वविद्यालय	विश्वभारती विश्वविद्यालय के क्षितीन्द्रनाथ ठाकुर केन्द्र में सुरक्षित पाण्डुलिपियाँ	प्रो. करुणासिंधु दास, कुलपति, रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता	प्रो. अरुणकुमार मंडल, संस्कृत, पाली एवं प्राकृत विभाग, विश्वभारती विश्वविद्यालय,
9 नवम्बर, 2011	रा.पा.मि., नयी दिल्ली, स्थान : गांधी दर्शन, राजघाट, नयी दिल्ली	संस्कृत परम्परा में ज्ञान की अभिव्यक्ति: पाठ, स्वरूप और प्रवृत्ति	प्रो. आर. एन. शर्मा, हिन्द-प्रशांत भाषा-साहित्य विभाग, हवाई विश्वविद्यालय, अमरीका	प्रो. आर आई नानावती, पूर्व निदेशक, प्राच्य शोध संस्थान, एम एस विश्वविद्यालय बड़ौदा
18 नवम्बर, 2011	विरासत अध्ययन केन्द्र, हिल पैलेस, त्रिपुनिथुरा, केरल स्थान : दारूल हुदा इस्लामी विश्वविद्यालय, चेम्मद, केरल	16 वीं से 19 वीं सदी के सन्दर्भ में अरबी पाण्डुलिपियों और अरबी मलयाली साहित्य में उपनिवेशवाद विरोधी पक्ष	प्रो. एन ए एम खादेर, अरबी विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय, केरल	डॉ. बहॉद्दीन नेवाडी, कुलपति, दारूल हुदा इस्लामी विश्वविद्यालय,
9 दिसम्बर, 2011	हिमाचल कला संस्कृति एवं भाषा अकादमी, शिमला, हिमाचल प्रदेश स्थान: चम्बा (जिला मुख्यालय)	आयुर्वेद और पाण्डुलिपियाँ	श्री श्याम सिंह राजपुरोहित (रा.प्र.से.), निदेशक, राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान, जोधपुर, राजस्थान	प्रो. गोकुलचन्द्र शर्मा व्याकरण, दर्शन एवं आयुर्वेदाचार्य, घषाहट्टी, शिमला
24 दिसम्बर, 2011	एल डी भारतविद्या संथान, अहमदाबाद, गुजरात	नष्ट पाठ और वर्तमान सन्दर्भ: काश्मीर के भासर्वज्ञ की रचना: नित्यज्ञानविनिश्चय के सन्दर्भ में	डॉ. सुरेन्द्र मोहन मिश्र, संस्कृत, पाली एवं प्राकृत विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरियाणा	प्रो. एम ए ढाकी अहमदाबाद
13 जनवरी, 2012	बांगला विभाग, असम विश्वविद्यालय सिल्चर, असम	रवीन्द्रनाथ टैगोर की पाण्डुलिपियाँ	प्रो. विश्वनाथ राय, बांगला विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता	प्रो. तपधीर भट्टाचार्य, कुलपति, असम विश्वविद्यालय सिल्चर
21 जनवरी, 2012	केलाडि संग्रहालय एवं इतिहास शोध संस्थान, केलाडि, जिला-शिमोगा, कर्नाटक स्थान - ब्रूसम, जिला - शिमोगा, कर्नाटक	केलाडि बासवराज का शिवतत्त्वरत्नाकर	प्रो. एस. आर. लीला, संस्कृत विदुषी एवं एम. एल. सी. कर्नाटक	प्रो. बारी, कुलपति, कर्नाटक विश्वविद्यालय, शिमोगा, कर्नाटक

दिनांक	सहयोगी संस्था एवं आयोजन स्थल	विषय	वक्ता	अध्यक्ष
9 फरवरी, 2012	रा.पा.मि., नयी दिल्ली स्थान : रा.पा.मि. कक्ष, 11 मानसिंह रोड, नयी दिल्ली	मिजो भाषा और साहित्य	प्रो. लालटीउंगलियान ख्यांगते, आचार्य भाषा एवं साहित्य, मिजो विभाग, मिजोरम विश्वविद्यालय, आईजोल	श्री जोरामसंगलियान, माननीय मंत्री, परिवहन, कला, संस्कृति, छपाई, लेखा सामग्री, मिजोरम सरकार
9 फरवरी, 2012	रा.पा.मि., नयी दिल्ली स्थान : रा.पा.मि. कक्ष, 11 मानसिंह रोड, नयी दिल्ली	मिजो पाण्डुलिपियों के परिरक्षण में जनजातीय लेखकों की भूमिका (रेव. लियानखाइया की 125 वीं जयन्ती पर)	श्री जोरामदीन थारा, सहायक प्रो., पु कॉलेज, आइजोल	श्री आर.एम. नवानी, आई.एफ.ए., रा.पा.मि., नयी दिल्ली
10 फरवरी, 2012	सिंधिया प्राच्य शोध संस्थान, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, मध्यप्रदेश, स्थान : स्वर्ण जयंती सभागार, विक्रम विश्वविद्यालय	सांख्य दर्शन की तत्त्वमीमांसा	प्रो. प्यारीमोहन पटनायक, आचार्य सर्वदर्शन, श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी	प्रो. टी.आर. पाठक, कुलपति, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
27 फरवरी, 2012	रा.पा.मि., नयी दिल्ली स्थान : रा.पा.मि. कक्ष, 11 मानसिंह रोड, नयी दिल्ली	नाट्यशास्त्र की पाण्डुलिपियाँ और पाठ अध्ययन	प्रो. आर. वी. त्रिपाठी, कुलपति, रा. संस्कृत संस्थान (विश्वविद्यालयवत) नयी दिल्ली	डॉ. कपिला वात्सायायन, अध्यक्ष, आई.आई.सी., पूर्व एशिया परियोजना, नयी दिल्ली
29 फरवरी, 2012	पुराण इतिहास विभाग, सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय, बनारस, उ. प्र., स्थान : सच्चा अध्यात्म महाविद्यालय, इलाहाबाद, उ.प्र.	कालनिर्णय विमर्श	प्रो. किशोरचन्द्र महापात्र, अध्यक्ष, धर्मशास्त्र विभाग, श्रीजगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी	प्रो. चन्द्रदेव मिश्र, प्राचार्य, सच्चा अध्यात्म महाविद्यालय, इलाहाबाद, उ.प्र.
3 मार्च, 2012	संस्कृत, पाली एवं प्राकृत विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, पंचपेढ़ी, जबलपुर, म.प्र.	पाण्डुलिपियों का योगक्षेम	डॉ. बालकृष्ण शर्मा, सिंधिया प्राच्य शोध संस्थान, उज्जैन	प्रो. रामराजेश मिश्र, कुलपति, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय
18 मार्च, 2012	उर्दू विभाग, सिबली नेशनल पी जी कॉलेज, आजमगढ़, उ.प्र.	सैयद आंदोलन का प्रभाव	डॉ. अबू सूफियान इस्लाही, अरबी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, उ.प्र.	डॉ. मुज्जफर एहसान इस्लाही, पूर्व सचिव, छात्र संघ, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, उ.प्र.
21 मार्च, 2012	ए पी जी ओ एम एल, उस्मानिया विश्वविद्यालय परिसर, हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश	अभिनव भारती के साथ नाट्यशास्त्र का रसाध्याय	प्रो. रामचनद्रूडु, पूर्व विभागाध्यक्ष, संस्कृत, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद	डॉ. के. अरविन्द राव, पूर्व पुलिस महानिदेशक, आन्ध्र प्रदेश

पाण्डुलिपि शास्त्र

भारत की पाण्डुलिपि विरासत अपनी भाषायी और ग्रन्थीय विविधता की दृष्टि से अनुपम है। हालांकि समकालीन अनुसन्धान में लिपि विशेषज्ञों की कमी ने पाण्डुलिपि विरासत के अध्ययन और समझ के लिए गम्भीर संकट उत्पन्न कर दिया है। इस समस्या के निदान के लिए रा.पा.मि. ने भारतीय पाठ और पाण्डुलिपि के अध्ययन में छात्रों और अनुसन्धानकर्मियों को प्रशिक्षित करने हेतु एक विस्तृत कार्यक्रम तैयार किया है। कार्यशालाओं, विश्वविद्यालयों के पाठ्क्रमों में पाण्डुलिपि शास्त्र की शुरूआत करने तथा उच्च अध्ययन में पाण्डुलिपि शास्त्र के लिए छात्रवृत्ति देने के माध्यम से रा.पा.मि. प्रत्यक्ष तौर पर पाण्डुलिपि अध्ययन में प्रशिक्षित लोगों का दल बनाने का प्रयास कर रहा है।

सन् 2011- 2012 में पाण्डुलिपि शास्त्र पर आयोजित कार्यशाला

दिनांक	कार्यशाला के नाम	सहयोगी संस्थान	प्रशिक्षण का विवरण
17-21 जुलाई, 2011	पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरातत्त्वलेखन पर आधारभूत कार्यशाला	ओडिसा राज्य संग्रहालय, भुवनेश्वर, ओडीशा	लिपि ज्ञान कराया गया: ब्राह्मी, उडिया, शारदा, नेवारी
13-17 सितम्बर, 2011	पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरातत्त्वलेखन पर आधारभूत कार्यशाला	पाण्डुलिपि शास्त्र विभाग, कन्नड विश्वविद्यालय, हम्पी, कर्नाटक	लिपि ज्ञान कराया गया : कन्नड, मोडी, तिगलारी और अमरगन्नडा
1-21 नवम्बर, 2011	पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरातत्त्वलेखन पर आधारभूत कार्यशाला	अखिल भारतीय संस्कृत परिषद, लखनऊ, उत्तर प्रदेश	लिपि ज्ञान कराया गया: शारदा, नेवारी, ब्राह्मी
10-30 नवम्बर, 2011	फारसी, अरबी और उर्दू में पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरातत्त्वलेखन पर आधारभूत कार्यशाला	उर्दू विभाग, मुम्बई विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र	लिपि ज्ञान कराया गया: कुफिक, नस्ख, सुल्स, नस्तालिक, शिकस्ता
12 अक्टूबर- 13 नवम्बर, 2011	फारसी, अरबी और उर्दू में पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरातत्त्वलेखन पर उच्च स्तरीय कार्यशाला	अरबी विभाग, कालिकट विश्वविद्यालय एवं विरासत अध्ययन केन्द्र, संस्कृति विभाग, केरल सरकार	लिपि ज्ञान कराया गया : नुफखी, सुलुसी, कुफिक, दिवानी, रैनानी, रूक़ी, सुनामी, एवं मलयालम
7-21 दिसम्बर, 2011	पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरातत्त्वलेखन पर आधारभूत कार्यशाला	प्राच्य शोध संस्थान, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति, आन्ध्र प्रदेश	लिपि ज्ञान कराया गया : ग्रन्थ, नंदीनागरी, कन्नड, तेलुगू, मलयालम एवं तमिल
29 नवम्बर, 2011- 01 जनवरी, 2012	पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरातत्त्वलेखन पर उच्च स्तरीय कार्यशाला	श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, गुजरात	लिपि ज्ञान कराया गया: शारदा, नेवारी, ब्राह्मी, नागरी, ग्रन्थ और मलयालम
21-30 जनवरी, 2012	पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरातत्त्वलेखन पर आधारभूत कार्यशाला और चकमा पाण्डुलिपि पर प्रदर्शनी (प्रदर्शनी के दौरान 350 पाण्डुलिपियों का प्रदर्शन किया गया।	कमलानगर कॉलेज, कमलानगर, मिजोरम	लिपि ज्ञान कराया गया: ब्राह्मी, बर्मी, चकमा और पुरानी बांगला (गौड़ीय)

दिनांक	कार्यशाला के नाम	सहयोगी संस्थान	प्रशिक्षण का विवरण
27 जनवरी – 05 फरवरी, 2012	पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरातत्त्वलेखन पर आधारभूत कार्यशाला	प्राच्य शोध संस्थान, जोधपुर, राजस्थान	लिपि ज्ञान कराया गया: शारदा, नेवारी, ब्राह्मी
01 फरवरी – 16 मार्च, 2012	पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरातत्त्वलेखन पर उच्च स्तरीय कार्यशाला	आन्ध्र प्रदेश राज्य प्राच्य पाण्डुलिपि पुस्तकालय, हैदराबाद	लिपि ज्ञान कराया गया: शारदा, ग्रन्थ, तेलुगू, ब्राह्मी
1–22 मार्च, 2012	पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरातत्त्वलेखन पर आधारभूत कार्यशाला	उर्दू विभाग, जम्मू-कश्मीर विश्वविद्यालय, जम्मू-कश्मीर	लिपि ज्ञान कराया गया: कुफिक, नस्ख, सुल्स, नस्तालिक, शिकस्ता
1–21 मार्च, 2012	पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरातत्त्वलेखन पर आधारभूत कार्यशाला	प्राच्य शोध संस्थान, केरल विश्वविद्यालय, तिरुवनन्तपुरम, केरल	लिपि ज्ञान कराया गया: ब्राह्मी, ग्रन्थ, वत्तेझूत्थू और तमिल
24 मार्च – 09 अप्रैल, 2012	पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरातत्त्वलेखन पर आधारभूत कार्यशाला	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश	लिपि ज्ञान कराया गया: शारदा, नेवारी, ब्राह्मी

अखिल भारतीय संस्कृत परिषद्, लखनऊ में आयोजित पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरातत्त्वलेखन पर आधारभूत कार्यशाला (1 से 21 नवम्बर 2011) में उपस्थित प्रतिभागी

प्रकाशन

अप्रकाशित पाण्डुलिपियों, पाण्डुलिपियों के विवेचनात्मक संस्करणों, संगोष्ठी आलेखों और व्याख्यानों आदि के प्रकाशन पर रा.पा.मि. के कार्यक्रमों में विशेष जोर दिया जाता है। रा.पा.मि. ने प्रारम्भिक रूप में अन्य प्रकाशनों के साथ चार प्रकाशनों की शृंखला प्रारम्भ की है – *तत्त्वबोध* (व्याख्यान आलेख), *कृतिबोध* (विवेचनात्मक संस्करण), *समीक्षिका* (संगोष्ठी आलेख) और *संरक्षिका* (संरक्षण सम्बन्धी संगोष्ठी आलेख)। इसके साथ ही अन्य प्रकाशन भी उपलब्ध हैं। अभी तक रा.पा.मि. ने तत्त्वबोध के अंतर्गत तीन पुस्तकों का, कृतिबोध के अंतर्गत दो पुस्तकों का, *समीक्षिका* के अन्तर्गत तीन और *संरक्षिका* के तहत दो पुस्तकों का प्रकाशन किया है। *तत्त्वबोध*–IV, *समीक्षिका*–III और *प्रकाशिका*–I का सम्पादन कार्य हो रहा है।

तत्त्वबोध खण्ड – I, II एवं III

तत्त्वबोध मासिक व्याख्यान की शुरुआत राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन ने जनवरी 2005 में की थी। अब यह बौद्धिक बहस और परिचर्चा के एक मंच के रूप में उभर गया है। भारत में ज्ञान के विभिन्न क्षेत्र में साधनारत विभिन्न विद्वानों ने दिल्ली तथा देश भर के अन्य केंद्रों में सभाओं को संबोधित किया है तथा श्रोताओं के साथ परिचर्चा की है। मिशन ने इन व्याख्यानों का प्रकाशन तत्त्वबोध नाम से किया है। अभी तक तत्त्वबोध के तीन खंडों का प्रकाशन किया जा चुका है।

संरक्षिका खण्ड – I एवं II

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन अपने संपर्क कार्यक्रम के अंतर्गत राष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठीयों का आयोजन करता है। इन संगोष्ठीयों में प्रस्तुत आलेखों को संरक्षिका (संरक्षण से जुड़े) और समीक्षिका (अनुसंधान उन्मुखी) शीर्षक से प्रकाशित किया जाता है।

संरक्षिका का प्रथम खंड 'पाण्डुलिपि परिरक्षण की देशी विधि' का प्रकाशन सितम्बर 2006 में किया गया। इसमें फरवरी 2005 में राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन के नयी दिल्ली मुख्यालय में आयोजित संगोष्ठी 'परिरक्षण की देशी विधि और पाण्डुलिपि संरक्षण' की कार्यवाही शामिल है। इस संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेखों में पाण्डुलिपि संरक्षण की देशी विधि और तकनीकी के साथ-साथ उन्हें पुनर्जीवित करने की आवश्यकता पर बल दिया गया है क्योंकि यह पाण्डुलिपियों के लिए अधिक लाभकारी हैं। संरक्षिका खंड-II 'पाण्डुलिपि और उनके संरक्षण के लिए दुर्लभ सहायक सामग्री' का प्रकाशन सन् 2010 में किया गया।

समीक्षिका खण्ड – I, II, III, IV एवं V

समीक्षिका-I में '**भारत में बौद्ध साहित्य की विरासत** : पाठ और सन्दर्भ' विषय पर आयोजित संगोष्ठी की कार्यवाही है। इसका आयोजन जुलाई 2005 में कलकत्ता विश्वविद्यालय पाण्डुलिपि संसाधन केंद्र, कोलकाता में किया गया था।

समीक्षिका-II में राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन द्वारा फरवरी 2007 में महाभारत पर आयोजित संगोष्ठी के आलेखों का प्रकाशन किया गया है। यह खंड 'महाभारत के पाठ और उनमें अंतर : सन्दर्भ, क्षेत्रीय और मंचीय परम्परा' के ऊपर है।

कृतिबोध खण्ड – I एवं II

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन ने कृतिबोध शीर्षक के अंतर्गत अप्रकाशित और दुर्लभ के समीक्षात्मक संस्करण प्रकाशित करने की पहल की है।

कृतिबोध शृंखला में पहला खंड है नारायण मिश्र का वाधूल गृहागमवृत्तिरहस्यम। इसका संपादन प्रो. बृज बिहारी चौबे ने किया। यह ग्रन्थ वाधूल गृहसूत्रवृत्ति पर एक काव्यात्मक भाष्य है और जो कि स्वयं वाधूलगृहसूत्र पर एक संक्षिप्त भाष्य है। इस ग्रन्थ में पारिवारिक कर्मकांड और संस्कार विशेषकर गृह और स्मार्त कर्म से सम्बन्धित सूचनाओं का भंडार है। इसमें कथा अरण्यक, वधूलागम और व्रत संग्रह जैसे ग्रन्थों का उल्लेख है जो अभी तक अज्ञात थे। इस शृंखला में एक अन्य ग्रन्थ **कृतिबोध खंड**–II, आचार्य शिवश्रोण कृत वाधूला श्रौत प्रयोगक्लिप्ति का प्रकाशन किया जा चुका है।

प्रकाशिका खण्ड – I, II, III एवं IV

सन् 2011 में रा.पा.मि. ने प्रकाशिका नाम से एक नयी शृंखला की शुरूआत की। इसके तहत दुर्लभ अप्रकाशित पाण्डुलिपियों का प्रकाशन किया जाता है। इस प्रकाशिका शृंखला के तीन खंडों का प्रकाशन अभी तक किया जा चुका है।

कैटालॉग

पावन शब्द और शब्द की पावनता, विज्ञाननिधि और शबद गुरु: मिशन सम्पूर्ण देश में न केवल पाण्डुलिपि संग्रहों के प्रलेखन को बढ़ावा देता है बल्कि इन्हें प्रकाशित करने की योजना भी बनाता है। मिशन के साथ जुड़े सभी पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों के सम्पूर्ण संग्रहों की विवरणात्मक सूचियों के प्रकाशन का कार्यक्रम भी मिशन के पास है।

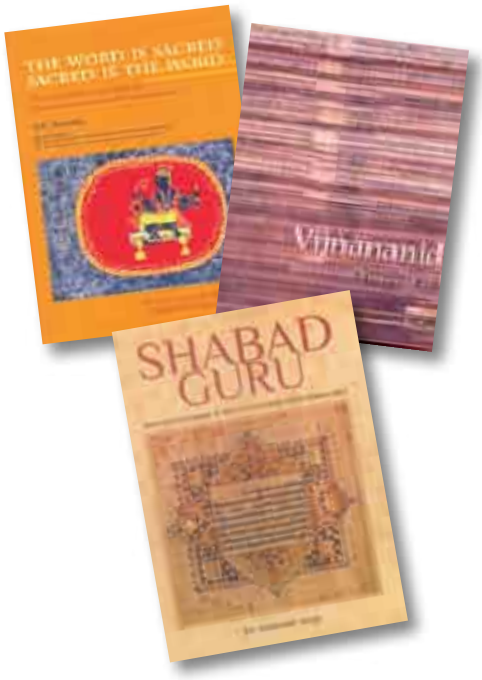

मिशन ने फ्रैंकफर्ट पुस्तक मेला में भारतीय पाण्डुलिपियों की प्रदर्शनी सूची प्रकाशित की थी। इन सूचियों में भारतीय पाण्डुलिपियों के कई पहलुओं को स्पर्श किया गया है। यह छः भागों में विभाजित है : मिट्टी से लेकर ताम्र तक जो पाठ अंकित होने वाली विभिन्न आधार सामग्रियों की सूचना देते हैं। 'पाण्डुलिपि का निर्माण' भाग में शलाका और दवात के सम्बन्ध में सूचना हैं। 'अध्ययन के क्षेत्र' भाग के अंतर्गत पाण्डुलिपि से सम्बन्धित विभिन्न क्षेत्रों के सम्बन्ध में सूचनाएँ है। 'अर्चना, समर्पण और पूजा' भाग के अन्तर्गत पावन शब्दों के महत्त्व को दिखाया गया है। पाँचवें भाग में 'शब्द और छवि' के अन्तर्गत देश की चित्रित पाण्डुलिपियों की छवि पर प्रकाश डाला गया है। अन्तिम भाग 'राजकीय आदेश और सरल रेकार्ड' उस तथ्य की ओर संकेत देते हैं कि पाण्डुलिपियाँ राजा से लेकर आम जन के जीवन के अभिन्न अंग थे।

विज्ञाननिधि : भारत की पाण्डुलिपि निधि मिशन द्वारा तैयार चुनिंदा पाण्डुलिपियों के संग्रह को 'विज्ञाननिधि : भारत की पाण्डुलिपि निधि' नाम से घोषित किया गया है। इसे फरवरी 2007 में आयोजित एक समारोह में तत्कालीन पर्यटन और संस्कृति मंत्री श्रीमती अम्बिका सोनी ने जारी किया था। राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन ने पंजाब अध्ययन राष्ट्रीय संस्थान, नयी दिल्ली के साथ मिलकर दुर्लभ गुरु ग्रन्थ साहिब पाण्डुलिपियों की चित्रित सूची को शबद गुरु के नाम से प्रकाशित किया है।

मिशन निर्देशिका

प्रो. दीप्ति एस. त्रिपाठी
निदेशक

श्री आर. एम. नवानी
आंतरिक वित्तीय परामर्शक

श्री एस. पी. स्वामी
व. लेखा अधिकारी एवं संयोजक (एम.आर.सी. तथा एम.सी.सी.)

प्रलेखन

डॉ. गणेश प्रसाद पाण्डा
संयोजक

प्रलेखन सहायक
डॉ. प्रभात कुमार दास
श्री शिव प्रसाद त्रिपाठी
डॉ. अवध किशोर चौधरी
श्री अब्दुर राज़ीक़
श्री राम अवतार शर्मा
श्री लक्ष्मीधर पाणिग्रही
सुश्री प्रमिता मिश्रा
डॉ. श्रीधर बारीक

सूचीकार
श्रीमती लता उत्तम गोगना
श्रीमती ममता लेखवार
श्रीमती शीजा जीजी
श्रीमती दीप्ति नेगी
श्रीमती लक्ष्मी नेगी
श्री मुकेश जनोत्रा
श्री दीपक कोच्चर

सर्वेक्षण

डॉ. दिलीप कुमार कर
संयोजक

परवर्ती सर्वेक्षण

डॉ. एन.सी.कर
संयोजक

संरक्षण

डॉ. कीर्ति श्रीवास्तव
संयोजक

श्री पूरन चन्द्र
संरक्षक

सुश्री अल्बीना
सहायक संरक्षक

सुश्री अर्चना गहलोत
तकनीकी सहायक

श्री मिथिलेश कुमार सिंह
तकनीकी सहायक

अनुसन्धान एवं प्रकाशन

डॉ. संघमित्रा बसु
संयोजक

मृण्मय चक्रवर्ती
संपादक, कृति रक्षण

सांख्यिकीकरण

विश्वरंजन मल्लिक
संयोजक

श्री प्रणय कुमार मिश्रा
प्रोग्रामर

श्री मोहम्मद मंसूर अख्तर
प्रोग्रामर

श्रीमती शर्मिष्ठा सेन मल्लिक
सहायक प्रोग्रामर

लेखा और कार्यालय सहायक

सुश्री स्नेहलता
लेखा सहायक

श्रीमती दीपा चोपड़ा
निजी सहायक

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी

श्रीमती कमला रावत
श्री मोहित कुमार करोतिया
श्रीमती सुशीला देवी

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन प्रशासनिक समिति

राष्ट्रीय अधिकारप्राप्त समिति

अध्यक्ष

संस्कृति मन्त्री, संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार

पदेन सदस्य

1. सचिव, संस्कृति मन्त्रालय
2. सदस्य सचिव, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नयी दिल्ली
3. संयुक्त सचिव, संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार
4. महानिदेशक, भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार, नयी दिल्ली
5. निदेशक, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नयी दिल्ली– सदस्य सचिव

मनोनीत सदस्य

आठ सदस्यों का चयन प्रक्रियाधीन

कार्यकारी समिति

अध्यक्ष

सचिव, संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार

पदेन सदस्य

1. सदस्य सचिव, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नयी दिल्ली
2. संयुक्त सचिव, संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार
3. निदेशक, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन – सदस्य सचिव

मनोनीत सदस्य

तीन सदस्यों का चयन प्रक्रियाधीन

वित्त समिति

अध्यक्ष

वित्तीय सलाहकार, संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार

सदस्य

1. सदस्य सचिव, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नयी दिल्ली
2. संयुक्त सचिव, संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार
3. निदेशक, वित्त, संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार
4. निदेशक, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन – सदस्य सचिव

परियोजना अनुवीक्षण समिति

अध्यक्ष

संयुक्त सचिव, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नयी दिल्ली

पदेन सदस्य

1. निदेशक, संस्कृति मन्त्रालय
2. निदेशक, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन – सदस्य सचिव

मनोनीत सदस्य

1. प्रो. अशोक कुमार कालिया, निदेशक, अखिल भारतीय संस्कृत परिषद, लखनऊ
2. प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, कुलपति, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नयी दिल्ली
3. डॉ. जीतेन्द्र शाह – निदेशक, लालभाई दलपतभाई भारतविद्या संस्थान, अहमदाबाद
4. डॉ. इम्तियाज़ अहमद, निदेशक, खुदा बख्श पुस्तकालय, पटना
5. डॉ. वेन्कटरमण रेड्डी, निदेशक, प्राच्य शोध संस्थान, श्रीवेंकटेश्वर विश्वविद्यालय तिरुपति
6. प्रो. सत्यदेव पोद्दार – विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय, त्रिपुरा

पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र (एम. आर. सी.)

पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों का विस्तार और सशक्तीकरण

सर्वेक्षण, प्रलेखन, सूचीकरण और लोगों में जागृति पैदा करने हेतु व्यापक नेटवर्क निर्माण करने तथा पाण्डुलिपि के रक्षकों और इस कार्य में संलग्न लोगों को सहायता पहुँचाने के लिए राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन ने सम्पूर्ण देश में विश्वविद्यालयों, प्रख्यात शोध संस्थानों और पाण्डुलिपि कार्य में संलग्न स्थापित ग़ैर सरकारी संगठनों में पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र स्थापित किए हैं।

पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों का संगठन

- प्रत्येक एम. आर. सी. के पास सूचीकरण, सम्पादन और लिपियों के अर्थ निकालने में विभिन्न स्तरों के विशेज्ञता प्राप्त प्रशिक्षित कार्मिकों का एक दल होता है।
- प्रत्येक एम. आर. सी. के प्रशासन और संयोजन का कार्य संस्थान के वर्तमान कर्मचारी में से किसी परियोजना संयोजक द्वारा किया जाता है।
- क्षेत्र सर्वेक्षण के माध्यम से आँकड़ों की आपूर्ति करने तथा पाण्डुलिपियों के प्रलेखन के लिए एम. आर. सी. के पास दो तरह के कर्मचारी होते हैं - क्षेत्र में सर्वेक्षण के कार्य में लगे विद्वान और मानुस ग्रन्थावली सॉफ्टवेयर में आँकड़ों की प्रविष्टि करने के लिए कम्प्यूटर प्रविष्टि कार्मिक।
- प्रत्येक एम. आर. सी. में दो कम्प्यूटर, एक प्रिंटर, इंटरनेट सुविधा, निर्धारित मानुष ग्रन्थावली सॉफ्टवेयर होते हैं जिसमें पाण्डुलिपि आँकड़े की प्रविष्टि की जाती है।
- पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरातत्त्व लेखन पर कार्यशाला आयोजन करके पाण्डुलिपि के पाठ के अर्थ निकालने और उनके संपादन के लिए संसाधन कार्मिक तैयार किये जाते हैं।
- प्रत्येक एम. आर. सी. को उसकी क्षमता और संतोषजनक कार्य निष्पादन के अनुरूप राशि आबंटित की जाती है।

एम. आर. सी. की गतिविधि

- एम.आर.सी. सर्वेक्षण और प्रलेखन के लिए पाण्डुलिपि शास्त्र में प्रशिक्षित अध्येताओं और छात्रों को अपने कार्य में शामिल करता है।
- एम.आर.सी. राज्य स्तर पर राष्ट्रीय सर्वेक्षण को पूरा करने में मदद करते हैं।
- एम.आर.सी. पाण्डुलिपियों के व्यक्तिगत तथा संस्थागत अधिपतियों से संपर्क स्थापित करता है।
- एम.आर.सी. पाण्डुलिपियों के पठन-पाठन और पाण्डुलिपि शास्त्र तथा पुरातत्व लेखन के अन्य पक्षों के लिए विद्वानों की खोज करता है।
- तत्त्वबोध व्याख्यान और राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित कर के एम.आर.सी. राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन को सहयोग करता है।

पाण्डुलिपि सहयोगी केंद्रों को सहायता

पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों के अतिरिक्त, मिशन ने पाण्डुलिपि सहयोगी केन्द्रों का एक नेटवर्क स्थापित किया है। यहां हमने प्रलेखन और उनके संग्रहों के सूचीकरण के लिए महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपि भंडारों को अपने से संबद्ध किया है। उनका कार्य मानुष ग्रन्थावली सॉफ्टवेयर के माध्यम से मौलिक सूचीकरण करना है जो कि उनके कर्मचारी आनुपातिक आधार पर स्वयं अथवा बाहर के किसी व्यक्ति या संस्था से करवाते हैं।

विदेशी संग्रहों का प्रलेखन

मिशन विदेश में स्थित पाण्डुलिपि भंडारों में संग्रहों के प्रलेखन के लिए आधार तैयार करने में सदैव संलग्न रहा है। सन् 2006 में 70 से अधिक संस्थाओं के साथ संपर्क स्थापित किया गया था। पाँच साल के अंतराल के बाद विभिन्न दक्षिण एशियाई देशों में स्थित भारतीय पाण्डुलिपियों के प्रलेखन हेतु मिशन एक परियोजना को रूप रेखा देने के लिए दक्षेस के साथ समन्वय कार्य कर रहा है। उम्मीद है कि वर्ष 2012-13 में अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्किंग और विदेश में स्थित संग्रहों के प्रलेखन के इस कार्य का राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस के विस्तार और विशेष दुर्लभ तथा महत्त्वपूर्ण भारतीय पाण्डुलिपियों के सांख्यिकीकरण की दृष्टि से ठोस परिणाम प्राप्त होगा।

रणनीति

- यूरोप, अमरीका और एशिया में भारतीय पाण्डुलिपियों के ज्ञान भंडार से संपर्क स्थापित करना।
- जिस प्रारूप में हमारे पाण्डुलिपि आँकड़े संग्रहीत किये जातें हैं उस उचित प्रारूप को भेजना।
- आँकड़े के कम्प्यूटरीकरण हेतु मानुष ग्रन्थावली सॉफ्टवेयर भेजना।
- अब तक की गैर सूचीकृत भारतीय पाण्डुलिपियों के पढ़ने और अर्थ निकालने के लिए भंडारों को उस क्षेत्र में विद्वानों का पता लगाने में मदद करना।
- जहां भारतीय पाण्डुलिपियों की सूची मौजूद हो वहां से सूची का संग्रह करना।
- विदेशों में स्थित संग्रहों में उपलब्ध भारतीय पाण्डुलिपियों का सांख्यिकीकरण करना।

पाण्डुलिपि शोध केन्द्रों की सूची

राज्य	क्र. सं.	पाण्डुलिपि शोध केन्द्रों के नाम
आन्ध्र प्रदेश	1.	**आन्ध्र प्रदेश सरकार प्राच्य पाण्डुलिपि पुस्तकालय और शोध संस्थान** जामा-ई- उस्मानिया, उस्मानिया विश्वविद्यालय परिसर, हैदराबाद - 500007 आन्ध्र प्रदेश
	2.	**प्राच्य शोध संस्थान, श्रीवेंकटेश्वर विश्वविद्यालय,** तिरुपति - 517502 आन्ध्र प्रदेश
असम	3.	**बी.सी. गुप्ता स्मृति पुस्तकालय** जी. सी. महाविद्यालय सिल्चर - 788004
	4.	**ताय अध्ययन एवं शोध संस्थान** मरानहाट जिला - सिबसागर असम
	5.	**कृष्णकान्त हेंडिक पुस्तकालय** गौहाटी विश्वविद्यालय गौहाटी - 781014 असम
बिहार	6.	**कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय** कामेश्वर नगरम् दरभंगा - 846004
	7.	**खुदा बख्श ओरएन्टल पब्लिक लाइब्रेरी** अशोक राजपथ पटना - 800004 बिहार

राज्य	क्र. सं.	पाण्डुलिपि शोध केन्द्रों के नाम
बिहार	8.	**नव नालंदा महाविहार** नालंदा - 803111 बिहार
	9.	**पटना संग्रहालय** विद्यापति मार्ग पटना बिहार
	10.	**श्री देव कुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान** देवाश्रम, महादेव रोड बिहार - 802301
छत्तीसगढ़	11.	**संस्कृति एवं पुरातत्त्वविभाग** रायपुर, छत्तीसगढ़
दिल्ली	12.	**भाई वीरसिंह साहित्य सदन** भाई वीर सिंह मार्ग गोल मार्केट नयी दिल्ली-1 दिल्ली
	13.	**बी.एल. भारतविद्या संस्थान** विजय वल्लभ स्मारक परिसर 20वां के.एम., जी.टी. कर्नाल रोड पोस्ट - अलीपुर दिल्ली - 36 दिल्ली
गुजरात	14.	**लालभाई दलपत भाई भारतविद्या संस्थान** नवरंगपुर निकट गुजरात विश्वविद्यालय अहमदाबाद - 380009 गुजरात
	15.	**श्रीद्वारकाधीश संस्कृत अकादेमी एवं भारतविद्या शोध संस्थान द्वारिका,** गुजरात
	16.	श्री सतश्रुत प्रभावन न्यास 580, जुनी मानेकवाड़ी भावनगर - 364001 गुजरात
हरियाणा	17.	**संस्कृत, पाली एवं प्राकृत विभाग** कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरूक्षेत्र - 136119
हिमाचल प्रदेश	18.	**हिमाचल कला, संस्कृति और भाषा अकादेमी,** क्लिफ एंड इस्टेट शिमला - 171001 हिमाचल प्रदेश
	19.	**तिब्बती रचना और अभिलेखागार पुस्तकालय** गंगचेन क्यिसांग घर्मशाला - 176215 हिमाचल प्रदेश

राज्य	क्र. सं.	पाण्डुलिपि शोध केन्द्रों के नाम
जम्मू-कश्मीर	20.	**केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान** चोग्लमसार लेह (लद्दाख) - 194001 जम्मू-कश्मीर
	21.	**राज्य पुरातत्त्व, अभिलेखागार और संग्रहालय निदेशालय** स्टोन बिल्डिंग पुराना सचिवालय, श्रीनगर - 190001 जम्मू-कश्मीर
कर्नाटक	22.	**पाण्डुलिपि शास्त्र विभाग** कन्नड विश्वविद्यालय, हम्पी विद्यारण्य - 583276 हॉस्पेट तालुक जिला- बेल्लारी (कर्नाटक)
	23.	**महाभारत संशोधन प्रतिष्ठानम्** 1/ ई, तृतीय क्रॉस, गिरिनगर प्रथम फेज बानशंकरी तृतीय चरण बंगलुरु - 560085 कर्नाटक
	24.	**राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं शोध संस्थान** श्रुतकेवाली शिक्षा न्यास श्रावणबेलगोला- 571335 जिला - हसन कर्नाटक
	25.	**प्राच्य शोध संस्थान** मैसूर विश्वविद्यालय कौटिल्य सर्कल मैसूर - 570005 कर्नाटक
	26.	**केलाडि संग्रहालय एवं ऐतिहासिक शोध संस्थान** पोस्ट - केलाडि सागर तालुक जिला - शिमोगा कर्नाटक
केरल	27.	**विरासत अध्ययन केन्द्र** तिरूपुनिथुरा जिला - एरनाकुलम् केरल
	28.	**प्राच्य शोध संस्थान और पाण्डुलिपि पुस्तकालय,** केरल विश्वविद्यालय, करियावत्तोम, तिरुअनन्तपुरम - 695585 केरल

राज्य	क्र. सं.	पाण्डुलिपि शोध केन्द्रों के नाम
केरल	29.	**थुंचन स्मृति न्यास** थुंचन परंबा तिरूर जिला - मामल्लापुरम् केरल
मध्यप्रदेश	30.	**डॉ. हरि सिंह गौड़ विश्वविद्यालय** गौड़ नगर सागर - 470003 मध्यप्रदेश
	31.	**कुंद कुंद ज्ञानपीठ** 584 एम. जी. रोड तुकोगंज, इन्दौर - 452001 मध्यप्रदेश
	32.	**सिंधिया प्राच्य शोध संस्थान,** विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन, मध्य प्रदेश
महाराष्ट्र	33.	**आनंदा श्रम संस्था** 22 बुधवार पथ पुणे - 411002
	34.	**बी.बी. खारडेकर पुस्तकालय** शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर महाराष्ट्र
	35.	**भण्डारकर प्राच्य शोध संस्थान** दक्कन जिमखाना पुणे - 411047 महाराष्ट्र
	36.	**कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय** भागला भवन शीतलवाड़ी मांडा रोड रामटेक - 441106 महाराष्ट्र
मणिपुर	37.	**मणिपुर राज्य अभिलेखागार** कैसामपाट इम्फाल - 795001 मणिपुर
ओडिशा	38.	**उड़िसा राज्य संग्रहालय,** संग्रहालय भवन भुवनेश्वर ओडीशा
	39.	**सरस्वती** सरस्वती विहार, बारिपद भद्रक - 756113 ओडिशा

राज्य	क्र. सं.	पाण्डुलिपि शोध केन्द्रों के नाम
पुडुचेरी	40.	**पुडुचेरी फ्रांसीसी संस्थान** 11 सेंट लुई स्ट्रीट, पी.बी.-33 पुडुचेरी - 605001
पंजाब	41.	**विश्वेश्वरानंद विश्वबंधु संस्कृत एवं भारत विद्या अध्ययन संस्थान** साधु आश्रम होशियारपुर - 146021 पंजाब
राजस्थान	42.	**राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान** पी. डब्ल्यू. डी. रोड जोधपुर - 342011 राजस्थान
तमिलनाडु	43.	**पुरातत्त्व विभाग** तमिल वालारची वलगम हिल्स रोड एगमोर चेन्नई - 600008
	44.	**तमिल विभाग** मद्रास विश्वविद्यालय, मरीना परिसर चेन्नई - 6000005 तमिलनाडु
	45.	**श्री चन्द्रशेखरेन्द सरस्वती विश्व महाविद्यालय** श्री कांचि शंकर मठ, कांचिपुरम - 631502 तमिलनाडु
	46.	**तंजौर महाराजा सरफोजी सरस्वती महल पुस्तकालय,** तंजौर - 613009 तमिलनाडु
त्रिपुरा	47.	**इतिहास विभाग** त्रिपुरा विश्वविद्यालय सूर्यमणिनगर त्रिपुरा वेस्ट
उत्तर प्रदेश	48.	**हस्तलेखागार एवं संग्रहालय, कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी हिन्दी भाषा और भाषा विज्ञान संस्थान** डॉ. बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, पलिवाल पार्क आगरा उत्तर प्रदेश
	49.	**रामपुर राजा पुस्तकालय** हामिद मंज़िल रामपुर - 244901 उत्तर प्रदेश
	50.	**संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय,** बनारस - 221001 (उत्तर प्रदेश)

राज्य	क्र. सं.	पाण्डुलिपि शोध केन्द्रों के नाम
उत्तर प्रदेश	51.	**वृन्दावन शोध संस्थान** रमण रेती वृन्दावन - 281121 उत्तर प्रदेश
	52.	**अखिल भारतीय संस्कृत परिषद्** महात्मा गांधी मार्ग हज़रतगंज लखनऊ, उत्तर प्रदेश
	53.	**चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय** विश्वविद्यालय मार्ग मेरठ - 200005 उत्तर प्रदेश
	54.	**मजहर मेमोरियल संग्रहालय** गाजीपुर, उत्तर प्रदेश
उत्तराखंड	55.	**संस्कृत विभाग** एच एन बी गढ़वाल विश्वविद्यालय पौड़ी गढ़वाल - 246001 उत्तराखंड
	56.	**उत्तरांचल संस्कृत अकादमी** रानीपुर झाट दिल्ली राष्ट्रीय राजमार्ग हरिद्वार - 249401 उत्तराखंड
पश्चिम बंगाल	57.	**पाण्डुलिपि पुस्तकालय** हार्डिंग भवन, प्रथम तल 87/1, कॉलेज स्ट्रीट, सीनेट हाऊस कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता - 700073, पश्चिम बंगाल

पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र

एम. सी. सी. का संगठन

- प्रत्येक एम.सी.सी. में पाण्डुलिपि संरक्षण प्रशिक्षित संरक्षकों और विशेषज्ञों का एक दल होता है।
- प्रत्येक एम.सी.सी. में उस संस्थान के वर्तमान में उपलब्ध कर्मचारियों में से एक जो परियोजना संयोजक होता है वह गतिविधियों के प्रशासन और देखरेख का दायित्व लेता है।
- प्रत्येक एम. सी. सी. में पाण्डुलिपि संरक्षण कार्य करने के लिए आधारभूत सुविधा-युक्त प्रयोगशाला होती है।
- प्रत्येक एम. सी. सी. अनेक संस्थाओं के पास उपलब्ध पाण्डुलिपियों के संरक्षण हेतु अनेक स्तर का प्रशिक्षण देती है।
- एम. सी. सी. सम्पूर्ण देश में पाण्डुलिपि भण्डार स्वामियों को निवारक एवं उपचारात्मक संरक्षण में प्रशिक्षण देता है।
- एम. सी. सी. में काम करने वाले संरक्षकों के कौशल को बढ़ाने के लिए नियमित रूप से कार्यशालाओं और प्रशिक्षण सत्रों का आयोजन किया जाता है।

एम. सी. सी. का कार्य निष्पादन

- सभी एम. सी. सी. में आधारभूत सुविधाओं से युक्त संरक्षण प्रयोगशाला होती है।
- प्रत्येक एम. सी. सी. में सम्बन्धित कर्मचारियों के दल को विभिन्न स्तर की विशेषज्ञता प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।
- एम. सी. सी. के निवारक संरक्षण कार्यक्रम में व्यवस्थित ढंग से बढ़ोतरी की जाती है।

- संरक्षण से सम्बन्धित विषयों में समझ बढ़ाने और देख रेख के लिए अधिकाधिक संस्थानों के साथ सम्पर्क अभियान चलाया जाता है।
- किसी संस्थान में उपलब्ध आधारभूत सुविधा, अतीत के कार्य और पाण्डुलिपि संकलन और संस्थान में उपचारात्मक संरक्षण कार्य में उसके सहयोग के आधार पर उसे एम. सी. सी. बनाया जाता है।

पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्रों की सूची

राज्य	क्र. सं.	पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्रों के नाम
आन्ध्र प्रदेश	1.	**आन्ध्र प्रदेश राज्य अभिलेखागार और शोध संस्थान** तारनाका, हैदराबाद - 7 आन्ध्र प्रदेश
	2.	**प्राच्य शोध संस्थान, श्रीवेंकटेश्वर विश्वविद्यालय,** तिरुपति - 517502 आन्ध्र प्रदेश
	3.	**सलार जंग संग्रहालय,** सलारजंग मार्ग हैदराबाद - 500002 आन्ध्र प्रदेश
अरूणाचल प्रदेश	4.	**तवांग मठ** जिला - तवांग अरूणाचल प्रदेश
असम	5.	**बी.सी. गुप्ता स्मृति पुस्तकालय** जी. सी. महाविद्यालय सिल्चर - 4 असम
	6.	**कृष्णकान्त हेंडिक पुस्तकालय** गौहाटी विश्वविद्यालय गौहाटी - 781014 असम
बिहार	7.	**खुदा बख्श ओरएन्टल पब्लिक लाइब्रेरी** अशोक राजपथ पटना - 800004 बिहार
	8.	**पटना संग्रहालय** विद्यापति मार्ग पटना बिहार
	9.	**श्री देव कुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान** देवाश्रम, महादेव रोड (आरा) बिहार - 802301
छत्तीसगढ़	10.	**संस्कृति एवं पुरातत्वविभाग** रायपुर, छत्तीसगढ़

राज्य	क्र. सं.	पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्रों के नाम
दिल्ली	11.	**बी.एल. भारतविद्या संस्थान** विजय वल्लभ स्मारक परिसर 20वां के.एम, जी टी कर्नाल रोड पोस्ट - अलीपुर दिल्ली - 36
	12.	**इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र** जनपथ नयी दिल्ली - 110001
गुजरात	13.	**लालभाई दलपत भाई भारतविद्या संस्थान** नवरंगपुर निकट गुजरात विश्वविद्यालय अहमदाबाद - 380009 गुजरात
हिमाचल	14.	**हिमाचल कला, संस्कृति और भाषा अकादेमी,** क्लिफ एंड इस्टेट शिमला - 171001 हिमाचल प्रदेश
हरियाणा	15.	**संस्कृत, पाली एवं प्राकृत विभाग** कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरूक्षेत्र - 136119 हरियाणा
जम्मू-कश्मीर	16.	**केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान** चोग्लमसार लेह (लद्दाख) - 194001 जम्मू-कश्मीर
कर्नाटक	17.	**पाण्डुलिपि शास्त्र विभाग** कन्नड विश्वविद्यालय, हम्पी विद्यारण्य - 583276 हॉस्पेट तालुक जिला- बेल्लारी (कर्नाटक)
	18.	**इनटेक चित्रकला परिषद् कला संरक्षण केन्द्र,** कुमार कृपा मार्ग बंगलुरु - 560001
	19.	**कर्नाटक राज्य अभिलेखागार** क.सं. 9, भू-तल विधान सभा बंगलुरू -1 कर्नाटक
	20.	**केलाडि संग्रहालय एवं ऐतिहासिक शोध संस्थान** पोस्ट - केलाडि सागर तालुक जिला - शिमोगा कर्नाटक

राज्य	क्र. सं.	पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्रों के नाम
कर्नाटक	21.	**राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं शोध संस्थान** श्री देवलतीर्थम् श्रवणबेलगोला - 571335 जिला - हसन कर्नाटक
	22.	**श्री वादिराज शोध फाउंडेशन** गीता मार्ग श्री पुथिजे मठ कार स्ट्रीट उडुपी कर्नाटक - 576101
केरल	23.	**विरासत अध्ययन केन्द्र** त्रिपुनिथुरा जिला - एरनाकुलम् केरल
	24.	**भित्ति चित्र संरक्षण शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र,** हिल पैलेस संग्रहालय परिसर, त्रिपुनिथुरा एरनाकुलम, केरल
	25.	**क्षेत्रीय संरक्षण प्रयोगशाला** कॉटन हिल, वझुथाकौड पो. ओ. - सास्थामंगलम् तिरूवनन्तपुरम - 695010 केरल
	26.	**थुंचन स्मृति न्यास** थुंचन परंबा तिरूर जिला - मामल्लापुरम् केरल
मध्यप्रदेश	27.	**कुंद कुंद ज्ञानपीठ,** देवी अहिल्या विश्वविद्यालय 584 एम. जी. रोड तुकोगंज, इन्दौर - 452001, मध्यप्रदेश
महाराष्ट्र	28.	**भण्डारकर प्राच्य शोध संस्थान** दक्कन जिमखाना पुणे - 411047 महाराष्ट्र
मणिपुर	29.	**मणिपुर राज्य अभिलेखागार** कैसामपाट इम्फाल - 795001 मणिपुर
ओडीशा	30.	**फनिह्य** प्लाट नं 4/330, प्रथम तल पोस्ट - शिशुपाल गाडा (निकट गंगुआ पुल, पुरी रोड) भुवनेश्वर -2 ओडिशा

राज्य	क्र. सं.	पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्रों के नाम
ओडिशा	31.	**इनटेक** ओडिशा कला संरक्षण केन्द्र ओडिशा राज्य संग्रहालय परिसर भुवनेश्वर - 751014 (ओडीशा)
	32.	**उड़िसा राज्य संग्रहालय,** संग्रहालय भवन भुवनेश्वर ओडिशा
	33.	**संबलपुर विश्वविद्यालय पुस्तकालय** संबलपुर विश्वविद्यालय बुरला - 768001
पंजाब	34.	**विश्वेश्वरानंद विश्वबंधु संस्कृत एवं भारत विद्या अध्ययन** संस्थान साधु आश्रम होशियारपुर - 146021 पंजाब
राजस्थान	35.	**अकलंक शोध संस्थान** अकलंक विद्यालय शोध संस्थान बसंत बिहार कोटा, राजस्थान
	36.	**दिगम्बर जैन पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र,** जैन विद्या संस्थान दिगम्बर जैन नासिम भट्टारकजी सवाई रामसिंह रोड जयपुर - 302004 राजस्थान
	37.	**राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान** पी. डब्ल्यू. डी. रोड जोधपुर - 342011 राजस्थान
तमिलनाडु	38.	**राज्य संग्रहालय, चेन्नई** एगमोर चेन्नई - 600008
	39.	**तंजौर महाराजा सरफोजी सरस्वती महल पुस्तकालय,** तंजौर - 613009 तमिलनाडु
त्रिपुरा	40.	**त्रिपुरा विश्वविद्यालय** सूर्यमणिनगर त्रिपुरा वेस्ट, त्रिपुरा उत्तर प्रदेश
उत्तर प्रदेश	41.	**केन्द्रीय पुस्तकालय** बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वारानसी, उत्तर प्रदेश

राज्य	क्र. सं.	पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्रों के नाम
उत्तर प्रदेश	42.	**रामपुर राजा पुस्तकालय** हामिद मंजिल रामपुर - 244901 उत्तर प्रदेश
	43.	**भारतीय संरक्षण संस्थान परिषद्** एच. आई. जी. - 44 सेक्ट ई, अलीगंज स्कीम लखनऊ
	44.	**मजहर मेमोरियल संग्रहालय,** बहरियाबाद, गाजीपुर, उत्तर प्रदेश
	45.	**नागार्जुन बौद्ध फाउंडेशन** 18, अंधियारी बाग, गोरखपुर - 273001 उत्तर प्रदेश
	46.	**वृन्दावन शोध संस्थान** रमण रेती वृन्दावन - 281121 उत्तर प्रदेश
उत्तराखंड	47.	**हिमालय विरासत समाज एवं कला संरक्षण केन्द्र** नैनीताल उत्तराखंड
	48.	**उत्तरांचल संरक्षण, शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान,** मार्कण्डेय भवन (निकट एच. एम. टी. मुख्य द्वार) रानी बाग जिला- नैनीताल - 263126 उत्तराखंड
पश्चिम बंगाल	49.	**पाण्डुलिपि पुस्तकालय** हार्डिंग भवन, प्रथम तल 87/1, कॉलेज स्ट्रीट सीनेट हाऊस, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता - 700073, पश्चिम बंगाल

भावी योजनाएँ

- परिक्षण एवं संरक्षण हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन जारी रखना।
- संसाधन कर्मियों के दस्ते को शक्तिशाली करना।
- सांख्यिकीकरण के प्रयास को तेज करना।
- अप्रकाशित पाण्डुलिपियों का प्रकाशन।
- ब्रिटेन, फ्रांस, बेल्जियम, जर्मनी, अमरीका, कानाडा, आस्ट्रेलिया, थाईलैण्ड, कोरिया, मलेशिया, जापान, चीन, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल में भारतीय पाण्डुलियों का पता लगाना।
- पाण्डुलिपि भण्डारों के साथ प्रत्यक्ष सम्पर्क करके पाण्डुलिपियों की प्रतियाँ प्राप्त करने का प्रयास करना।

National Mission for Manuscripts

National Mission for Manuscripts

Report of the Ninth Year
2011-2012

National Mission for Manuscripts

Manuscript Resource Centres (MRCs)

- Hyderabad, Andhra Pradesh
- Tirupati, Andhra Pradesh
- Silchar, Assam
- Moranhat, Assam
- Guwahati, Assam
- Darbhanga, Bihar
- Patna, Bihar
- Nalanda, Bihar
- Arrah, Bihar
- Raipur, Chhattisgarh
- Delhi, Delhi
- Ahmedabad, Gujarat
- Dwarka, Gujarat
- Bhavnagar, Gujarat
- Kurukshetra, Haryana
- Shimla, Himachal Pradesh
- Dharamshala, Himachal Pradesh
- Leh, J & K
- Shrinagar, J & K
- Hampi, Karnataka
- Bengaluru, Karnataka
- Shravanabelagola, Karnataka
- Mysore, Karnataka
- Keladi, Karnataka
- Thripunithura, Kerala
- Thiruvananthapuram, Kerala
- Tirur, Kerala
- Sagar, Madhya Pradesh
- Indore, Madhya Pradesh
- Ujjain, Madhya Pradesh
- Pune, Maharashtra
- Kolhapur, Maharashtra
- Ramtek, Maharashtra
- Imphal, Manipur
- Bhubaneswar, Odisha
- Bhadrak, Odisha
- Puducherry, Puducherry
- Hoshiarpur, Punjab
- Jodhpur, Rajasthan
- Chennai, Tamil Nadu
- Kanchipuram, Tamil Nadu
- Tanjavur, Tamil Nadu
- Suryamani Nagar, Tripura
- Agra, Uttar Pradesh
- Rampur, Uttar Pradesh
- Varanasi, Uttar Pradesh
- Vrindavan, Uttar Pradesh
- Lucknow, Uttar Pradesh
- Meerut, Uttar Pradesh
- Ghazipur, Uttar Pradesh
- Pauri Garhwal, Uttarakhand
- Haridwar, Uttarakhand
- Kolkata, West Bengal

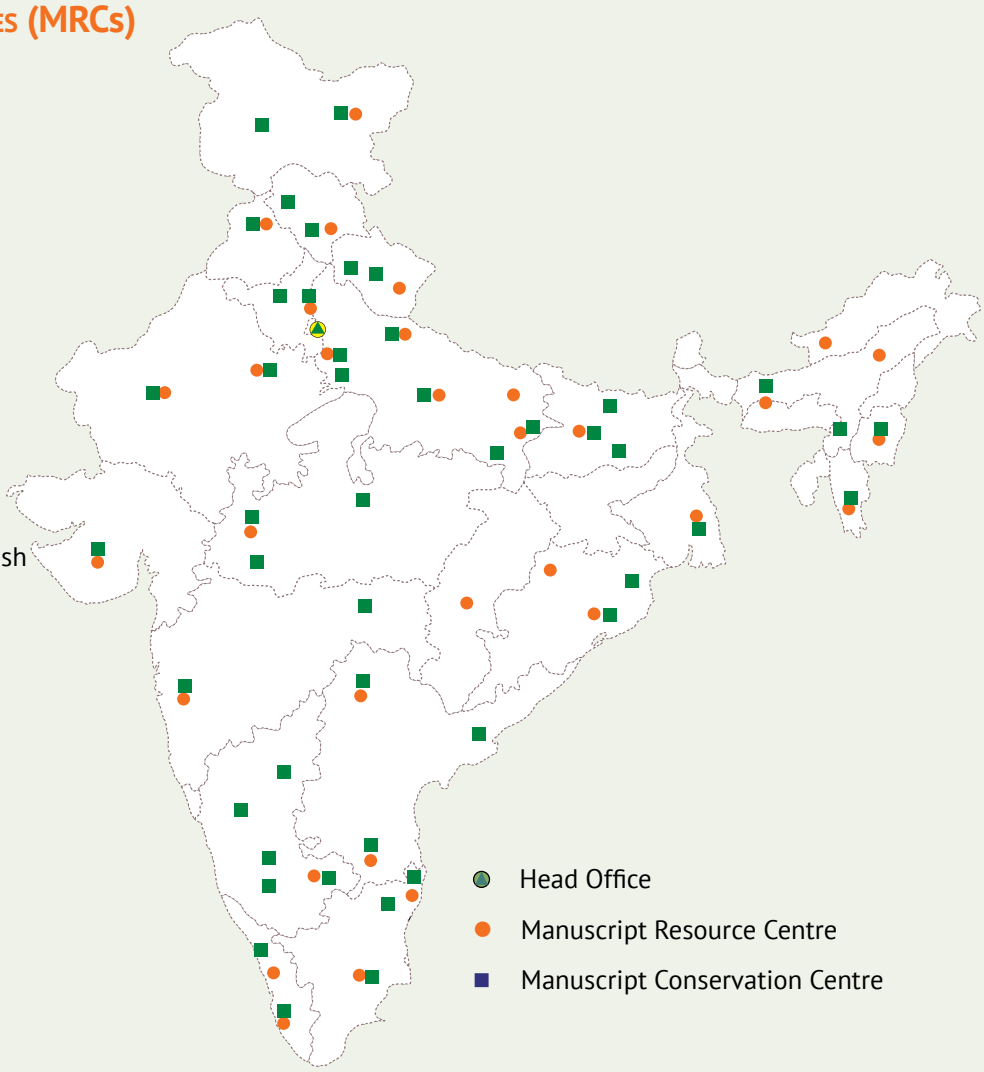

Manuscript Conservation Centres (MCCs)

- Hyderabad, Andhra Pradesh
- Tirupati, Andhra Pradesh
- Tawang, Arunachal Pradesh
- Silchar, Assam
- Guwahati, Assam
- Patna, Bihar
- Arrah, Bihar
- Raipur, Chhattisgarh
- New Delhi, Delhi
- Ahmedabad, Gujarat
- Shimla, Himachal Pradesh
- Kurukshetra, Haryana
- Leh, J & K
- Hampi, Karnataka
- Bengaluru, Karnataka
- Kelady, Karnataka
- Shravanabelagola, Karnataka
- Udupi, Karnataka
- Ernakulam, Kerala
- Thiruvananathapuram, Kerala
- Tirur, Kerala
- Indore, Madhya Pradesh
- Pune, Maharashtra
- Imphal, Manipur
- Bhubaneswar, Odisha
- Burla, Odisha
- Hoshiarpur, Punjab
- Kota, Rajasthan
- Jaipur, Rajasthan
- Jodhpur, Rajasthan
- Chennai, Tamil Nadu
- Thanjavur, Tamil Nadu
- Suryamaninagar, Tripura
- Varanasi, Uttar Pradesh
- Rampur, Uttar Pradesh
- Lucknow, Uttar Pradesh
- Ghazipur ,Uttar Pradesh
- Gorakhpur, Uttar Pradesh
- Vrindavan, Uttar Pradesh
- Nainital, Uttarakhand
- Rani Bagh, Uttarakhand
- Kolkata, West Bengal

Note: The map here is only notational and not up to the scale.

From the **Director**

It gives me pleasure to present before the discerning readers the annual report of National Mission for Manuscripts for the year 2011-12. This was the last year of the Mission's second phase which runs coterminous with the Five Year Plan period of the country. It may be recalled that the Mission was conceived in the year 2002 and it started functioning on the 7th of February 2003. After the initial euphoria of creation of an institution for manuscripts, settled down, serious work began in the field of documentation and dissemination of knowledge content of manuscripts. Creation of data base of manuscripts is a stupendous task considering the geographical vastness of our country, the variety of languages and scripts in which manuscripts are written, as also the fact that in India, manuscripts are held not only in institutional collections but a sizeable number is available with individual collectors. It is almost like looking for a needle in a hay stack. However, the Mission charted out a course of action and implemented it in a planned and determined way which started yielding result from the very first phase. Given the enormity and complexity of task the achievements of the Mission are praiseworthy. Here, I would like to share some of the problems faced in the process of documentation.

To begin with, when this project was initiated, there was extreme shortage of trained manpower in this work area. Documentation work requires that the manpower involved in it, is qualified in ancient script/scripts, language/languages in which manuscripts are written as also in the discipline of manuscriptology. Since manuscriptology and palaeography had remained disciplines, not seriously taken up at institutional levels, the opportunity for training and consequently trained manpower was minimal when the Mission started functioning. We tried to overcome this hurdle by giving short term training to surveyors and documenters before we sent them out into the fields for actual work. It has to be recorded with a sense of concern that there was overwhelming lack of trained manpower even in respectable and big repositories. The sheer apathy of the custodians towards this heritage has to be seen to be believed. We are a nation of people who are woefully ignorant of our heritage. We take pride in it only when pointed out by the Western world and we have done very little by way of either conserving or putting to use the vast knowledge wealth of this country. The Mission has tried to address these issues by carefully preparing an action plan and implementing it rigorously. It has now started to yield results.

After a period of intense activity between 2003 and 2007, the National Mission for Manuscripts lay dormant for more than two years. It was given extension over the 11th Plan period in the month of September, 2009. By this time more than two and a half years of the plan period had elapsed. Not only that, inertia had crept into the institution which needed determined revamping and single minded dedication to make it functional once again. As I had mentioned in the report for the year 2010-11, that was the year of resurrection of the Mission.

It was felt that mere documentation would not go a long way in utilization of the knowledge base contained in manuscripts. There had to be an effort at getting people involved in research and dissemination of knowledge content. The best way to achieve this goal would be to acquaint the youth of the country with this heritage and to get them actively involved in research and application. Universities can play an important role in this direction. If one paper is introduced across the board in all disciplines being taught at the post graduate level, highlighting the contribution of Indian tradition in concerned subject,

it would provide an opportunity for students to get acquainted with the Indian knowledge base. My last two years stint at the National Mission for Manuscripts has provided me an opportunity to acquaint myself with the enormous contribution Indian intellectuals have made in different disciplines and I can say with some conviction that once the door to this vast kingdom is opened it has immense possibilities of application towards solving problems being faced by our country.

One has to keep in mind that our country has its own unique situations and problems which are rooted in its culture, history, geography and none the least in the value system handed down to the society through the ages. Therefore, models created and applied in other societies might not prove to be as efficacious in the Indian context. I would like to cite as an example the importance Indians give to religious and cultural festivals. The festival of Dussehra and Diwali are just two examples which bring to the fore the mindset of the people of this country. We are all aware that even though Government holidays for these festivals are limited, work in offices and other institutions takes back seat during the festival period. Not only this, almost non-existent sense of responsibility and accountability is another area which is hampering the progress of this country. The reason I am sharing this with the readers is that I feel there is a strong need to look within to find solutions to our problems. May be, traditional literature will provide an insight into the mindset of people and provide ways of creating a productive work environment.

There are other areas where the Indian knowledge system could be applied effectively and gainfully to come up with solutions to problems faced by people in general. To cite an example let us talk about housing. We are a country where there is extreme power shortage and extreme climatic variation complemented with an open air life style. The fact that housing design borrowed from countries with no power shortage, unvarying climatic conditions that demand a closed door life style would not be suitable for Indian conditions does not need too much of elaboration. Architecture in this country was phenomenally developed, examples of which are available even to this date in the form of different archaeological sites. We need to take a cue from the literature available to develop eco-friendly, low cost, low power consuming buildings which would be appropriate for Indian conditions.

The National Mission for Manuscripts in its own way is trying to create awareness amongst people in general, young scholars, as also senior scholars about the need to look into this long forgotten area by offering an opportunity through lecture series conducted all over the country. The Mission has been successful, to some extent, in making people in general, aware of this sector by providing an opportunity for research scholars and young teachers to be trained in manuscriptology and palaeography. We have tried to fill the gap of lack of training opportunities in these disciplines in the country. I am happy to share with the readers the enthusiastic response that we get from trainees all over the country. It equips the trainees to read and interpret manuscripts and thus apply themselves to exploring this vast knowledge base.

Our training programmes on preventive and curative conservation have helped repositories as well as individual collectors in better up keep of their manuscripts. I would like to suggest to authorities of institutions that have collections of their own, like museums and repositories that they should consider recruiting manpower trained by the Mission so that their collections could be better looked after.

I am thankful to the Ministry of Culture for the support and encouragement given to the Mission in its programmes. The Hon'ble Culture Minister, Kumari Selja has taken personal interest in the functioning of the Mission. She gave us encouragement by sparing her valuable time to inaugurate the exhibition on Calligraphy and provided us support by being the Chief Guest at the annual day celebration. The Mission and I personally, feel honoured by her commitment to the cause of manuscripts.

Without the help of partner institutions, the Mission would not be able to achieve its goals. I am thankful to all the institutions and individuals who have come forward to work for and with the Mission and provide us support. The second phase of the Mission will remain memorable due to the shortest time span in which it functioned, the major strides it took in the field of dissemination of knowledge content as well as inclusiveness of hitherto neglected (at least in the field of manuscripts) medieval India and the north-eastern states.

Prof. Dipti S. Tripathi
Director, National Mission for Manuscripts

National Mission for Manuscripts
ANNUAL REPORT 2011–2012

India can rightfully claim to be the largest repository of manuscripts in the world. It is not only the largest repository of literary heritage, but is also the forerunner in conservation efforts. National Mission for Manuscripts (NMM) is first such national level comprehensive initiative in the world which caters to the need of conserving manuscripts and disseminating knowledge contained therein. NMM has covered a long distance since its inception in 2003, towards fulfilling its motto, 'conserving the past for the future'. It works through more than 100 centres and nearly 350 sub-centres, spread all over the country.

NMM functions through different types of centres established throughout the country. The number of centres (category-wise) are as follows:

Manuscript Resource Centres (MRCs) – 57
Manuscript Conservation Centres (MCCs) – 50
Manuscript Partner Centres (MPCs) – 42
Manuscript Conservation Partner Centres (MCPCs) – 300

Nearly after a decade since it was established by the Ministry of Culture, Govt. of India, it has emerged as a movement, undoubtedly the most popular and effective among all the heritage conservation initiatives in the country.

Objectives

In suggesting the objectives for the Mission it would be simplistic to suppose that the objective for launching a National Mission for Manuscripts is merely to locate, enumerate, preserve and describe all Indian manuscripts in India and abroad. The objective for undertaking these tasks is to enhance access, improve awareness about cultural knowledge heritage and encourage their use for educational and research purposes and lifelong learning. The Development Objective can be broken down into the following four sub-objectives:

- **Objective 1:** To facilitate conservation and preservation of manuscripts through training, awareness and financial support;
- **Objective 2:** To document and catalogue Indian manuscripts, wherever they may be, maintain accurate and updated information about them and the conditions under which they may be consulted;
- **Objective 3:** To promote ready access to to these manuscripts through publication, both in book form as well as electronic form;
- **Objective 4:** To boost scholarship and research in the study of Indian languages and manuscriptology;
- **Objective 5:** To build up a National Manuscript Library;

Page 21, Project Document, National Mission for Manuscripts

In the past two years, rejuvenated NMM has made adjustments in its priorities to make it more relevant and effective. Commendable among them are: extending NMM network in the Northeast and other remote areas and appropriate emphasis on intellectual heritage of the medieval period.

Emphasis on Northeast: Prior to 2010, there were only six centres (3 MRCs and 3 MCCs) in the Northeast, with two centres almost non-functional. In the last three years, NMM not only activated these two centres but also established 5 more centres in the States of Tripura, Assam and Arunachal Pradesh. At present, 11 centres are working relentlessly in the remote areas of the Northeast. Besides these, functioning of the NMM has been extended to the States of Mizoram and Tripura in an unprecedented way.

Before the publication of an article in the *Kriti Rakshana*, bi-monthly journal of the NMM, very few among the academics knew about Chakma language. Credit goes to NMM for exploring a large number of manuscripts in Mizoram, which are mostly in Chakma language. In January, 2012, NMM organised a 10-day workshop on Chakma script along with an exhibition of Chakma manuscripts on indigenous medicines at Kamalanagar, nearly 200 km. from Aizawl.

A large number of rare and valuable Tai manuscripts written on *sanchi pat* are lying scattered and unidentified in the rural households and Buddhist monasteries of upper Assam. Only a handful of persons have got the knowledge of Tai language in which the manuscripts are written. Thousands of manuscripts are available with those sections of people who neither can afford to take care of them nor are aware of the importance of the rare documents which not only bear the testimony of six hundred years Ahom rule but also of the rich cultural heritage of Assam. In 2010, NMM has established a centre (MRC) at the Institute of Tai Studies and Research at Moranhat in Assam and started documenting and conserving these manuscripts and retrieving the knowledge contained therein.

It will not be an exaggeration to assert that in terms of number of new manuscripts explored, conservation treatment given to manuscripts and number of workshops and seminars organized, the efforts of the NMM to conserve the manuscript heritage and disseminate knowledge content therein in the Northeast has been very satisfying.

Emphasis on intellectual heritage of the medieval period: Until 2009, not much effort had been made to explore intellectual heritage contained in manuscripts in Persian, Arabic or Urdu language. In March 2010, an All India conference was organized to draw an action plan for NMM's due recognition of this heritage. As per the recommendations made in this conference, a number of projects have been taken up. A detailed syllabus on manuscriptology for Persian, Arabic and Urdu languages has been prepared and a number of basic and advance level workshops have been organized to train young scholars. Seminars and lectures have also been held to get scholars actively involved in this field. A collection of seminar papers, 'Indian Cultural Heritage: Persian, Arabic and Urdu' has been published. Besides this, a list of unpublished rare manuscripts has been prepared and work has been initiated to publish them on priority basis. The first Urdu *diwan* 'Diwanzada' and a socio-cultural as also politico-economic history of the late Mughal period '*Chahar Gulshan*' have already been published.

In cooperation with National Institute of Punjab Studies, NMM has launched a dream project of publishing an illustrated catalogue of Gurugranth Sahib Manusripts, of which first volume has been published.

Emphasis on conservation and modernization: NMM has a two-pronged strategy to conserve manuscripts: (a) preventive and curative conservation of original manuscripts and (b) conservation through digitization.

It is an acknowledged fact that almost half of the total manuscript reserve in independent India was

irretrievably lost before NMM came into being. Therefore, conservation is appropriately accorded top priority in the work plan of the NMM. Besides carrying out conservation through well-equipped centres (MCCs), NMM also conducts conservation workshops to conserve manuscripts and train manpower in the art and science of conservation. In 2011, NMM has revived the dysfunctional conservation laboratory at the head office in New Delhi. At present, five well trained conservationists (though the number is negligible in comparison to demand) are treating manuscripts on war footing in this recently revived laboratory.

The way to applying modern technology for preservation has been defined in 'Guidelines for Digitization of Archival Material' formulated and published by the NMM. It has the primary objective of using digital technology to preserve manuscripts for posterity. After studying the best practices being adopted in digitization projects at national and international level and after long consultation with experts in the field, NMM has come up with this document, which is first of its kind in the country. The aims of digitization effort are to conserve the manuscripts for posterity and to provide easy access to manuscripts by establishing a National Digital Manuscript Library. In 2011 NMM has launched the third phase of its digitization project, which is designed to digitize 8 million pages of manuscripts and slated to be completed by Decmber 2013. Including the first and second phase of digitization, NMM has been able to digitize more than 10 million pages. To date, DVDs containing the images of these pages of manuscripts are available in the possession of NMM.

NMM is aware of the limitation of digitization as a means of conservation. The digitized copies are convenient for providing accessibility, but in the era of changing technology and as also the limited life span of DVDs, digital copies cannot be the medium for long term preservation. Therefore, NMM has planned to create and keep microfilms of all the digitized copies of manuscripts.

Emphasis on dissemination of knowledge contained in manuscripts: To sum up, the aim of NMM is to retrieve the knowledge contained in manuscripts and ensure its optimum use in the present context. Means to this goal are varied: documentation, conservation, digitization and dissemination.

Seminars and lectures on diverse topics related to manuscripts, manuscriptology and knowledge contained in manuscripts are organized in different parts of the country. In the last two years three volumes containing the lectures delivered under

Survey, listing and cataloguing of manuscripts in Manipur

Tattabodha Public Lecture Series were published. Four volumes of seminar papers, two volumes of critical editions of manuscripts and three volumes of rare unpublished manuscripts were published. In total, twenty two volumes of books have been published so far and a large number of books are under process of publication as well. Besides these, NMM has on its website, (*www.namami.org*) information of about 22,15,000 manuscripts. In addition to this information on 6,15,000 manuscripts are being processed for release on the website. Efforts on dissemination, through lectures, seminars and workshops, etc. have increased manifold during the last two years.

Manuscripts are the store house of knowledge gained in our country over a period of more than five thousand years. This needs to be fruitfully and gainfully harvested for application in the present context to restore to India the intellectual respectability it once enjoyed.

Programmes and Activities

I. Documentation

- Enriching national electronic database of manuscripts
- National survey of manuscripts and post survey programme
- Expansion and strengthening of Manuscript Resource Centres (MRCs)
- Supporting Manuscript Partner Centres (MPCs)

II. Manuscript Conservation and Training

- Expansion of MCC Network
- Establish Manuscript Conservation Partner Centres (MCPCs)
- Creation of a National Resource Team of Conservators
- Promotion of research programmes
- Preventive conservation training
- Workshops on conservation of rare support materials
- Establishment of field laboratories
- Organising MCPC workshops
- Conservation of manuscript collections in MRCs
- Collaboration with survey and post survey
- Collaboration with digitization

III. Training on Manuscriptology and Paleography

- Conducting training courses on manuscriptology and paleography
- Create trained manpower
- Introducing manuscriptology courses in Indian Universities
- Preparation of critical editions of manuscripts

IV. Documentation through Digitization

- Preservation of the original manuscripts for posterity
- Promotion of access and usage by scholars and researchers, without tampering with original copies
- Creation of a digital library as a resource base of the digitized copies of manuscript collections of the country
- Creation of standards and procedures for digitization of manuscripts

V. Research and Publication

- **Tattvabodha:** Publication of collection of lectures
- **Sameekshika:** Publication of collection of seminar papers
- **Samrakshika:** Publication of collection of seminar papers on conservation
- **Kritibodha:** Publication of the critical editions
- **Prakashika:** Publication of rare texts
- **Kriti Rakshana:** Bi-monthly publication of the NMM

VI. Outreach Programmes

- Organise Public Lectures
- Organise seminars
- Organise exhibitions etc. under public awareness programme

Performance Summary 2011–2012
(In brief)

- Post Survey is continuing in Andhra Pradesh, Gujarat and Tripura.
- Collected information about 2,15,492 manuscripts and total information available with the NMM up to 31st March, 2012 was 34,94,520. In 2010 – 2011, NMM web-launched 2,15,000 additional data. The total data available in the NMM website, www.namami.org stands at **around 22,15,000.**
- 14 workshops on conservation of manuscripts were organized
- Up to 31st March, 2012, digitization of 1,01,932 Manuscripts (1,05,58,983 pages) has been completed and images are available with the NMM
- In total, 16 (4 in Delhi and 12 outside Delhi) public lectures were organized under *Tattvabodha* Series.
- 11 national level seminars and 2 international level seminars on different topics were organized
- 13 (10 Basic Level and 3 Advance Level) workshops on manuscriptology and palaeography were organized
- Samrakshika III, Samikshika V, Prakashika II and Prakashika V have been published during 2011–2012

Documentation

When it was established in 2003, one of the challenges before the National Mission for Manuscripts (NMM) was to collect information about the availability of manuscripts, to locate manuscripts and to prepare a national database of manuscripts. It was a challenging task considering the fact that unlike developed countries of the West, availability of manuscripts in India is not limited to organized repositories only. Here manuscripts are available in libraries, muthas, temples, mosques as well as in households. Therefore, it is not only the country with largest number of manuscripts but also the largest number of repositories. From Mizoram to Gujarat and from Leh to Kanyakumari, one may come across manuscript anywhere. Assumption in this regard is bound to be proven futile.

After establishment, NMM has formulated a detail plan to face this challenge of locating and documenting manuscripts. In its first and second phases of existence, emphasis was given on door to door survey to locate manuscript repositories and detailed documentation through post survey. Simultaneously, under a strategy which is aimed at far reaching consequences, a network of institutions located on different corners of the country has been created. The institutional framework has been worked out to entrust the responsibility of locating and documenting manuscripts upon these institutions. Gradually the network of institutions has started to shoulder the responsibility of documentation with more efficiency and accuracy. As a result the emphasis has shifted and survey and post-survey activities are carried out through Manuscript Resource Centres or MRCs. This is a remarkable shift from the policy followed earlier, though the very seed of the network was sowed just after the beginning of the Mission. It was during the last three years, under the able guidance of the present Director, Prof. Dipti S. Tripathi steps have been taken to strengthen the network and make it more comprehensive and effective. As a result, a number of almost inactive MRCs have been rejuvenated and a large number of new MRCs have been established to end the regional imbalance and give the much needed boost up to data collection.

With an estimated ten million manuscripts, India has the biggest manuscript reserve in the world. However, most of this wealth has not been documented in a manner to provide a common portal for reference to aid scholars and researchers. In many instances, there has been no knowledge of or access to these manuscripts, creating a gap between the knowledge cultures of the past and present.

NMM is engaged in detailed documentation of manuscripts in India, by creating a National Catalogue of Manuscripts. The catalogue containing information about 22,15,000 lakh manuscripts is already available in NMM website, www.namami.org. This electronic catalogue provides information of manuscripts from institutions, religious, cultural and educational, as well as private collections across the country.

Objectives

- Location of the unknown manuscript reserves in the country, both in institutional and private repositories
- Documentation of the entire estimated ten million manuscripts of the country
- Reaching out to the grass root level for gathering information on manuscripts, as well as spreading awareness
- Creation of the electronic catalogue of manuscripts to be made available on the internet

Methodology

- Conducting national surveys in each state and union territory, for locating manuscripts in both known and unknown, private and public, catalogued and non-catalogued collections, through the standard questionnaire forms
- Co-ordinating with the State and district administration, as well as local self- governing bodies and general populace at large
- Conducting extensive post survey exercises to document each manuscript in manus data sheets
- Gathering data from the manuscript resource centres (MRCs)
- Assorting, checking, organizing and entering the data on the database
- Promoting the documentation of collections of Indian manuscripts outside India through set questionnaire and manus data forms

Data Processing

After collection of information, it is entered into the Manus Granthavali software at the Manuscript Resource Centres (MRCs) or Manuscript Partner Centres (MPCs). Finally the data comes to the Mission for checking by qualified scholars in various fields of knowledge.

National Electronic Database of Manuscripts

National Electronic Database of manuscripts is the first of its kind online catalogue of Indian manuscripts, emerging out of various earlier attempts at such documentation by different institutions. With information on every manuscript that has been documented through the Mission's datasheets, the catalogue covers various aspects of manuscripts, from title, commentary, language, script, subject, place of availability, number of pages, illustrations, date of writing etc. As a consolidated portal, it can be searched through the categories of author, subject, etc.

Apart from sensitizing people about the rich intellectual heritage of India, the Database provides vital policy impetus for initiatives to be taken to conserve, preserve, digitize, improve access and save manuscripts for posterity.

Participants at the International Seminar on "Colonial Note from the Continuity of Culture: Emerging Study of Manuscriptology", held at Deptt. of Bengali, Assam University Silchar from 1st to 3rd March, 2012

Data Collection Detail

Year	Total Data Collected in the Year	Net Record (Progressive)
2003 – 2004	0,88,569	00,88,569
2004 – 2005	2,02,563	02,91,132
2005 – 2006	7,70,111	10,61,243
2006 – 2007	7,03,196	17,64,439
2007 – 2008	8,13,151	25,77,590
2008 – 2009	2,76,271	28,53,861
2009 – 2010	2,14,114	30,67,975
2010 – 2011	2,11,053	32,79,028
2011 – 2012	2,15,492	34,94,520

Data Processing Detail

Sl. No.	Category	Position up to 31st March, 2011	Position up to 31st March, 2012
1.	Total data received in electronic format	23,58,000	25,67,000
2.	Total data received in hard copy	9,20,000	9,27,000
3.	Total data edited	27,10,000	28,71,000
4.	Total data released on website	20,00,000	22,15,000

Contribution of the MRCs

Sl. No.	Name of the MRC	Total Data Received Till 31st March, 2011	Data Received in 2011 - 2012	Total Data Received Till 31st March, 2012
1.	Akhila Bharatiya Sanskrit Parishad Mahatma Gandhi Marg Hazratganj Lucknow Uttar Pradesh	2,500	18,200	20,700
2.	Anandashram Samstha 22, Budhwar Peth Pune – 411 002 Maharashtra	49,033	8,549	57,582
3.	A.P. Govt. Oriental Manuscripts Library and Research Institute Jama-I-Osmania Osmania University Campus Hyderabad – 500007 Andhra Pradesh	24,934	0	24,934

4.	B.C. Gupta Memorial Library Guru Charan College Silchar Assam – 788 004	602	0	602
5.	Bhai Vir Singh Sahitya Sadan Bhai Vir Singh Marg Gole Market New Delhi – 1	214	0	214
6.	Bhandarkar Oriental Research Institute Deccan Gymkhana Pune – 411 037 Maharashtra	68,877	0	68,877
7.	B.L. Institute of Indology Vijay Vallabh Smarak Complex 20th KM, GTK Road P.O. – Alipur Delhi – 36 Delhi	1,363	326	1,689
8.	Central Institute of Buddhist Studies Choglamsar Leh (Laddak) – 194001 Jammu & Kashmir	9,242	0	9,242
9.	Department of History Tripura University Suryamani Nagar Tripura West	0	0	0
10.	Department of Sanskrit HNB Garhwal University Pauri Garhwal – 246 001 Uttarakhand	741	1,274	2,015
11.	Department of Sanskrit, Pali and Prakrit Kurukshetra University Haryana Kurukshetra – 136119	27,423	2,031	29,454
12.	Department of Tamil University of Madras Chennai Tamil Nadu	5,222	0	5,222
13.	Directorate of State Archaeology, Archives & Museum Stone Building, Old Secretariat Srinagar – 190001 Jammu and Kashmir	28,137	4,591	32,728
14.	Dr. Harisingh Gour University Gour Nagar Sagar – 470003 Madhya Pradesh	50,223	7,950	58,173
15.	French Institute, Pondicherry 11, Saint Louis Street PB-33 Puducherry – 605001	37,494	10,184	47,678
16.	Government Oriental Manuscript Library Chennai Tamil Nadu	7,109	0	7,109

17.	Himachal Academy of Arts Culture and Languages Cliff-End Estate Shimla – 171001 Himachal Pradesh	60,379	14,074	74,457
18.	Institute for Oriental Studies Maharshi Karve Road Naupura Thane West Maharashtra	2,800	0	2,800
19.	Institute of Tai Studies and Research Moranhat Dist. – Sibsagar Assam	0	2,199	2,199
20.	Kameswar Singh Darbhanga Sanskrit University Kameswar Nagaram Darbhanga – 846 004 Bihar	10,403	0	10,403
21.	Kannada University Hampi Vidyaranya – 583 276 Taluq – Hospet Dist. – Bellary Karnataka	56,777	6,059	62,836
22.	Kavikulaguru Kalidasa Sanskrit University Baghla Bhawan Sitalwadi Manda Road Ramtek – 441106 Maharashtra	6,143	6,163	12,306
23.	Keladi Museum & Historical Research P.O. - Keladi Taluq – Sagar Dist. – Simoga Karnataka	18,936	1,103	20,039
24.	Khuda Bakhsh Oriental Public Library Ashok Rajpath Patna – 800 004 Bihar	23,144	0	23,144
25.	Krishna Kanta Handique Library Gauhati University Gopinath Bardolai Nagar Guwahati Assam	25,513	306	25,819
26.	Kund-Kund Jnanapith 584, M.G. Road Tukoganj Indore – 452 001 Madhya Pradesh	32,165	20,766	52,931
27.	Lalbhai Dalpatbhai Institute of Indology Navarangpur Near Gujarat University Ahmedabad – 380 009 Gujarat	64,740	0	64,740

28.	Library of Tibetan Works and Archives Gangchen Kyisong Dharamshala – 176215 Himachal Pradesh	95,998	6,964	1,02,962
29.	Mahabharata Samshodhana Pratisthan 1/ E, 3rd Cross Girinagar 1st Phase Bengaluru – 560 085 Karnataka	59,886	0	59,886
30.	Manipur State Archives Keishampat Imphal – 795 001 Manipur	38,501	2,277	40,778
31.	Manuscript Library Hardinge Building 1st Floor, Senate House 87/1, College Street University of Calcutta Kolkata – 700073 West Bengal	92,752	18,566	1,11,318
32.	Mazahar Memorial Museum Bahariabad Ghazipur Uttar Pradesh	0	7,000	7,000
33.	Nava Nalanda Mahavihara Nalanda – 803111 Bihar	22,164	6,490	28,654
34.	National Institute of Prakrit Studies & Research Shrutakevali Education Trust Shravanabelagola – 573 135, Dist. – Hassan Karnataka	51,642	7,075	58,717
35.	Oriental Research Institute Sri Venkateswara University Tirupati – 517 502 Andhra Pradesh	33,543	0	33,543
36.	Oriental Research Institute University of Mysore Kautilya Circle Mysore – 570005 Karnataka	78,141	0	78,141
37.	Oriental Research Institute & Manuscripts Library University of Kerala Kariavattom Thiruvananthapuram – 695585 Kerala	75,680	1,423	77,103
38.	Orissa State Museum Museum Building Bhubaneswar Odisha	2,90,774	3,302	2,94,076

39.	Patna Museum Vidyapati Marg Patna Bihar	0	4,000	4,000
40.	Rajasthan Oriental Research Institute P.W.D. Road Jodhpur – 342011 Rajasthan	1,76,954	32,801	2,09,755
41.	Rampur Raza Library Hamid Manzil Rampur – 244 901 Uttar Pradesh	43,300	0	43,300
42.	Salarjung Museum Museum Road Hyderabad Andhra Pradesh	40,845	0	40,845
43.	Sampurnananda Sanskrit Visvavidyalaya Varanasi – 221001 Uttar Pradesh	51,330	7,012	58,342
44.	Sanskrit Academy of Research for Advanced Society through Vedic & Allied Tradition of India (SARASVATI) Sarasvati Vihar Barpada, Bhadrak – 756 113 Odisha	1,08,861	13,502	1,22,363
45.	Scindia Oriental Research Institute Vikram University Ujjain Madhya Pradesh	38,840	0	38,840
46.	Shivaji University Kolhapur Maharashtra	6,517	0	6,517
47.	Shri Satshrut Prabhavana Trust 580, Juni Manekwadi Bhavnagar – 364001 Gujarat	59,001	15,140	74,141
48.	Shree Dwarkadhish Sanskrit Academy and Indological Research Institute Dwarka Gujarat	0	0	0
49.	Sri Chandrashekharendra Saraswati Visva Mahavidyalaya (Deemed University) Enathur, Kanchipuram – 631561 Tamil Nadu	39,436	1,525	40,961
50.	Sri Dev Kumar Jain Oriental Research Institute Devashram Mahadeva Road Arrah – 802 301 Bihar	1,17,114	0	1,17,114

51.	Tanjore Maharaja Serfoji's Saraswati Mahal Library Tanjavur – 613 009 Tamil Nadu	35,914	0	35,914
52.	Thunchan Memorial Trust Thunchan Paramba Tirur – 676101 Dist. – Mamlapuram Kerala	1,43,970	12,157	1,56,027
53.	Uttaranchal Sanskrit Academy Near Zila Panchayat Office Haridwar – 249 401 Uttarakhand	25,927	2,519	28,446
54.	Viswesvarananda Viswabandhu Institute of Sanskrit & Indological Studies Sadhu Ashram Hoshiarpur – 146021 Punjab	26,206	161	26,367
55.	Vrindavan Research Institute Raman Reti Vrindavan – 281121 Uttar Pradesh	45,206	856	46,062

Manuscriptology and Paleography Workshop, held at Akhil Bhartiya Sanskrit Parishad, Lucknow (1-21 Nov. 2011)

Conservation

India is not only the largest repository of literary heritage, but is also the forerunner in conservation efforts. National Mission for Manuscripts is first such national level comprehensive initiative in the world which caters to the need of conserving manuscripts and disseminating knowledge contained therein. NMM has covered a long distance since its inception in 2003 towards fulfilling its motto, 'conserving the past for the future'.

Conservation efforts of the NMM encompass the following dimensions:

1. Conservation of original manuscripts
2. Conservation through digitization
3. Conservation through microfilming

Conservation of manuscripts in original is done through preventive and curative methods. For that purpose a standard methodology comprising the positive aspects of both traditional Indian practices and modern scientific methods has been formulated and is followed. Conservation of manuscripts is carried out through 50 Manuscript Conservation Centres (MCCs), besides this preventive and curative conservation workshops are organized at different locations of the country as per priorities. Manpower development in the field of manuscript conservation, another objective of the NMM is also taken care of during workshops. Conservation workshops aim at fulfilling dual objectives of conservation of manuscripts and generate trained manpower in the field of manuscript conservation. Realising the urgency of conservation, NMM has launched the conservation of manuscripts on a massive scale. Besides these, in 2011, NMM has established an in-house laboratory at its head-quarters in Delhi. Here 5 well-trained conservators are busy in treating important manuscripts from different parts of the country in preventive and curative ways.

Participants at Workshop on Conservation and Preventive Care of Manuscripts, organized at NRLC, Lucknow, 22nd March to 5th April, 2012

Conservation Workshops Held in 2011 - 2012

Sl. No.	Date	Name of the Workshop	Collaborating Institution and Venue
1.	1st – 5th August, 2011	Preventive Workshop on Conservation	Oriental Research Institute, Shri Venkateshwara University, Tirupati, Andhra Pradesh
2.	24th – 28th August, 2011	Preventive Workshop on Conservation	Akalank Shodh Sansthan, Kota, Rajasthan
3.	26th – 30th September, 2011	Preventive Workshop on Conservation	Bhandarkar Oriental Research Institute, Pune, Maharashtra

4.	9th – 13th October, 2011	Preventive Workshop on Conservation	Government Museum Chennai, Egmore, Chennai, Tamil Nadu
5.	17th – 21st October, 2011	Preventive Workshop on Conservation	Manuscript Library, University of Calcutta, Kolkata, West Bengal
6.	8th – 12th November, 2011	Preventive Workshop on Conservation	K.K. Handique Library, Gauhati University, Guwahati, Assam
7.	22nd – 25th November, 2011	Preventive Workshop on Bio-deterioration (New)	INTACH Lucknow, Lucknow, Uttar Pradesh
8.	2nd – 6th December, 2011	Preventive Conservation Workshop	Andhra Pradesh State Archives and Research Institute, Hyderabad
9.	6th – 11th December, 2011	Conservation Workshop on Rare Support Material (Textiles)	L. D. Institute of Indology, Ahmedabad Gujarat
10.	19th – 23rd December, 2011	Preventive Conservation Workshop	National Institute of Prakrit Studies and Research, Shravanabelgola, Karnatak
11.	10th January – 10th February, 2012	Curative Conservation Workshop	INTACH, Bhubaneswar, Odisha
12.	18th January – 17th February, 2012	Curative Conservation Workshop	INTACH, Lucknow, Uttar Pradesh
13.	20th – 24th	Preventive Conservation Workshop	Dept. of History, Tripura University, Suryamani Nagar, Tripura

Contribution of the MCCs

Sl. No.	Name of the MCC	No. of Mss. Conserved in Preventive Way	No. of Folios Conserved in Preventive Way	No. of Mss. Conserved in Curative Way	No. of Folios Conserved in Curative Way	Total No. of Folios Conserved
1.	AITIHYA Plot No. 4/330, 1st Floor P.O. Sisupala Gada (Near Gangua Bridge, Puri Road), Bhubaneswar – 2 Odisha	405	41,206	29	4,023	45,229
2.	Aklank Shodh Sansthan Aklank Vidyalaya Association Basant Vihar Kota Rajasthan	-	36,936	-	-	36,936
3.	A.P. State Archives and Research Institute Tarnaka Hyderabad – 7 Andhra Pradesh	-	26,275	-	3,063	29,338
4.	Bhandarkar Oriental Research Institute Deccan Gymkhana Pune – 411 037 Maharashtra	119	35,090	9	172	35,262

Sl. No.	Name of the MCC	No. of Mss. Conserved in Preventive Way	No. of Folios Conserved in Preventive Way	No. of Mss. Conserved in Curative Way	No. of Folios Conserved in Curative Way	Total No. of Folios Conserved
5.	Central Institute of Buddhist Studies Choglamsar Leh (Laddak) – 194001 Jammu & Kashmir	-	1,456	-	1,456	2,912
6.	Central Library Banaras Hindu University Varanasi Uttar Pradesh	275	41,120	63	2,570	43,690
7.	Department of Language and Culture Himachal State Museum Chaura Maidan Shimla – 171 004 Himachal Pradesh	619	38,019	130	6,696	44,715
8.	Dept. of Sankskrit, Pali & Prakrit Kurukshetra University Kurukshetra Haryana	-	77,019	-	-	77,019
9.	Digambar Jain Pandulipi Samrakshan Kendra Jain Vidya Samsthan Digambar Jain Nasim Bhattarakji Sawai Ramsing Road Jaipur – 302004 Rajasthan	1,980	1,14,298	-	-	1,14,298
10.	Government Museum Chennai Egmore Chennai – 600008 Tamil Nadu	539	68,227	-	-	68,227
11.	ICKPAC, INTACH Chitrakala Parishath, Art Conservation Centre Kumara Krupa Road Bengaluru – 560 001 Karnataka	333	36,560	48	5,564	42,124
12.	Indian Council of Conservation Institutes HIG- 44, Sector – E Aliganj Scheme Lucknow – 226024 Uttar Pradesh	2,856	45,639	10	699	46,338
13.	INTACH ICI Orissa Art Conservation Centre Orissa State Museum Premises Bhubaneswar –751 014 Odisha	-	15,534	-	1,398	16,763

Sl. No.	Name of the MCC	No. of Mss. Conserved in Preventive Way	No. of Folios Conserved in Preventive Way	No. of Mss. Conserved in Curative Way	No. of Folios Conserved in Curative Way	Total No. of Folios Conserved
14.	Keladi Museum & Historical Research, P.O. Keladi Sagar Tq. – 577401, Dist. – Simoga Karnataka	-	1,13,247	-	1,05,830	2,19,077
15.	Krishna Kanta Handique Library Gauhati University Gopinath Bardolai Nagar Guwahati – 781014 Assam	239	5,358	15	737	6,095
16.	Kund Kund Jnanpith Devi Ahilya University 584, M. G. Road Tukoganj Indore – 452 001	612	30,000	-	-	30,000
17.	Manipur State Archives Keishampat Imphal – 795 001 Manipur	414	10,192	12	645	10,837
18.	Manuscript Library Hardinge Building 1st Floor, Senate House 87/1, College Street University of Calcutta Kolkata – 700073 West Bengal	526	13,996	-	-	13,996
19.	Mazahar Memorial Museum Bahariabad Ghazipur Uttar Pradesh	448	35,178	536	2,770	37,948
20.	Nagarjuna Buddhist Foundation 18, Andhiari Bagh, Gorakhpur – 273 001 Uttar Pradesh	3,544	47,462	-	-	47,462
21.	National Institute of Prakrit Studies and Research Shri Davala Teertham Shravanabelagola Dist: Hassan Karnataka	-	61,004	-	53,428	1,14,432
22.	Oriental Research Institute Sri Venkateswara University Tirupati – 517507 Andhra Pradesh	84	18,108	-	-	18,108
23.	Oriental Research Institute & Manuscripts Library University of Kerala Kariavattom Thiruvananthapuram – 695 585 Kerala	455	69,960	179	1,452	71,412

Sl. No.	Name of the MCC	No. of Mss. Conserved in Preventive Way	No. of Folios Conserved in Preventive Way	No. of Mss. Conserved in Curative Way	No. of Folios Conserved in Curative Way	Total No. of Folios Conserved
24.	Orissa State Museum Bhubaneswar Odisha	300	29,159	7	181	29,340
25.	Patna Museum Vidyapati Marg Patna Bihar	2,001	12,000	-	556	12,556
26.	Rajasthan Oriental Research Institute P.W.D. Road Jodhpur – 342011 Rajasthan	4192	21,756	677	9,280	31,036
27.	Sambalpur University Library Sambalpur University Burla – 768001 Odisha	871	74,125	-	-	74,125
28.	Sri Dev Kumar Jain Oriental Research Institute Devashram Mahadeva Road Arrah– 802 301 Bihar	257	26,935	64	2,312	29,247
29.	Sri Vadiraja Research Foundation Sri Puthige Matha Car Street Udupi Karnataka	417	36,924	50	4,095	41,019
30.	Thunchan Memorial Trust Thunchan Parambu Tirur – 676 101 Dist. – Malapurram Kerala	256	53,103	-	-	53,103
31.	Tripura University Suryamaninagar Tripura West Tripura	337	25,836	-	-	25,836
32.	Uttranchal Institute for Conservation Research and Training Markandeya House (near HMT Main Gate), Rani Bagh – 263 126 District – Nainital Uttarakhand	140	16,663	50	3,032	19,695
33.	Vrindavan Research Institute Raman Reti Vrindavan – 281121 Uttar Pradesh	1870	58,666	141	7,243	65,909

Conservation at NMM Lab., New Delhi

NMM has established a Conservation Laboratory at its Office in New Delhi (11 Mansingh Road, 3rd Floor, New Delhi – 110 001). The laboratory started functioning on 5th September, 2011. In 7-month period, from 5th September, 2011 to 31st March, 2012, in total 90,783 folios (87,263 in preventive way and 3,520 in curative way) were treated, that too with the help of 5 conservators only. Since 5th September, 2011, NMM has received manuscripts from 6 repositories, detail of which is given in the table given bellow. Most of these manuscripts have been conserved and returned to the repositories.

Sl. No.	Repository/ owner	No. of manuscripts received	No. of total folios (approx.)	Status of the work done till 31st March, 2012
1.	Md. Afzal-ur-Rahman, Noida, U.P.	60 paper manuscripts	25,000	Continuing
2.	Shri M.R. Sharma, Gurgaon	23 paper manuscripts	11,700	Completed conservation of 16 manuscripts and returned
3.	Shri S.P.K. Gupta, Delhi	2 palm-leaf manuscripts	316 folios	Completed and returned
4.	Ms. Sheel Mishra, Delhi	1 paper manuscript	85 folios	Completed and returned
5.	Shri K. Mishra, Ghaziabad	709 palm-leaf manuscripts	6,000 folios	Continuing
6.	Prof. G.C. Tripathi, Delhi	1 palm-leaf manuscript	181 folios	Continuing
7.	NMM collection, New Delhi	709 palm-leaf manuscripts	62,662 folios	Completed preventive conservation and wrapped with starch-free cotton cloth

Conservation and re-inking of Palmleaf manuscripts at NMM Laboratory, New Delhi

Digitization

Digitization of manuscripts as means of protecting and documenting textual heritage has emerged as an important field in recent times. With the advancement of information technology, digitization promises documentation and preservation of original texts, facilitating at the same time, greater access for scholars and researchers. In 2004, the Mission had initiated a Pilot Project of Digitization, aiming at digitizing several caches of manuscripts across the country. In 2006, the Pilot Project was completed, with the Mission setting standards and guidelines for digitization. New projects have been taken up, targeting some of the most important manuscript collections of the country. With the fresh digitization projects, the Mission seeks to create a digital resource base for manuscripts.

The second phase of digitization was successfully completed and one-third of the estimated work has been done under the Third Phase of Digitization.

Objectives

- Digital preservation of the original manuscripts for posterity
- Promotion of access and usage for scholars and researchers, without tampering with original copies
- Creation of a digital library as a resource base of the digitized copies of some of the significant manuscript collections of the country
- Creation of standards and procedures for digitization of manuscripts

Methodology

- Pilot Project in five States across the country covering five repositories of manuscripts in the first phase of digitization
- Digitization of 80 lakh Manuscript pages in the second phase in important manuscript repositories all over the country
- Targeting, in the third phase, digitization of another 80 lakhs pages of manuscripts in repositories all over the country
- Digitizing catalogues
- Creating Microfilms from digital images for archival purpose
- Creation of Digital Manuscripts Library for storage and easy access for research.

Tattvabodha lecture, being delivered by Professor Ranjit Sen at Tripura University, Agartala

Digitization Assessment

Digitization 'assessment' considers:

1. Curatorial and conservation concerns related to:
   - the 'robustness' of the source material (it needs special treatment when digitizing, or alternatively does it suffer such things as disbanding)
   - the security implications of out-sourcing the digitization process
2. The other 'physical' and 'content' attributes of the source document
3. Costs of completing the project, with relation to in-house resources and out-sourcing (if allowed)

The aim of the digitization assessment stage is:

- To decide, or confirm decisions, as to whether the document can be digitized from source
- To make a rough assessment of the scanning technique that should be employed and the resolutions, bit depths, etc., that are needed
- To decide bearing in mind security risks, costs, and in-house resources that the work can be completed according to the set standard and within the time frame.

Benchmarking

Benchmarking can be defined as the process undertaken at the beginning of a digitization project that attempts to set the levels used in the capture process to ensure that the most significant information is captured, e.g. setting the resolution or bit depth correctly, full knowledge of the main attributes of the source document. Mission has set some standard requirements to start a digitization programme. They have been compiled in book form, "Guidelines for Digitization of Archival Material", available in print and as a pdf on Mission's website http://www.namami.org. The guideline covers the following areas:

1. **Equipments performance:** It has an important impact on the quality of the image. Equipment from different manufacturers can perform differently, even if the technical capability appears to be identical. Only **Face up Scanners** shall be used to capture images of the manuscripts. Flat bed/ADF/Digital cameras and other touch devices shall not be allowed as they might harm the original state of manuscripts.
2. **Image quality:** Image quality at capture can be defined as the cumulative result of the scanning resolution, the bit depth of the scanned image, the enhancement processes and the compression applied, the scanning device or technique used, and the skill of the scanning operator:
   - **Resolution:** It is determined by the number of pixels used to present the image, expressed in dots per inch (dpi) or pixels per inch (ppi). Increasing the number of pixels used to capture the image will result in a higher resolution and a greater ability to delineate fine details. However, just increasing resolution after certain extent will not result in better quality. The scanning of images hence will take place at 300 dpi, where readability is poor the digitizer should be prepared to go for 600 dpi resolution.
   - **Bit depth:** It is a measurement of the number of bits used to define each pixel. The greater the bit depth used, the greater the number of grey and colour tones that can be expressed. The mission follows three kinds of scanning:
     - *Bitonal scanning* using one bit per pixel to represent black and white.
     - *Grey scale scanning* using multiple bits per pixel to represent shades of grey, the preferred level of grey scale is 8 bits per pixel and at this level the image displayed can be selected from 256 different levels of grey.
     - *Colour scanning* using multiple bits per pixel to represent colour. 24 bits per

pixel is called true colour level, and it makes possible a selection from 16.7 million colours.

- **Illustrated manuscripts:** Illustrations and charts shall be scanned separately and merged with the text at the appropriate location. While capturing images of illustrations especially when they are created using metal such as silver, special care should be taken to avoid oxidation.
- **Image enhancement process:**

1. Original raw image shall be saved as per Raw Master Image Specification.
2. The raw image shall be processed to remove dirt, worm marks, water marks, noise, shadow, scratch marks, skew etc.
3. Adjustment of brightness and contrast, gamma correction, sharpening and blurring, removing patterns and adjusting colors will also be the part of Image Processing.
4. Cleaned image shall be saved as per Clean Master Image Specification.
5. A derivative access image namely PDF-A image will be derived from the cleaned image.

- **Compression:** It is normally used to reduce file size for processing, storage and transmission of digital images. Methods used are for example to abbreviate repeated information or to eliminate information that the human eye has difficulty in seeing. The quality of an image can therefore be affected by the compression techniques that are used and the level of compression applied. Compression techniques can be either 'loss less', which means that a decompressed image will be identical to its earlier state because no information is thrown away when the file size is reduced, or 'lossy' when the least significant information is averaged or discarded in this process. In general, 'loss less' compression is used for master files and 'lossy' compression techniques for access files.

3. **Output Specification**

There shall be three types of images required to be generated for every page of manuscript:

- Master Image (original uncleaned and uncompressed)
- Clean Master (cleaned loss less compressed image)
- PDF-A (derivative lossy image)

The detail specifications of these images are as follows:

Raw Master Image: (Original Digitized Image)

File Format:	Tiff 6.0 or higher
Compression:	Uncompressed
Spatial Resolution:	300/600 dpi, minimum, optical
Subject Metadata:	As per standards fixed by National Mission for Manuscripts
File Naming:	As specified by NMM

Clean Master Image: (Cleaned Image)

File Format:	Tiff 6.0 or higher
Compression:	Loss less compression
Spatial Resolution:	8" X 10" at 300 dpi
Subject Metadata:	As per standards fixed by National Mission for Manuscripts
File Naming:	As specified by NMM

PDF-A Image:

File Format:	PDF
Compression:	Group 4 CCITT lossy compression
Spatial Resolution:	1024 x 768 pixels at 300 Dpi
Subject Metadata:	As per standards fixed by National Mission for Manuscripts
File Naming:	As specified by NMM

Subject Metadata:	As per standards fixed by National Mission for Manuscripts
File Naming:	As specified by NMM

4. **Naming Convention**

The naming of images is an important issue that is handled by the Mission in the most enabling manner. Each manuscript digitized is already documented on the Mission's Electronic Database and the Meta Data (the main fields describing the manuscript) information for each manuscript scanned, is identified by its Manuscript Identification Number (Manus ID) which is generated by the Mission's *Manus Granthavali* software. Thus the Manus ID and the Accession Number, from the institute/repository catalogue where the manuscript is kept and where the digitization is taking place, forms the basis of naming the digitized images of each manuscript page.

5. **Storage specifications**

All Raw master, clean master images and PDF-A images are delivered in reliable and high quality DVDs and hard disk drives with naming convention as decided by the Mission.

6. **Deliverables**

- Two sets of the digitized manuscripts (DVDs and HDD devices) and one copy of PDF-A in DVD is delivered to the respective repositories.
- Each DVD and HDD devices is labeled with Title, Manus ID (to be provided by NMM) & accession number of repository.
- More than one manuscript can be stored in one DVD/HDD as per space available; but if there is not enough space for the next manuscript, it is to stored in another DVD/HDD.
- A DVD/HDD should contain all the manuscript images of the same format only.
- The design of the cover and the packing cost is calculated separately. A sample design is attached with this document.
- Certificate of quality control Team is then taken.
- Quarterly output of work is delivered to NMM.

Quality Assurance

It is imperative that all digitization undergoes a series of quality control analyses at various stages. This is an accepted method of verifying that all reproduction is up to the expected standard. Bearing in mind constraints of time and finances, some form of sampling may be necessary to reduce the costs of this process, as with the National Archives and Records Administration (NARA) which states that a minimum of 10 images or 10% of images (whichever number is higher) need to undergo quality control (these should be selected randomly from the entire collection). Ideally Quality Assurance (QA) must be performed on all master images and their derivatives with each step being fully documented. The types of things one should look for are:

- size of image
- resolution of image
- file format
- image mode (i.e. colour images are in colour, not greyscale)
- bit depth
- details in highlights and shadows
- tonal values
- brightness
- contrast
- sharpness
- interference
- orientation
- noise
- cropped and border areas, missing text, page numbers, etc.
- missing lines or pixels
- text legibility

The overall return should be checked for file name integrity, completeness of job, and overall meeting of project scope. NARA recommends that if more than 1% of images looked at fail the above quality control checks then the job needs to be redone. Quality control parameters are well defined in the Mission. It has conducted meetings on setting up of

quality control standards, the process initiated by Khuda Bakhsh Oriental Public Library, Patna, Bihar. Experts on Digitization and Imaging Technology have come to a conclusion that random checking by Imaging Experts is the best and cheapest solution to keep a check on deliverables by the digitizing Agencies. Mission has adopted the observation and sends imaging experts to digitization sites for quality checking before final delivery.

Having accepted the advantages digitization presents for facilitating access, and the disadvantages digitization has in acting as a substitute for standard preservation methods, it is clear from previous projects that it is most cost-effective to digitize at a master level quality to allow for multiple outputs (e.g. print, access images, etc.) that can be used as alternatives for the original document in the long run.

Institutes covered under the Digitization Project

The Mission has digitized manuscripts in various places throughout the country under the Pilot project and Second Phase, these are:

1. Oriental Research Library, Srinagar, Jammu & Kashmir
2. Kutiyattam Manuscripts, Kerala
3. Siddha Manuscripts, Tamil Nadu
4. Orissa State Museum, Bhubaneswar, Odisha
5. Selected Jain Manuscripts
6. Krishnakant Handiqui Library, Guwahati
7. Hari Singh Gaur University, Sagar
8. Anandashram Sanstha, Pune
9. Himachal Academy of Arts Culture and Languages, Shimla
10. Vrindavan Research Institute, Vrindavan
11. Institute of Asian Studies, Chennai
12. French Institute, Pondicherry
13. Kunda Kunda Jnanapith, Indore
14. Bhogilal Leherchand Institute of Indology, Delhi
15. Akhil Bharatiya Sanskrit Parishad, Lucknow

NMM is digitizing Manuscripts under the Third Phase in the following repositories:

1. Rajasthan Oriental Research Institute, Rajasthan
2. Rashtriya Sanskrit Sansthan, Allahabad
3. Bharat Itihaas Samshodhan Mandal, Pune
4. HMS Central Library, Jamia Hamdard, New Delhi
5. VVBIS & IS, Punjab University, Hoshiarpur

Other Activities

1. **Digital Manuscripts Library**

For the first time in history, all the significant literary, artistic, and scientific works in India is going to be digitally preserved and made easily available for our culture, research, education, and appreciation and also for future generations. The aim is to setup a Digital Manuscripts Library of India which will foster creativity and easy access to all ancient and medieval Indian knowledge in the form of manuscripts of this country. As a first step in realizing this mission, it is proposed to create the Digital Manuscripts Library with a searchable collection of many valuable Manuscripts, predominantly in Indian languages, available at one place. This digital library will also become an aggregator of all the knowledge and digital contents created by other digital library initiatives in India. Very soon we expect that this library would provide a gateway to Indian Digital Manuscripts Libraries in science, arts, culture, music, traditional medicine, vedas, tantras and many more disciplines. The result will be a unique resource accessible to everyone, without regard to socioeconomic background or nationality.

NMM has already collected DVDs and Hard disks containing digital images of 1.05 crore folios of

manuscripts till date and more will be received in future as the work of digitization is going on. The data is not safe if kept in DVD's/HDDs and there are chances of data getting corrupted. The life of the DVD/HDD is not more than 5 years. Hence, the storage solution is an urgent need of the hour to ensure the safety and easy retrieval of data. A server is needed to optimize the storage of the digitized images and also to keep them safe. The copy of digital data needs to be kept in the server as there are chances of loss of data, if not stored in a proper manner. A data server of 100 TB (which can be upgraded to more than 600 TB in future) is needed to be purchased for storing all the digital images in the **digital manuscripts library** which will be linked with the Manuscripts database for the research purpose of the scholars.

NMM is planning to set up a state of the art digital manuscript library at New Delhi with the capacity for 10 users initially (to be expanded upto 100 users) to facilitate access to this knowledge base. Users are expected to access data from a data centre through desktop PCs. New data is expected to be added to the storage servers on a daily basis. It is also required that the data centre adheres to international standards of data storage, redundancy, uptime and availability.

It is also expected that the entire capacity need not be made available during the immediate set up, i.e. the Library can be made operational with a restricted number of users and storage capacity. However, provisions need to be made to ensure scalability of storage to 600 TB and number of users to 100.

2. **Digitization of the New Catalogus Catalogorum**

The Mission has digitized the source material of the New Catalogus Catalogorum for preserving the valuable data in these books. Presently we have completed 200 books and the work is in progress.

3. **Digitization of Manuscripts designated as "National Treasures of India":**

The Mission has started digitizing 45 unique manuscripts selected by Mission's Expert Committee as Manuscript Treasures of India.

4. **Digitization to microfilming:**

NMM has collected around 1.05 crores of digital images of folios valuable Manuscripts and the process is continuing. The images are presently stored in DVDs but for long term storage the images need to be converted to the microfilm form. This will prove beneficial for the security of the data in the long term for many centuries (more than 500 years). It is useful to save the data from physical damage. The microfilming will be beneficial for archival purpose. In this way digital data can be kept safe in relatively less space and may be used by generations to come.

NMM aims to make an archive of the digital data which can be used for centuries by the users for accessing the desired information from Manuscripts. At present, microfilming is the only feasible media for archival storage of the data for the longest period of time. It is the only standard accepted worldwide for archival purpose.

Future plans of digitization

1. Around 4 lakh Manuscripts are targeted to be digitized from different zones within March 2017.
2. The copy of digital data needs to be kept in the server. A data server of 600 TB will be purchased for storing all the digital images of the manuscripts.
3. Work is in progress to form a digital library of manuscripts and linking the library with the manuscripts database for the research purpose of the scholars.

Outreach Programmes

With a view to spreading awareness about manuscripts, the importance of preserving them and facilitating documentation, the NMM has initiated a number of programmes including seminars, lectures advertisements, publication of newsletter and reports, etc. The objectives of the outreach programmes are:

- Creation of a platform for discussion, debate and critical engagement with manuscripts,
- Promotion of awareness and understanding of the manuscript heritage of India,
- Generation of interest, awareness and knowledge of manuscripts among the general populace.

Seminars Held in 2011 - 2012

Date	Topic	Collaborating Institution/Venue
16th – 18th November, 2011	National Seminar on "Manuscripts Related to Architecture"	ORI, University of Kerala, Thiruvananthapuram, Kerala
28th – 30th November, 2011	National Seminar on "Less-known Grammatical Manuscripts, Grammarians and Theories"	CASS, University of Pune, Pune, Maharashtra
14th – 15th December, 2011	National Seminar on "Manuscripts available in Garhwal"	Dept. of Sanskrit, HNB Garhwal University, Pauri Garhwal, Uttarakhand
15th – 19th December, 2011	Seminar on "Manipuri identity as reflected in manuscripts (*puyas*)"	Manipur State Archives, Imphal Vanue: Moreh Trade Centre, Moreh, Manipur
19th – 21st December, 2011	National seminar on "History of Medieval Deccan as Reflected in Arabic and Persian Manuscripts"	Andhra Pradesh State Archives, Hyderabad, Andhra Pradesh
27th – 30th December, 2011	National seminar on "Advaita Vedanta and Nyaya"	Manuscript Library, Calcutta University, Kolkata
19th – 21st January, 2012	National seminar on "History of Tripura in the medieval period as reflected in manuscripts"	Dept. of History, Tripura University, Tripura
31st Jan. – 3rd Feb. 2012	National seminar on "Oral and written forms: literary tradition of India"	Veena Foundation, Chennai
2nd – 4th February, 2012	National Seminar on "Manuscript Heritage on Astronomy"	ORI, Shri Venkateshwara University, Tirupati, Andhra Pradesh
10th – 12th February, 2012	National seminar on "Siddha manuscripts"	Govt. Museum Chennai Egmore, Chennai
16th – 19th February, 2012	International seminar on "Prakrit manuscripts"	L.D. Institute of Indology, Ahmedabad, Gujarat
1st – 3rd March, 2012	International seminar on "Colonial note from the continuity of culture: emerging study of manuscriptology"	CSELMF, Dept. of Bengali, Assam University, Silchar, Assam
12th – 14th March, 2012	National seminar on "Vedalakshana Texts: search and analysis"	Rabindra Bharati University, Kolkata

Public Lectures Held in 2011 – 2012

Date	Collaborating Institution & Venue	Topic	Speaker	Chairperson
8th August, 2011	Deptt. of Sanskrit, Gauhati University, Assam Venue: Phanidhar Dutt Seminar Hall, Gauhati University	The Works of Anandaram Baruah: A Reappraisal	Prof. Ashok Kumar Goswami Former Head, Deptt. of Sanskrit, G.U., Assam	Prof. Mohammad Tahar Former Head, Deptt. of Geography, G.U., Assam
28th August, 2011	Deptt. of Sanskrit, Pali & Prakrit, Vishwa Bharati University, West Bengal Venue: Lipika Auditorium, Vishwa Bharati University	Some Important Manuscripts at the Disposal of Kshitindranath Thakur Centre of Rabindra Bharati University	Prof. Karunasindhu Das, V.C., Rabindra Bharati University, Kolkata	Prof. Arun Kumar Mondal Head, Deptt. of Sanskrit, Pali & Prakrit, Vishwa Bharati University
9th November, 2011	NMM, New Delhi Venue: Gandhi Darshan, Raj Ghat, New Delhi	Representation of Knowledge in the Sanskrit Tradition: Texts, Formats and Trends	Prof. R. N. Sharma Deptt. of Indo-Pacific Languages and Literature, Hawaii University, USA	Prof. R. I. Nanavati Former Director, Oriental Research Institute, M.S. University, Vadodara
18th November, 2011	Centre for Heritage Studies, Hill Palace, Tripunithura, Kerala Venue: Darul Huda Islamic University, Chemmad, Kerala	Anti-colonial Aspects in Arabic Manuscripts and Arabi-Malayalam Literature in Kerala with Special Reference to 16th to 19th Centuries	Prof. N.A.M. Abdul Khader Deptt. of Arabic, University of Calicut, Kerala	Dr. Bahauddeen Muhammad Nadwi V.C., Darul Huda Islamic University
9th December, 2011	हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी, शिमला, हिमाचल प्रदेश, स्थान: चम्बा (जिला मुख्यालय)	आयुर्वेद और पाण्डुलिपियाँ	श्री शाम सिंह राजपुरोहित (रा.प्र.से.) निदेशक, राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान, जोधपुर, राजस्थान	प्रो. गोकुलचन्द्र शर्मा व्याकरण, दर्शन एवं आयुर्वेदाचार्य, घषाहट्टी, शिमला
24th December, 2011	L.D. Institute of Indology, Ahmedabad, Gujarat	Lost Text and Live Context: Bhāsarvajña of Kaśmīra to his Nityajñānviniścaya	Prof. M.A. Dhaki Ahmedabad	Dr. Surendra Mohan Mishra Reader, Dept. of Sanskrit, Pali and Prakrit, Kurukshetra University, Haryana
13th January, 2012	Dept. of Bengali, Assam University, Silchar, Assam	Manuscripts of Rabindranath Tagore	Prof. Vishwanath Roy Dept. of Bengali, Calcutta University, Kolkata	Prof. Tapadhir Bhattacharjee, V.C., Assam University, Silchar
21st January, 2012	Keladi Museum & Historical Research, Keladi, Dist.-Shimoga, Karnataka Venue: Brusam, Dist.-Shimoga, Karnataka	Śivatattvaratnākara of Keladi Basavarāja	Prof. S.R. Leela Sanskrit Scholar & MLC, Karnataka	Prof. Bari, V.C., Karnataka University, Shimoga, Karnataka

Date	Collaborating Institution & Venue	Topic	Speaker	Chairperson
9th February, 2012	NMM New Delhi Venue: NMM Hall, 11-Mansingh Road, New Delhi - 1	Mizo language and literature	Prof. Laltiuangliana Khiangte Prof. of Language and Literature, Dept. of Mizo Language, Mizoram University, Aizwal	Mr. Zoramsangliana Hon. Minister, Transport, Art & Culture, Printing & Stationary, Govt. of Mizoram
9th February, 2012	NMM New Delhi Venue: NMM Hall, 11-Mansingh Road, New Delhi - 1	Tribal Writer's Role in the Preservation of Mizo Manuscripts (To commemorate the quasqui centennial jubilee of Rev. Liangkhaia	Mr. Zoramdinthara Asstt. Professor Pu College Aizwal	Shri R.M. Nawani IFA, NMM, New Delhi
10th February, 2012	Scindia Oriental Research Institute, Vikram University, Ujjain, Madhya Pradesh Venue: Svarnajayanti Sabhagar, Vikram University	सांख्य दर्शन की तत्त्वमीमांसा	Prof. Pyari Mohan Pattnaik Prof. of Sarvadarshan, Shri Jagannath Sanskrit University, Puri, Odisha	Prof. T.R. Thapak V.C., Vikram University, Ujjain
27th February, 2012	NMM, New Delhi Venue: Lecture Hall, 11 Mansingh Road, New Delhi - 1	Manuscripts and Textual Study of Nāṭyaśāstra	Prof. R.V. Tripathi V.C., Rashtriya Sanskrit Sansthan (Deemed University), New Delhi	Dr. Kapila Vatsyayan Chairperson, IIC East Asia Project, New Delhi
29th February, 2012	Dept. of Purana Itihasa, Sampurnand Sanskrit University, Varanasi, U.P. Venue: Saccha Adhyatma Sanskrit Mahavidyalaya, Allahabad, U.P.	Kālanirṇayavimarśah	Prof. Kishore Chandra Mahapatra HoD, Dharmashastra, Shri Jagannath Sanskrit University, Puri	Prof. Chandradev Mishra Principal, Saccha Adhyatma Sanskrit Mahavidyalaya, Allahabad, U.P.
3rd March, 2012	Dept. of Sanskrit, Pali & Prakrit, Rani Durgavati Vishwavidyalaya, Panchapedhi, Jabalpur, Madhya Pradesh	पाण्डुलिपियों का योगक्षेम	Dr. Bal Krishna Sharma Director, Scindia Oriental Research Institute, Ujjain, U.P.	Prof. Ramrajesh Mishra V.C., Rani Durgavati Vishwavidyalaya
18th March, 2012	Dept. of Urdu, Shibli National P.G. College, Azamgarh, U.P.	Impacts of Sir Syed Movement	Dr. Abu Sufian Islahi Dept. of Arabic, Aligarh Muslim University, U.P.	Dr. Muzaffar Ahsan Islahi Former Secretary, Students Union, Aligarh Muslim University, U.P.
21st March, 2012	APGOML, Osmania University Campus, Hyderabad, Andhra Pradesh	Rasadhyaya of Nāṭyaśastra with Abhinava Bharati	Prof. Ramachandrudu Former HoD of Sanskrit, Osmania University, Hyderabad	Dr. K. Aravinda Rao Former Director General of Police, Govt. of Andhra Pradesh

Manuscript Studies

The manuscript heritage of India is unique in its linguistic and scriptural diversity. Dearth of skill or expertise in scripts in contemporary researchers has, however, posed a threat to the study and understanding of this textual heritage. To address this, the NMM has developed a detailed framework, with a view to train young scholars and researchers in Indian scripts and manuscript studies. Through workshops and encouraging introduction of manuscriptology courses in universities, the NMM seeks to contribute directly to the production of a skilled resource pool in manuscript studies.

Dr. Abu Sufyan Islahi, Dept. of Arabic, Aligarh Muslim University delivering Tattvabodha Lecture at Shibli National College, Azamgarh, U.P.

Manuscriptology Workshops Held in 2011 – 2012

Date	Name of the Workshop	Collaborating Institute & Venue	Details of the Training
15th – 29th July, 2011	Basic Level Workshop on Manuscriptology and Paleography	Odisha State Museum, Bhubaneswar, Odisha	Scripts taught: Kufic, Naskh, Suls, Nastaliq & Shikasta
13th – 17th September, 2011	Basic Level Workshop on Manuscriptology & Paleography	Deptt. of Manuscriptology, Kannada University, Hampi, Karnataka	Scripts taught: Kannada, Modi, Tigelleri & Amaragannada
1st – 21st November, 2011	Basic Level Workshop on Manuscriptology & Paleography	Akhil Bharatiya Sanskrit Parishad, Lucknow, Uttar Pradesh	Scripts taught: Sarada, Newari & Brahmi
10th – 30th November, 2011	Basic Level Workshop on Manuscriptology & Paleography in Persi, Arabic and Urdu	Deptt. of Urdu, University of Mumbai, Maharashtra	Scripts taught: Kufic, Naskh, Suls, Nastaliq & Shikasta
12th Oct. – 13th Nov., 2011	Advance Level Workshop on Manuscriptology & Paleography in Persi, Arabic & Urdu	Deptt. of Arabic, University of Calicut & Centre for Heritage Studies, Deptt. of Cultural Affairs, Govt. of Kerala, Kerala	Scripts taught: Nafkhi, Sulusi, Kufic, Diwani, Rainani, Ruq'i, Sunnani & Malayalam
7th – 21st December, 2011	Basic Level Workshop on manuscriptology and Paleography	Oriental Research Institute, Shri Venkateshwara University, Tirupati, Andhra Pradesh	Script taught: Grantha, Nandinagari, Kannada, Telugu, Malayalam and Tamil

Date	Name of the Workshop	Collaborating Institute & Venue	Details of the Training
29th November, 2011 – 7th January, 2012	Advance Level Workshop on Manuscriptology and Paleography	Shri Somnath Sanskrit University, Gujarat	Script taught: Brahmi, Sharada, Newari, Nagari, Grantha and Malayam
21st – 30th January, 2012	Basic Level Workshop on Manuscriptology and Paleography and Exhibition on Chakma Manuscripts (During Exhibition 350 Chakma manuscripts were displayed)	Kamala Nagar College, Kamala Nagar Autonomous District, Mizoram	Script taught: Brahmi, Burmise, Chakma and Old Bengali (Gaudi)
27th January – 5th February, 2012	Basic Level Workshop on Manuscriptology and Paleography	Oriental Research Institute, Jodhpur, Rajasthan	Script taught: Brahmi, Newari, etc.
1st February – 16th March, 2012	Advance Level Workshop on Manuscriptology and Paleography	Andhra Pradesh Government Oriental Manuscript Library, Hyderabad	Script taught: Brahmi, Telugu, Grantha and Sharada
1st – 22nd March, 2012	Basic Level Workshop on Manuscriptology	Department of Urdu, University of Jammu, Jammu and Kashmir	Script taught: Kufiq, Naskh, Suls, Nastaliq and Shikasta
1st – 21st March, 2012	Basic Level Workshop on Manuscriptology and Paleography	Oriental Research Institute, University of Kerala, Thiruvananthapuram, Kerala	Script taught: Brahmi, Grantha, Vattezhuthu and Tamil
24th March – 9th April, 2012	Basic Level Workshop on Manuscriptology and Paleography	Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi, U.P.	Script taught: Brahmi, Sharada, Newari, etc.

Exhibition of Chakma Manuscripts, organised during Manuscriptology and Palaeography Workshop (21st – 30th January, 2012) held at Kamalanagar College, Mizoram

Publications

Publication of unpublished manuscripts, critical edition of manuscripts, seminar papers, lectures etc. occupy a position of prime emphasis in the scheme of things undertaken by the NMM. The NMM has started five primary series – *Tattvabodha* (lecture papers), *Kritibodha* (critical editions), *Samikshika* (seminar papers), *Prakashika* (publication of unpublished rare manuscripts) and *Samrakshika* (papers on conservation) - besides other publications. So far NMM has published three volumes under *Tattvabodha* series, two volumes under *Kritibodha*, three under *Samikshika* and two under *Samrakshika*. *Volumes I, II and III have been published under Prakashika Series.*

Publications of the NMM

TATTVABODHA PART – I, II & III

Tattvabodha, the monthly lecture series launched by the National Mission for Manuscripts in January 2005, has established itself as a forum for intellectual debate and discussion. Eminent scholars representing different aspects of Indian knowledge systems address and interact with audiences both in Delhi and other centres across the country. The Mission publishes a compilation of these lectures by the same name, *Tattvabodha*. Three volumes of *Tattvabodha* have been published so far.

SAMRAKSHIKA PART – I & II

National Mission for Manuscripts organises national level Seminars as part of its outreach programme. The papers presented in these seminars are published under the title, *Saṁrakṣikā* (conservation related) and *Samikṣikā* (research oriented) series.

The first volume of *Saṁrakṣikā*: Indigenous Methods and Manuscript Preservation, published in September 2006, contains proceedings of the seminar 'Oral Traditions and Indigenous Methods of Preservation and Conservation of Manuscripts' organised at Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA), New Delhi in February 2005. The papers in this volume emphasize on indigenous techniques and methods of conservation and the need to revive these as they are beneficial to manuscript conservation. Another volume, *Saṁrakṣikā* Vol II: Rare Support Materials for Manuscripts and their Conservation has been published in 2010.

SAMIKSHIKA PART – I, II, III, IV & V

Samikṣikā-I contains proceedings of the seminar, 'Buddhist Literary Heritage in India: Text and Context ' organized at Calcutta University Manuscript Resource Centre, Kolkata in July 2005. *Samikṣikā*-II is an anthology of papers presented at a national seminar on the Mahābhārata, organized by the National Mission for Manuscripts, in February 2007. The volume is on Text and Variantions of the Mahābhārata: Contextual, Regional and Performative Traditions.Three more volumes of the *Samikṣikā* have already been published.

KIRTIBODHA PART – I & II

National Mission for Manuscripts has taken the initiative of publishing critical editions of rare and previously unpublished texts under the title *Kṛtibodha*.The first of the *Kṛtibodha* series is *Vādhūlagṛhyāgamavṛttirahasyam* of Nārāyaṇa Miśra critically edited by Prof. Braj Bihari Chaubey. The text is a versified commentary on the *Vādhūlagṛhyāgamavṛtti*, which itself is a short commentary on *Vadhulagṛhyasutra*. The text is important for the wealth of information it contains on domestic rites and rituals, especially related to *Gṛhya* and *Smartakarma*. It also has reference to other important texts such as *Katha-Āranyaka*, *Vadhulāgama* and *Vrata Sangraha* which have so far remained unknown. Another volume in this series, which has already been published, is *Kṛtibodha* II: *Srauta Prayogakḷpti* of Acarya Sivasrona.

PRAKASHIKA PART – I, II & III

Besides publishing the critical volumes of unpublished manuscripts, NMM has taken up a project wherein unpublished, rare and important manuscripts are published. Three volumes under the series, *Prakāśika* have been published so far.

CATALOGUE

The Mission not only encourages documentation of manuscript collections all over the country but also plans to publish them. NMM has a programme of publishing descriptive catalogues of all the collections of the Manuscript Resource Centres working with the Mission.

The Mission has published a catalogue of the exhibition of Indian manuscripts at the Frankfurt Book Fair, Germany. The catalogue covers several aspects of Indian manuscripts. It is divided into 6 sections; 'From Clay to Copper' giving us an idea of the variety of materials on which texts are found; 'The Making of a Manuscript' with information on styluses and inkpots; 'Fields of Learning' which provides an overview of the different areas which manuscripts deal in; 'Veneration, Submission, Worship' shows us the importance of the word which is considered sacred; the fifth section, 'Word and Image' provides us a glimpse of illustrated manuscripts in the country; lastly, 'Royal Commands and Plain Records' is an indicator of the fact that manuscripts were an integral part of lives of everyone from the King to the common man.

Vijñānanidhi: Manuscript Treasures of India, A catalogue of select manuscripts declared '*Vijñānanidhi*: Manuscript Treasures of India' has also been prepared by the Mission. This was released by Smt. Ambika Soni, Minister for Tourism and Culture in February 2007. NMM has also published illustrated catalogue of rare Guru Granth Sahib manuscripts, *Shabad Guru* in Collaboration with National Institute of Punjab Studies, New Delhi.

Mission Directory

Prof. Dipti S. Tripathi
Director

Sri R. M. Nawani
Internal Financial Advisor

Sri S. P. Swamy
Sr. Accounts Officer, Coordinator (MRC & MCC)

Documentation

Dr. Ganesh Prasad Panda
Coordinator

Documentation Assistants

Dr. Prabhat Kumar Das

Shri Shiv Prasad Tripathi

Dr. Avadh Kishore Chaudhary

Md. Abdur Razique

Shri Ramavatar Sharma

Shri Shishir Kumar Padhy

Shri Lakshmidhar Panigrahi

Ms. Pramita Mishra

Dr. Sridhar Barik

Cataloguers

Mrs. Lata Uttam Gogna

Mrs. Mamta Lekhwar

Mrs. Sheeja Jiji

Mrs. Deepti Negi

Mrs. Laxmi Negi

Shri Mukesh Janotra

Shri Deepak Kochar

Survey

Dr. Dillip Kumar Kar
Coordinator

Post-Survey

Dr. N. C. Kar
Coordinator

Conservation

Dr. Kirti Srivastava
Coordinator

Shri Pooran Chandra
Conservator

Ms. Albeena
Asstt. Conservator

Ms. Archana Gehlot
Technical Asstt.

Shri Mithlesh Kumar Singh
Technical Asstt.

Digitization

Shri Biswaranjan Mallick
Coordinator

Shri Pranaya Kumar Mishra
Programmer

Mohammad Mansoor Akhtar
Programmer

Mrs. Sharmistha Sen Mallick
Assistant Programmer

Research & Publication

Dr. Sanghamitra Basu
Coordinator

Mrinmoy Chakraborty
Editor

Accounts and Office Support

Ms. Snehlata
Accounts Assistant

Mrs. Deepa Chopra
Personal Assistant

Group D

Smt. Kamla Rawat

Shri Mohit Kumar Karotia

Smt. Sushila Devi

Committees Governing the National Mission for Manuscripts

National Empowered Committee

Chairperson

Minister, Ministry of Culture, GoI

Official Members

1. Secretary, Ministry of Culture, GoI
2. Member Secretary, IGNCA, New Delhi
3. Joint Secretary, Ministry of Culture, GoI
4. Director General, National Archives of India, New Delhi
5. Director, National Mission for Manuscripts – Member Secretary

Non-Official Members

Selection under process

Executive Committee

Chairman

Secretary, Ministry of Culture, GoI

Official Members

1. Member Secretary, IGNCA, New Delhi
2. Joint Secretary, Ministry of Culture, GoI
3. Director, National Mission for Manuscripts- Member Secretary

Non-Official Members

Selection under process

Finance Committee

Chairman

Financial Advisor, Ministry of Culture, GoI

Members

1. Member Secretary, IGNCA
2. Joint Secretary, Ministry of Culture, GoI
3. Director, Finance, Ministry of Culture, GoI
4. Director, National Mission for Manuscripts - Member Secretary

Project Monitoring Cell

Chairman

Joint Secretary, IGNCA

Official Members

1. Director, Ministry of Culture, GoI
2. Director, NMM - Member Secretary

Non-Official Members

1. Prof. Ashok Kumar Kalia, Director, Akhil Bharatiya Sanskrit Parishad, Lucknow
2. Prof. Radhavallabh Tripathi, Vice Chancellor, Rashtriya Sanskrit Sansthan, Janakpuri, Delhi
3. Dr. Jitendra B. Shah, Director, Lalbhai Dalpatbhai Institute of Indology, Ahmedabad
4. Dr. Imtiaz Ahmed, Director, Khuda Bakhsh Library, Patna
5. Prof. Venkataramana Reddy, Director, Oriental Research Institute, Venkateswara University, Tirupati
6. Prof. S. D. Poddar, HoD, Dept. of History, Tripura University, Tripura

Our Partners
Manuscript Resource Centres (MRCs)

To create an extensive network for survey, documentation, cataloguing and awareness among the people and to assist the keepers and stakeholders of manuscripts, the Mission has set up Manuscript Resource Centres (MRCs) across the country in universities, renowned research institutions and reputed non-governmental organizations engaged in work relating to manuscripts.

Organization of the MRCs

- Each MRC has a core team of personnel trained in various levels of expertise like cataloguing, editing and deciphering scripts
- The activities of each MRC are administered and coordinated by a project coordinator from the existing staff of the Institution
- To source the data through field surveys and document the manuscripts, two types of personnel work with the MRC—scholars engaged in the field for survey and the computer entry personnel to enter data in the Manus Granthavali software
- To set up a Manuscript Registration Centre equipped with two computers and a printer with internet facilities and the prescribed Manus Granthavali software where manuscript data is entered for eventual integration into the National Electronic Database of Manuscripts at the Mission Office
- To find resource persons to decipher and edit manuscripts through organizing workshops on manuscriptology and paleography
- The funds for each MRC are disbursed according to its capacity and satisfactory output

Activities of MRCs

- MRCs engage trained researchers and students in the field of Manuscriptology for survey and documentation
- MRCs help in the National Surveys at the State level
- MRCs network with private and institutional manuscript custodians
- MRCs find scholars to decipher manuscripts and teach scripts and other aspects of manuscriptology and paleography
- MRCs coordinate with the NMM office in Delhi to organize *Tattvabodha* lectures and national seminars

Manuscript Partner Centres (MPCs)

Apart from the Manuscript Resource Centres, the Mission has created a network of Manuscript Partner Centres. They are affiliated with important manuscript repositories for the documentation and cataloguing of their own collections. Their work involves basic cataloguing through Manus Granthavali software done by their own staff on a pro-rata basis or by outsourcing the task.

Documentation of Collections Abroad

Mission had been preparing the ground for the documentation of collections located in repositories abroad. More than 70 institutions were contacted in 2006. After a gap of five years, the Mission has been in the process of drawing up a project for coordinating with the SAARC nations, to document Indian manuscripts in the various South Asian countries. It is expected that in 2012–13, this exercise in international networking and documentation of collections abroad will begin to yield tangible results in terms of the expansion of the National Electronic Database and the digitization of particularly rare and valuable Indian manuscripts.

Strategy

- Establishing contact with known repositories of Indian manuscripts in Europe, USA and Asia
- Sending the appropriate formats on which our manuscript data is collected
- Sending the Manus Granthavali software for computerization of data
- Helping repositories locate scholars in their areas who can read and decipher as yet un-catalogued Indian manuscripts
- Collecting catalogues where such catalogue of Indian manuscripts exist
- Digitize the Indian manuscripts available in collections abroad

List of Manuscript Resouce Centres (MRCs)

State	Sl. No.	Name of the MRCs
Andhra Pradesh	1.	**A.P. Govt. Oriental Manuscripts** Library and Research Institute Jama-I-Osmania, Osmania University Campus Hyderabad – 500007 Andhra Pradesh
	2.	**Oriental Research Institute** Sri Venkateswara University Tirupati-517 502 Andhra Pradesh
Assam	3.	**B.C. Gupta Memorial Library** Guru Charan College Silchar Assam – 788 004
	4.	**Institute of Tai Studies and Research** Moranhat Dist. - Sibsagar Assam
	5.	**Krishna Kanta Handiqui Library** Gauhati University Gopinath Bardolai Nagar Guwahati Assam
Bihar	6.	**Kameswar Singh Darbanga Sanskrit University** Kameswar Nagaram Darbhanga – 846 004 Bihar

State	Sl. No.	Name of the MRCs
Bihar	7.	**Khuda Bakhsh Oriental Public Library** Ashok Rajpath Patna – 800 004 Bihar
	8.	**Nava Nalanda Mahavihara** Nalanda – 803111 Bihar
	9.	**Patna Museum** Vidyapati Marg Patna Bihar
	10.	**Sri Dev Kumar Jain Oriental** Research Institute Devashram Mahadeva Road Arrah– 802 301 Bihar
Chhattisgarh	11.	**Department of Culture and Archaeology** Raipur Chhattisgarh
Delhi	12.	**Bhai Vir Singh Sahitya Sadan** Bhai Vir Singh Marg Gole Market New Delhi-1 Delhi
	13.	**B.L. Institute of Indology** Vijay Vallab Smarak Complex 20th KM, GTK Road P.O. - Alipur Delhi-36 Delhi
Gujarat	14.	**Lalbhai Dalpatbhai Institute of Indology** Navarangpur Near Gujarat University Ahmedabad -380 009 Gujarat
	15.	**Shree Dwarkadhish Sanskrit Academy and Indological Research Institute** Dwaraka Gujarat
	16.	**Shri Satshrut Prabhavana Trust** 580, Juni Manekwadi Bhavnagar - 364001 Gujarat
Haryana	17.	**Department of Sanskrit Pali and Prakrit** **Kurukshetra University** Kurukshetra-136119
Himachal Pradesh	18.	**Himachal Academy of Arts** **Culture and Languages** Cliff-End Estate Shimla- 171001 Himachal Pradesh

State	Sl. No.	Name of the MRCs
Himachal Pradesh	19.	**Library of Tibetan Works and Archives Gangchen Kyisong** Dharamshala – 176215 Himachal Pradesh
Jammu & Kashmir	20.	**Central Institute of Buddhist Studies** Choglamsar Leh (Laddak)-194001 Jammu & Kashmir
	21.	**Directorate of State Archaeology, Archives & Museum** Stone Building, Old Secretariat Srinagar – 190001 Jammu and Kashmir
Karnataka	22.	**Kannada University** Hampi Vidyaranya Hospet Tq. Dt- Bellary Karnataka – 583 276
	23.	**Mahabharata Samshodhana Pratisthan** 1/ E, 3rd Cross Girinagar 1st Phase Bengaluru – 560 085 Karnataka
	24.	**National Institute of Prakrit Studies & Research** Shrutakevali Education Trust Shravanabelagola – 573 135, Dist. - Hassan Karnataka
	25.	**Oriental Research Institute University of Mysore** Kautilya Circle Mysore – 570005 Karnataka
	26.	**Keladi Museum & Historical** Research P.O. Keladi Sagar Tq Dist. - Simoga Karnataka
Kerala	27.	**Centre for Heritage Studies** Hill Palace Thripunithura Dist- Ernakulam Kerala
	28.	**Oriental Research Institute & Manuscripts Library** University of Kerala Kariavattom Thiruvananthapuram - 695585 Kerala

State	Sl. No.	Name of the MRCs
Kerala	29.	**Thunchan Memorial Trust** Thunchan Paramba Tirur – 676101 Dist. – Mamlapuram Kerala
Madya Pradesh	30.	**Dr. Harisingh Gour University** Gour Nagar Sagar-470003 Madhya Pradesh
	31.	**Kund-Kund Jnanapith** 584, M.G. Road Tukoganj Indore – 452 001 Madhya Pradesh
	32.	**Scindia Oriental Research Institute** Vikram University Ujjain Madhya Pradesh
Maharashtra	33.	**Anandashram Samstha** 22, Budhwar Peth Pune – 411 002 Maharashtra
	34.	**Barr. Balasaheb Khardekar Library** Shivaji University Kolhapur Maharashtra
	35.	**Bhandarkar Oriental Research Institute** Deccan Gymkhana Pune-411 037 Maharashtra
	36.	**Kavikulaguru Kalidasa** Sanskrit University Baghla Bhawan Sitalwadi Manda Road Ramtek – 441106 Maharashtra
Manipur	37.	**Manipur State Archives** Keishampat Imphal - 795 001 Manipur
Odisha	38.	**Odisha State Museum** Museum Building Bhubaneswar Odisha
	39.	**Sanskrit Academy of Research for Advanced Society** through Vedic & Allied Tradition of India (SARASVATI) Sarasvati Vihar Barpada Bhadrak – 756 113 Odisha

State	Sl. No.	Name of the MRCs
Puducherry	40.	**French Institute, Puducherry** 11, Saint Louis Street PB-33 Puducherry-605001
Punjab	41.	**Viswesvarananda Viswabandhu** Institute of Sanskrit & Indological Studies Sadhu Ashram Hoshiarpur-146021 Punjab
Rajasthan	42.	**Rajasthan Oriental Research Institute** P.W.D. Road Jodhpur – 342011 Rajasthan
Tamil Nadu	43.	**Department of Archaeology** Tamil Valarchy Valagam Halls Road Egmore Chennai- 600 008
	44.	**Department of Tamil Literature** University of Madras Marina Campus Chennai – 600 005 Tamil Nadu
	45.	**Sri Chandrashekharendra Saraswati Viswa Mahavidyalaya** (Deemed University) Enathur Kanchipuram – 631561
	46.	**Tanjore Maharaja Serfoji's Saraswati Mahal Library** Tanjavur – 613 009 Tamil Nadu
Tripura	47.	**Department of History** Tripura University Suryamani Nagar Tripura West
Uttar Pradesh	48.	**Hastalekhagar evam Sangrahalaya** **K.M. Institute of Hindi Studies and Linguistics** B.R. Ambedkar University Paliwal Park Agra Uttar Pradesh
	49.	**Rampur Raza Library** Hamid Manzil Rampur – 244 901 Uttar Pradesh
	50.	**Sampurnananda** **Sanskrit Visvavidyalaya** Varanasi – 221001 Uttar Pradesh

State	Sl. No.	Name of the MRCs
Uttar Pradesh	51.	**Vrindavan Research Institute** Raman Reti Vrindavan-281121 Uttar Pradesh
	52.	**Akhila Bharatiya Sanskrit Parishad** Mahatma Gandhi Marg Hazratganj, Lucknow Uttar Pradesh
	53.	**Chaudhary Charan Singh University** University Road Meerut – 200 005 Uttar Pradesh
	54.	**Mazahar Memorial Museum** Bahariabad Ghazipur Uttar Pradesh
Uttarakhand	55.	**Department of Sanskrit** HNB Garhwal University Pauri Garhwal – 246 001 Uttarakhand
	56.	**Uttaranchal Sanskrit Academy** Near Zila Panchayat Office Haridwar – 249 401 Uttarakhand
West Bengal	57.	**Manuscript Library** Hardinge Building, 1st Floor, Senate House 87/1, College Street, University of Calcutta Kolkata-700073 West Bengal

Manuscript Conservation Centres (MCCs)

Organization of the MCCs

- Each MCC has a team of trained conservators and specialists in the field of manuscript conservation
- The activities of each MCC are administered and coordinated by a Project Coordinator from the existing staff of the Institution
- Each MCC has a laboratory with at least basic facilities to undertake manuscript conservation
- Each MCC assists a number of institutions in varying degrees to provide basic preventive conservation care for their manuscript collections
- MCCs provide training in preventive and curative conservation to custodians of manuscripts all over the country
- MCCs conduct outreach campaigns to promote knowledge of basic conservation of manuscripts

Tattvabodha lecture on 10th Feb, 2012, organised at Scindia Oriental Research Institute, Vikram University, Ujjain

- The skills of the conservators working for MCCs are regularly updated with workshops and training sessions

Performance Summary of the MCCs

- Basic conservation laboratories established in all MCCs
- Core team of staff in each MCC created from trained staff in varied levels of expertise
- Systematic increase in the preventive conservation drives of the MCCs
- Outreach programmes expanded to cover more institutions in providing vital care and understanding of conservation issues
- MCCs identified on the basis of their infrastructure, past performance and expertise to provide curative assistance to collections and institutions

Manuscript Conservation Centres (MCCs)

State	Sl. No.	Name of the MCCs
Andhra Pradesh	1.	**A. P. State Archives and Research Institute** Tarnaka Hyderabad-7 Andhra Pradesh
	2.	**Oriental Research Institute,** Sri Venkateswara University Tirupati -517507 Andhra Pradesh
	3.	**Salarjung Museum** Salarjung Marg Hyderabad – 500002 Andhra Pradesh
Arunachal Pradesh	4.	**Tawang Monastery** Dist. - Tawang Arunachal Pradesh
Assam	5.	**B.C. Gupta Memorial Library** Gurucaharan College Silchar - 4 Assam
	6.	**Krishna Kanta Handique Library** Gauhati University Gopinath Bardolai Nagar Guwahati – 781014 Assam
Bihar	7.	**Khuda Bakhsh Oriental Public Library** Ashok Rajpath Patna – 800 004 Bihar
	8.	**Patna Museum** Vidyapati Marg Patna Bihar
	9.	**Sri Dev Kumar Jain Oriental Research Institute** Devashram Mahadeva Road Arrah– 802 301 Bihar

State	Sl. No.	Name of the MCCs
Chhattisgarh	10.	**Directorate of State Culture and Archaeology,** Chhattisgarh Raipur Chhattisgarh
Delhi	11.	**B.L. Institute of Indology** Vijay Vallab Smarak Complex 20th KM, GTK Road P.O. – Alipur Delhi-36
	12.	**Indira Gandhi National Centre for the Arts** Janpath New Delhi –110001
Gujarat	13.	**Lalbhai Dalpatbhai Institute of Indology** Navarangpur Near Gujrat University Ahmedabad - 380 009 Gujarat
Himachal Pradesh	14.	**Himachal State Museum** Chaura Maidan Shimla Himachal Pradesh PIN: 171 004
Haryana	15.	**Dept. of Sankskrit, Pali & Prakrit** Kurukshetra University Kurukshetra Haryana
Jammu & Kashmir	16.	**Central Institute of Buddhist Studies** Choglamsar Leh (Ladakh) – 194104 Jammu & Kashmir
Karnataka	17.	**Department of Manuscriptology** Kannada University Hampi Vidyaranya Dist. – Bellary Karnataka – 583 276
	18.	**INTACH Chitrakala Parishath** Art Conservation Centre Kumara Krupa Road Bengaluru – 560 001 Karnataka
	19.	**Karnataka State Archives** Room No. 9, Ground Floor Vidhan Saudha Bengaluru – 1 Karnataka
	20.	**Keladi Museum & Historical Research,** P.O. – Keladi Sagar Tq. Dist. – Simoga Karnataka PIN: 577 401

State	Sl. No.	Name of the MCCs
Karnataka	21.	**National Institute of Prakrit Studies and Research** Shri Davala Teertham Shravanabelagola Dist. – Hassan Karnataka
	22.	**Sri Vadiraja Research Foundation** Geeta Mandir Sri Puthige Matha Car Street Udupi Karnataka PIN: 576 101
Kerala	23.	**Centre for Heritage Studies** Hill Palace Thripunithura Ernakulam Kerala
	24.	**Mural Painting Conservation Research and Training Centre** Hill Palace Musuem Premises Tripunithura Ernakulam Kerala
	25.	**Regional Conservation Laboratory** Cotton Hill Road P.O. – Saothamangalam Thiruvananathapuram-695010 Kerala
	26.	**Thunchan Memorial Trust** Thunchan Parambu Tirur – 676 101 Dist. – Malapurram Kerala
Madhya Pradesh	27.	**Kund Kund Jnanpith** Devi Ahilya University 584, M. G. Road Tukoganj Indore – 452 001
Maharashtra	28.	**Bhandarkar Oriental Research Institute** Deccan Gymkhana Pune–411 037 Maharashtra
Manipur	29.	**Manipur State Archives** Keishampat Imphal – 795 001 Manipur
Odisha	30.	**AITIHYA** Plot No. 4/330, 1st Floor P.O. Sisupala Gada (Near Gangua Bridge, Puri Road), Bhubaneswar – 2 Odisha

State	Sl. No.	Name of the MCCs
Odisha	31.	**INTACH ICI** Orissa Art Conservation Centre Orissa State Museum Premises Bhubaneswar –751 014 Odisha
	32.	**Odisha State Museum** Bhubaneswar Odisha
	33.	**Sambalpur University Library** Sambalpur University Burla – 768001 Odisha
Punjab	34.	**Viswesvarananda Viswabandhu** Institute of Sanskrit & Indological Studies Sadhu Ashram Hoshiarpur-146021 Punjab
Rajasthan	35.	**Aklank Shodh Sansthan** Aklank Vidyalaya Association Basant Vihar Kota Rajasthan
	36.	**Digambar Jain Pandulipi Samrakshan Kendra** Jain Vidya Samsthan Digambar Jain Nasim Bhattarakji Sawai Ramsing Road Jaipur – 302004 Rajasthan
	37.	**Rajasthan Oriental Research Institute** P.W.D. Road Jodhpur – 342011 Rajasthan
Tamil Nadu	38.	**Government Museum Chennai** Egmore Chennai – 600008 Tamil Nadu
	39.	**Tanjore Maharaja Serfoji's Saraswati Mahal Library** Thanjavur – 613009 Tamil Nadu
Tripura	40.	**Tripura University** Suryamaninagar Tripura West Tripura
Uttar Pradesh	41.	**Central Library** Banaras Hindu University Varanasi Uttar Pradesh
	42.	**ICI Conservation Centre** Rampur Raza Library Hamid Manzil Rampur – 244901 Uttar Pradesh

State	Sl. No.	Name of the MCCs
Uttar Pradesh	43.	**Indian Council of Conservation Institutes** HIG- 44, Sector – E Aliganj Scheme Lucknow – 226024 Uttar Pradesh
	44.	**Mazahar Memorial Museum** Bahariabad Ghazipur Uttar Pradesh
	45.	**Nagarjuna Buddhist Foundation** 18, Andhiari Bagh, Gorakhpur – 273 001 Uttar Pradesh
	46.	**Vrindavan Research Institute** Raman Reti Vrindavan - 281121 Uttar Pradesh
Uttarakhand	47.	**Himalayan Society of Heritage & Art Conservation Centre** Nainital Uttarakhand
	48.	**Uttranchal Institute for Conservation Research and Training** Markandeya House (near HMT Main Gate), Rani Bagh – 263 126 District – Nainital Uttarakhand
West Bengal	49.	**Manuscript Library** Hardinge Building 1st Floor, Senate House 87/1, College Street University of Calcutta Kolkata-700073 West Bengal

Publications of the NMM

TATTVABODHA VOLUME–I
Editor: Sudha Gopalakrishnan
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd, New Delhi
Pages: 164
Price: ₹ 325/-

TATTVABODHA VOLUME–II
Editor: Kalyan Kumar Chakravarty
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd.
New Delhi
Pages: 194
Price: ₹ 350/-

TATTVABODHA VOL–III
Editor: Prof. Dipti S. Tripathi
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and Dev Books, New Delhi
Pages: 240
Price: ₹ 350/-

SAMRAKSHIKA VOLUME–I
Indigenous Methods of Manuscript Preservation
Editor: Sudha Gopalakrishnan
Volume Editor: Anupam Sah
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and D. K. Printworld (P) Ltd., New Delhi
Pages: 253
Price: ₹ 350/-

SAMRAKSHIKA VOLUME–II

Rare Support Materials for Manuscripts and their Conservation

Editor: Shri K. K. Gupta

Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and Dev Books, New Delhi

Pages: 102

Price: ₹ 200/-

SAMIKSHIKA VOLUME–I

Buddhist Literary Heritage in India

Editor: Prof. Ratna Basu

Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd., New Delhi

Pages: 158

Price: ₹ 325/-

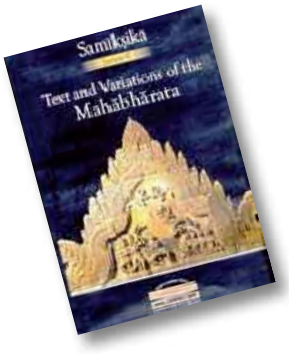

SAMIKSHIKA VOLUME-II

Text and Variantions of the Mahābhārata

Editor: Kalyan Kumar Chakravarty

Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and Munsiram Manoharlal Publishers (P) Ltd., New Delhi

Pages: 335

Price: ₹ 500/-

SAMIKSHIKA VOLUME-III

Natyashastra and the Indian Dramatic Tradition

Edited by: Radhavallabh Tripathi

General Editor: Dipti S. Tripathi

Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and Dev Publishers & Distributors, New Delhi

Pages: 344

Price: ₹ 450/-

SAMIKSHIKA VOLUME-IV

Indian Textual Heritage (Persian, Arabic and Urdu)
Editor: Prof. Chander Shekhar
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and Dilli Kitab Ghar, Delhi
Pages: 400
Price: ₹ 350/-

SAMIKSHIKA VOLUME-V

Saving India's Medical Manuscripts
Edited by: G.G. Gangadharan
General Editor: Dipti S. Tripathi
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and Dev Publishers & Distributors, New Delhi
Pages: 260
Price: ₹ 350/-

KRITIBODHA VOLUME-I

Vādhūla Gṛhyāgamavṛttirahasyam of Nārāyaṇa Miśra
Critically edited by: Braj Bihari Chaubey
General editor: Sudha Gopalakrishnan
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and D. K. Printworld (P) Ltd., New Delhi
Pages: 472
Price: ₹ 550/-

KRITIBODHA VOLUME-II

Śrauta Prayogakḷpti of Ācārya Śivaśroṇa
Editor: Prof. Braj Bihari Chaubey
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and D. K. Printworld (P) Ltd., New Delhi
Pages: 200
Price: ₹ 250/-

PRAKASHIKA VOLUME-I

Diwanzadah
Edited by: Prof. Abdul Haq
General Editor: Prof. Dipti S. Tripathi
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and Delhi Kitab Ghar, Delhi
Pages: 454
Price: ₹ 250/-

PRAKASHIKA VOLUME-II

Chahar Gulshan (An eighteenh century gazetteer of Mughal India)
Edited and Annotated by: Chander Shekhar
General Editor: Dipti S. Tripathi
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and Dilli Kitab Ghar, Delhi
Pages: 473
Price: ₹ 250/-

PRAKASHIKA VOLUME-V

Vadhulagrhyasutram with Vrtti
Critically Edited by: Braj Bihari Chaubey
General Editor: Dipti S. Tripathi
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and New Bharatiya Book Corporation, New Delhi
Pages: 262
Price: ₹ 350/-

THE WORD IS SACRED SACRED IS THE WORD

The Indian Manuscript Tradition by B. N. Goswamy
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and Niyogi Offset Pvt. Ltd., New Delhi
Pages: 248
Price: ₹ 1850/-

VIJÑĀNANIDHI: MANUSCRIPT TREASURES OF INDIA

Published by: National Mission for Manuscripts, New Delhi
Pages: 144

SHABAD GURU

Illustrated Catalogue of Rare Guru Granth Sahib Manuscripts
Editor: Dr. Mohinder Singh
Publishers: National Mission for Manuscripts, New Delhi and National Institute of Punjab Studies, New Delhi
Pages: 193

FUTURE PLANS

- Continued training programs on preservation and conservation
- Strengthening of pool of resource persons
- Intensifying efforts at digitisation
- Publication of unpublished manuscripts
- Location of Indian manuscripts in: UK, France, Belgium, Germany, USA, Canada, Australia, Thailand, Korea, Malaysia, Japan, China, Pakistan, Bangladesh, Nepal
- Efforts to be made to obtain copies of manuscripts through direct contact with repositories abroad

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

॥ विज्ञानमृपास्व ॥

National Mission for Manuscripts